

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

16-जून-2014 14:38 IST

भूटान की संसद के संयुक्त अधिवेशन में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के भाषण का मूल पाठ

ये मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि आ जमुझे बहुत छोटी उम्र वाले भारत के एक मित्र देश की संसद के संयुक्त अधिवेशन को संबोधित करने का सौभाग्य मिला है। मैं सबसे पहले भूटान की उस महान परंपरा को अभिनन्दन करता हूँ। जिस राजपरिवार ने भूटान में उच्च मूल्यों की प्रस्थापना की, भूटान के सामान्य से सामान्य नागरिक की सुखकारी, यहाँ की सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण रखना और विकास भी करना है लेकिन साथ-साथ पर्यावरण की रक्षा के संबंध में पूरी जागरूकता का रखना। ये परंपरा एक या दो पीढ़ी की नहीं है। राजपरिवार की कई पीढ़ियों ने बड़ी सजगता के साथ इसे निभाया है, आगे बढ़ाया है और इसके लिए उस महान परंपरा के धनी राजपरिवार को मैं भारत की तरफ से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, अभिनन्दन करता हूँ।

विश्व का जो आज मानस है और खासकर के पिछली एक शताब्दी में सत्ता का विस्तार, राजनीति का केंद्रीयकरण, करीब-करीब पिछली पूरी शताब्दी इसी प्रकार की गतिविधियों से भरी पड़ी है, लेकिन भूटान अपवाद सिद्ध हुआ है।

भूटान ने, विश्व में एकतरफ जब सत्ता के विस्तार का और सत्ता के केंद्रीयकरण का माहौल था, भूटान ने लोकतंत्र की मजबूत नींव डालने का प्रयास किया। विश्व के कई भू-भागों में सत्ता हथियाने के निरंतर प्रयास चलते रहते हैं। विस्तारवाद की मानसिकता से ग्रस्त राजनीति दल के नेता भूटान ने, बहुत ही उत्तम तरीके से, लोकशिक्षा के माध्यम से जन-मन को धीरे-धीरे तैयार करते हुए, संवैधानिक व्यवस्थाओं को निश्चित करते हुए, यहाँ लोकतांत्रिक परंपराओं को प्रतिस्थापित किया। सात वर्ष लोकतंत्र के लिए कोई बहुत बड़ी उम्र नहीं होती है। लेकिन सात वर्ष के भीतर-भीतर, भूटान ने संवैधानिक मर्यादाएँ, लोकतांत्रिक मूल्यों और लोकतंत्र के अंदर सबसे बड़ी ताकत होती है स्वयंशिष्ट। नागरिकों की तरफ से स्वयंशिष्ट, राजनीतिक दलों की तरफ से स्वयंशिष्ट, चुने हुए जन-प्रतिनिधियों की तरफ से स्वयंशिष्ट और स्वयं राजपरिवार की तरफ से भी स्वयंशिष्ट। ये अपने आप में एक उत्तम उदाहरण के रूप में आज दुनिया के सामने प्रस्तुत है। इसी के कारण, सात साल के भीतर-भीतर यहाँ की लोकतांत्रिक प्रक्रियाएँ, यहाँ के संसद की गरिमा, यहाँ के जन-प्रतिनिधियों के प्रति सामान्य मानव की आस्था, उत्तरोत्तर बढ़ रही है। मैं इसे शुभ संकेत मानता हूँ।

सात साल की कम अवधि में सत्ता परिवर्तन होना, ये अपने आप में यहाँ के नागरिकों की जागरूकता का उत्तम परिचय है। जहाँ है वहाँ से अच्छा करने के लिए, ज्यादा अच्छा करने के लिए, जवाबदेही तय करने के लिए, यहाँ के मतदाताओं ने जो जागरूकता दिखाई है वे स्वस्थ लोकतांत्रिक परंपरा के लिए मैं शुभ संकेत मानता हूँ।

भारत में भी अभी-अभी चुनाव हुआ है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। भारत के लोकतंत्रों के बीच का जो फलक है, विश्व के सभी देशों के लिए एक बड़ा अजूबा है। पूरा यूरोप और अमेरिका में मिलकर के जितने लोग मतदाता हैं उससे ज्यादा एक अकेले हिंदुस्तान में मतदाता हैं। इतना बड़ा, विशाल, लोकतंत्र का ये उत्सव होता है और आजादी के बाद पहली बार, साठ साल के इतिहास में पहली बार, भारत के मतदाताओं ने परंपरागत रूप से जो शासन में थे ऐसे दल को छोड़ करके भारतीय जनता पार्टी को पूर्ण बहुमत के साथ सेवा करने का अवसर दिया है।

ये लोकतंत्र की ताकत है और इस पूरे भूखंड में लोकतांत्रिक शक्तियाँ जितनी सामर्थ्यवान होंगी, लोकतांत्रिक मूल्यों की जितनी प्रस्थापना अधिक कारगर ढंग से होगी, उपखंड की शांति के लिए, उपखंड के विकास के लिए और उपखंड के गरीब से गरीब नागरिकों की भलाई के लिए एक सशक्त माध्यम सिद्ध होगा। भारत ने, भारत के नागरिकों ने, विकास के लिए 'गुड गवर्नेंस' के लिए जनादेश दिया है और जैसे अभी आदरणीय स्पीकर महोदय बता रहे थे कि भारत जितना सशक्त होगा उतना ही भूटान को लाभ होगा। मैं उनकी इस बात से शत प्रतिशत सहमत हूँ।

न सिर्फ भूटान लेकिन भारत के सशक्त होने से, भारत के समृद्ध होने से, इस पूरे भूखंड में और विशेषकर के सार्क देशों की भलाई के लिए भारत का सुखी-संपन्न होना आवश्यक है। तभी जाके भारत अपने अड़ोस-पड़ोस के छोटे-छोटे देशों की कठिनाइयों को दूर करने के काम आ सकता है। उनकी बची मुसीबतों में से पड़ोसी देश कहाँ जाएगा। पड़ोसी देश की पहली नजर अपने पड़ोसियों की तरफ जाती है। अब पड़ोसी का भी पड़ोसी धर्म निभाना एक कर्तव्य बन जाता है लेकिन अगर

भारत ही दुर्बल होगा,भारत ही शक्तिशाली नहीं होगा, भारत ही अपनी आंतरिक समस्याओं को जूझता रहता होगा तो अड़ोस-पड़ोसियों के सुख की चिंता कैसे कर पाएगा? इसलिए, भारत के आस-पास के सभी साथियों का, मित्रों का,पड़ोसियों का कल्याण हो तो उसके लिए भी भारत हमेशा जागरूक रहा है,भारत हमेशा प्रयत्नशील रहा है।

जब हमारी नई सरकार बनी और बहुत ही कम अवधिमें हमने जब 'सार्क'देशों के नेताओं को वहाँ बुलाया और सब के सब प्रमुख लोग वहाँ उपस्थित रह करके,हमारीसंसद की शोभा बढ़ाई। भूटान के आदरणीय प्रधानमंत्री जी भी वहाँ आए, मैं इसके लिए आदरणीय प्रधानमंत्री जी का, भूटान का,हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, अभिनंदन करता हूँ। भारत और भूटान के संबंध,क्या कुछ शासकीय संबंध हैं क्या? अगर हम ये सोचें किये शासन व्यवस्थाओं के संबंध हैंतो शायद हमारी गलतफहमी होगी। भूटान में भी शासकीय परिवर्तन आया,लोकतांत्रिक व्यवस्था विकसित हुई लेकिन संबंधों को कोई आँच नहीं आयी। भारत में भी कई बार शासन व्यवस्थाएँ बदली हैं लेकिन भारत और भूटान के संबंधों को कोई आँच नहीं आईहै और उसका कारण भारत और भूटान के संबंध सिर्फ शासकीय व्यवस्थाओं के कारण नहीं हैं, भारत और भूटान के संबंध सांस्कृतिक विरासत के कारण है, सांस्कृतिक परंपराओं के हमारे बंधनों के कारण है, हमारे सांस्कृतिक विभाजनों के कारण है।

हम एक इसलिए नहीं हैं कि हमने सीमाएँ खोली हैं, हम एकता की अनुभूतिइसलिए करते हैं किहमने अपने दिल के दरवाजे खोल करके रखे हैं। भूटान हो या भारत हमने अपने दिल के दरवाजे खोल करके रखे हैं तभी तो हम एकता की अनुभूतिकरते हैंऔर इस एकता में, ताकत की अनुभूतिकरते हैं। ये शासन व्यवस्थाओं के बदलने से दिल के दरवाजे बन्द नहीं होते हैं,सीमा की मर्यादाएँ पैदा नहीं होती हैं। भूटान और भारत का नाता उस अर्थ में एक ऐतिहासिक धरोहर है और भारत और भूटान की आने वाली पीढ़ियों को भी इस ऐतिहासिक धरोहरको सम्भालना है,संजोए रखना है और उसको और अधिक ताकतवर बनानाहै।

भारत की ये नई सरकार, भारत के कोटिकोटिजन,इसके लिए प्रतिबद्ध है। मैं कल भूटान आया, भूटान की यह मेरी पहली यात्रा है। अब प्रधानमंत्री बनने के बाद और इतनी, चुनाव में ऐसीस्थितिबनने के बाद, इतना बढ़िया जनादेश मिलने के बाद किसी का भी मोह कर जाता हैकिदुनिया के किसी भी बड़े ताकतवर देश में चले जाएँ, दुनिया के किसी समृद्ध देश में चले जाएँ,जहाँ और वाहवाही हो जाएगी।ये लालच आना स्वाभाविक है लेकिन मेरे अंतरमन से आवाज़ उठी किमैं भारत केप्रधानमंत्री के रूप में पहली बार अगरकहीं जाऊँगा तो भूटान जाऊँगा। इसके लिए मुझे ज्यादा सोचना नहीं पड़ा,कोई योजना नहीं बनाई। ये मेरा सहज कदम था, सवाल तोमेरी आत्मा मुझे तब पूछती किआप भूटान गये क्यों नहीं? क्योंकिअपनापन का इतना नाता है और यही नाता है जो मुझे आज आप सबके बीच आने का सौभाग्य दे रहा है।

भूटान का विकास किसी भी छोटे देश के लिए और इतनी कठिनाईयों से जी रहे देश के लिए,विश्व के हर देश के लिए आने वाले दस साल में हम देखेंगेकि विश्व के छोटे-छोटे देश अपने विकास के लिए,भूटान ने इन दो-तीन दशक में कैसे प्रगतिकी इस तरफ बारीकी से देखेंगे ऐसा मुझेमहसूस हो रहा है। जिस मकतमता के साथ आपने विकास को आखिरी छोर के इंसान तक पहुँचाने का प्रयास किया है। ये अभिनंदन के पात्र हैं और दुनिया विकासदर की चर्चा कर रही हैं, जी. डी. पी. की चर्चा कर रही है और भूटान 'Happiness' की चर्चा कर रहा है। ये अपने आप में शासकके दिल में आखिरी छोर पर बैठे हुए व्यक्ति की कल्याण की भावना न होगी तो 'Happiness' की कल्पना नहीं होगी और इसलिए रास्ते बन जाएँ, पानी के नल लग जाएँ, स्कूल खुल जाएँ, अस्पताल बन जाएँ, ये सब तो होगा लेकिन इसके लिए कोई लाभार्थ भी है, उसके जीवन में सुख आया है कि नहीं आया है, उसके जीवन में संतोष आया है कि नहीं आया है, उसके जीवन में आनंद की अनुभूति हो रही है या नहीं हो रही है।ये मानक तय करना होगा। इसका मतलब विकास की इकाई देश नहीं है, विकास की इकाई राज्य नहीं है, विकास की इकाई दृष्टि नहीं है लेकिन विकास की इकाई हर 'इंडिविजुअल' है। ये अपने आप में एक बहुत बड़ा साहसिक निर्णय है हर एक 'इंडिविजुअल' उस विकास की किस ऊँचाई को पार कर रहा है, पा रहा है,वो चैन की नींद सो पा रहा है किनहीं सो पा रहा है।अपने संतानों को जिस दिशा में ले जाना चाहता था, ले जा पा रहा है किनहीं ले जा पा रहा है। इतनी बारीकी से सोचना और इसके लिए कार्ययोजना करना ये अपने आप में एक प्रेरक है।

भूटान प्रकृति की गोद में बसा है। विपुल प्राकृतिक विराट देश है, साथ-साथ भूटान ऊर्जा का स्रोत भी है। पिछले कुछ वर्षों में भारत और भूटान ने मिल करके ऊर्जा के क्षेत्र में एक मजबूत पहल की है। उस पहल को हम और आगे बढ़ाना चाहते हैं और भूटान में 'हाइड्रो पावर' के माध्यम से बिजली उत्पादन करके न हम सिर्फ भूटान की आर्थिक स्थिति में सही कदमउठा रहे हैं, इतना ही नहीं हैऔर न ही हम भारत के भू-भाग का अँधेरा छांटने के लिए काम कर रहे हैं, इतना सीमित नहीं है।

भारत और भूटान का ये संयुक्त प्रयास 'ग्लोबल वार्मिंग' से जूझ रही मानवता के लिए,'ग्लोबल वार्मिंग' से जूझ रहे पूरे विश्व के लिए, कुछ न कुछ हमारी तरफ से 'contribution' काएक सात्विक प्रयास है। एक 'sustainable' विकास की दिशा में एक बड़ी ताकत के रूप में आया है। मैं आशा करूँगा कि दुनिया, भारत और भूटान के संयुक्त प्रयास को 'ग्लोबल वार्मिंग' के खिलाफ हमारी इस लड़ाई को, मानवजातिके कल्याण के लिए हमारे प्रयास को, भावी पीढ़ी के कल्याण के प्रयास

के लिए उसे देखा जाएगा। ऐसा मुझे विश्वास है।

मुझे इस बात की खुशी हुई कि 2014 में भूटान अपने बजट की काफी राशिशिक्षा के लिए खर्च करने जा रहा है। इसका मतलब यह हुआ कि भूटान आज की पीढ़ी के सुख की नहीं, आने वाले पीढ़ियों के 'Happiness' के लिए भी आज बीज बो रहा है। दुनिया में कहावत प्रचलित है कि जो लोग एक साल के लिए सोचते हैं, वे अन्न की खेती करते हैं, जो लोग 10 साल के लिए सोचते हैं, वो फूलों और फलों की खेती करते हैं लेकिन जो पीढ़ियों की सोचते हैं वे मनुष्य बोते हैं। शिक्षा, ये अपने आप में मनुष्य बाने का उत्तम से उत्तम प्रयास है जिससे उत्तम नई पीढ़ियों का निर्माण होता है।

मैं इस सार्थकप्रयास के लिए भूटान के राजपरिवारों को, भूटान के जन-प्रतिनिधियों को और संसद में बैठे हुए सभी माननीय संसद सदस्यों को हृदय से अभिनंदन करता हूँ। उन्होंने शिक्षा को प्राथमिकता दी है और जब आप दो कदम चले हैं तो हमारा भी मन करता है कि एक कदम हम भी आपके साथ चलें और इसलिए शिक्षा को आधुनिक 'टेक्नोलॉजी' से जोड़ने के लिए, शिक्षा के माध्यम से विश्व की खिड़की खोलने के लिए, भूटान के बालकों को भी अवसर मिलना चाहिए और इसलिए भारत ने भूटान में 'ई-लाइब्रेरी' का नेटवर्क बनाने के लिए तय किया है और 'ई-लाइब्रेरी' के कारण भूटान के बालक ज्ञान के भंडार के साथ जुड़ जाएंगे। दुनिया का जो भी ज्ञान उन्हें पाना होगा वो इस 'टेक्नोलॉजी' के माध्यम से पा सकेंगे। विश्व के 'Latest' से 'Latest Magazine' से उनको अपना सरोकार करना होगा, वो कर पाएंगे।

तो शिक्षा में आपका ये निवेश और भारत का उससे 'Technological support' यहाँ की नई पीढ़ी को आधुनिक ही बनाएगा और विश्व के साथ कदम से कदम मिलाकर चले जाने की ताकत भी देगा। ऐसा मुझे पूरा विश्वास है। जब यहाँ शिक्षा का प्रारंभिक काल था तब से भारत के बहुत बड़ी मात्रा में शिक्षक भूटान में आया करते थे। दुर्गम इलाकों में जा करके यहाँ के लोगों को शिक्षित करने का काम करते थे। और जब कोई राष्ट्र अपने यहाँ से दूसरे देश में शिक्षक भेजता है तो वो सत्ता के विस्तार का मकसद कभी नहीं होता है। जब शिक्षक भेजता है तब उसके मन में उस राष्ट्र को जड़ों से मजबूत करने का एक नेक इरादा होता है और दशकों से भारत से भूटान में बहुत बड़ी मात्रा में शिक्षक आए हैं। कठिन जीवन जी करके भी उन्होंने पुरानी पीढ़ियों को शिक्षित करने का प्रयास किया है। वे, भूटान की जड़ों को मजबूत करने का एक नेक इरादे का अभिव्यक्ति है। उस बात को आगे बढ़ाते हुए शासन ने भी बहुत बड़ी मात्रा में 'scholarship' दे करके भूटान के होनहार नौजवानों को भारत के अच्छी से अच्छी 'यूनिवर्सिटियों' में शिक्षा का प्रबंध किया है।

आज जब मैं आया हूँ तो मैंने कल आदरणीय प्रधानमंत्री जी को कहा था, 'scholarship' दे रहे हैं उसे हम 'डबल' करेंगे ताकि अधिक नौजवानों को आधुनिक शिक्षा पाने के लिए सौभाग्य अवसर प्राप्त हो। उसी प्रकार से हमने कुछ और तरीके से भी आगे के दिशा में सोचना होगा। मेरा जब से भूटान आने का मन कर गया। मैं लगातार भूटान के साथ अपने संबंधों को और अधिक व्यापक पथ पर कैसे विस्तृत करें, विकसित करें, इस पर सोचा क्या है? मेरे मन में विचार आया जितने हिमालयन 'States' हैं हिन्दुस्तान के और भूटान के, भविष्य में नेपाल जुड़ जाए तो नेपाल भी। क्या हम हर वर्ष एक स्पेशल खेल समारोह नहीं कर सकते हैं? हमारा सिक्किम है, अरुणाचल है, मिजोरम है, नागालैण्ड है, आसाम है, आपके पड़ोस में है और एक प्रकार से रूचि, वृत्ति, प्रभुति, प्रकृति सब बराबर-बराबर हैं तो एक नई पीढ़ी खेल-कूद के माध्यम से उनको जोड़ने का प्रयास होगा। भारत सरकार भी इस पर सोचेगी, छोटे-छोटे राज्य भी सोचेंगे और भूटान भी सोचेगा। हर वर्ष अलग-अलग प्रदेशों में हम खेल के माध्यम से भी मिलेंगे। भूटान में भी मिलेंगे क्योंकि खेल के माध्यम से, 'sports' के माध्यम से 'sportsmen spirit' आता है और हमारे पड़ोसी राज्यों और पड़ोसी देशों के साथ 'स्पोर्ट्समैन स्प्रिट' जितना ज्यादा बढ़ता है उतना समाज जीवन के अंदर 'Happiness' में भी अच्छा माहौल भी बनता है।

स्वस्थ समाज के निर्माण की ओर काम होता है। उसी प्रकार से यह आवश्यक है कि भारत के बालक भी जाने कि भूटान कहाँ है, कैसा है, इतिहास क्या है सांस्कृतिक क्या है, परंपरा क्या है, मूल्य क्या है और भूटान जो कि भारत के साथ अटूट रूप से जुड़ा हुआ है। भूटान की भी नई पीढ़ी जाने आखिर कि हिन्दुस्तान के हमारा पुराना नाता क्या रहा है। सदियों से हम ऐसे कैसे जुड़े हैं। हिन्दुस्तान की वो कौन-सी ताकत है, वो कौन-सी परंपरा है जिसको जानना समझना चाहिए। क्यों न हम आधुनिक विज्ञान और टेक्नोलॉजी के माध्यम से प्रतिवर्ष भूटान और भारत के बालकों के बीच 'Quiz Competition' करें, हमारे नौजवान तैयारी करें, एक-दूसरे देशों के बारीक जानकारीयों के लिए competition हो, उस स्पर्धा में उत्तीर्ण हो नौजवान। मैं देख रहा हूँ कि भूटान के काफी लोग हिंदी समझ लेते हैं क्योंकि बहुत बड़ी मात्रा में हिन्दुस्तान पढ़ने के लिए जाते हैं। अब हिन्दुस्तान में पढ़ने के लिए जाते हैं, अगर उनको थोड़ा वहाँ की भाषा का ज्ञान प्रारंभिक रूप में परिचित हो जाए तो उनको पढ़ने में बहुत सुविधा बढ़ती है। इसको हम कैसे आगे बढ़ा सकते हैं इस पर हम सोचेंगे। भारत का 'satellite' क्या हमारे भूटान के विकास के लिए काम आ सकती है क्या? 'Space Technology' के माध्यम से भारत भूटान की ओर मदद कर सकता है क्या? हमारे जो वैज्ञानिक हैं वे उस पर सोचें और भूटान के साथ बैठ करके भविष्य में 'Space Science' के माध्यम से हम दोनों देशों को किस प्रकार से जोड़ सकते हैं, किस प्रकार से हमारे संबंधों को विकसित कर सकते हैं, उसका हम प्रयास करें।

कभी-कभी ऐसा लगता है, लोग कहते हैं कि हिमालय हमें अलग करता है, सोचने का ये एक तरीका है। मेरा सोचने का तरीका दूसरा है और मैं सोचता हूँ कि हिमालय हमें अलग नहीं करता है; हिमालय हमें जोड़ता है। हिमालय हमारी साझी विरासत है। हिमालय के उस पार रहने वाले भी हिमालय को उतना ही प्यार करते हैं जितना हिमालय के इस छोर पर रहने वाले करते हैं। दोनों तरफ बसे हुए लोग हिमालय के प्रति उतना ही आदर और गौरव की अनुभूति करते हैं। दोनों तरफ के क्षेत्रों के लिए हिमालय एक शक्तिका स्रोत बना हुआ है। हिमालय से दोनों को बहुत लाभ मिला है।

समय की माँग है कि एक वैज्ञानिक तरीके से 'हिमालय रेंज' का 'study' हो 'climate' के संदर्भ में हो, प्राकृतिक संपदा के संबंध में हो, उस विरासत का आने वाली पीढ़ी के लिए कैसे उपयोग किया जा सके, भारत ने आने वाले दिनों में सोचा है। एक 'National Action Plan for Climate change' दूसरा भारत गंभीरतापूर्वक इस बात पर सोच रहा है कि 'National Mission for sustaining Himalayan Eco system'। लेकिन ये अकेला भारत नहीं कर सकता।

अड़ोस-पड़ोस के देशों को मिल करके इसको करना होगा और हम इसके लिए एक संयुक्त रूप से कैसे आगे बढ़ें, उस दिशा में हम सोचना चाहते हैं। हमारी सरकार ने एक और भी 'इनिशिएटिव' लेने के लिए सोचा है, हम चाहते हैं एक 'सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ हिमालयन स्टडीज' इसका 'initiative' लिया जाए और एक 'Central University for Himalayan Studies' के माध्यम से यहाँ के जन-जीवन, यहाँ के प्राकृतिक संपदा, यहाँ पर आने वाले परिवर्तन, इस में से मानव जातिके कल्याण के लिए कार्य किया जा सकता है। एक 'focus subject' बना करके इसको कैसे आगे बढ़ाया जाए, उस पर हम सोच रहे हैं और मैं मानता हूँ इसका लाभ आपको भी बहुत बड़ी मात्रा में होगा।

'Tourism' एक ऐसा क्षेत्र है, भूटान 'Tourism destination' बन रहा है। मैं हमेशा मानता हूँ दुनिया के पुराने इतिहास काल से हम देखें, पुरातन काल से भी देखें इसके दुक्के भी 'Tourist' साहस के लिए निकलते थे। कभी चीन से ह्वेनसांग निकला होगा, कभी वाक्सकोडिगामा निकला होगा। कई लोग हर एक देश के इतिहास में कोई न कोई ऐसे महापुरुष मिलेंगे जो सदियों पहले कठिनाइयों के बीच विश्व भ्रमण के लिए नई चीजें खोजने के लिए निकले थे। वहाँ से लेकर अब तक हम देखें तो 'Tourism' ने बीते हुए काल को और वर्तमान को जोड़ने का प्रयास किया है। सफल प्रयास किया है। 'Tourism' ने एक भू-भाग को दूसरे भू-भाग से जोड़ने में सफलता प्राप्त की है। 'Tourism' ने एक जन-मन को दूसरे जन-मन के साथ जोड़ने में सफलता प्राप्त की है। एक ओर 'Tourism' विश्व को जोड़ने की ताकत रखता है। मैं मानता हूँ कि 'Terrorism devices, Tourism unites' और इसलिए 'Tourism' जिसकी जोड़ने की ताकत है और भूटान जिसमें 'टूरिस्टों' को आकर्षित करने की प्राकृतिक संपदा है। भारत और भूटान मिलकर संयुक्त रूप से विश्व के 'टूरिस्टों' को आकर्षित करने के लिए एक 'holistic approach' से लेकर योजना बना सकते हैं। कभी न कभी हमने इस देश में सोचना चाहिए, हिंदुस्तान के 'North East' के इलाके और भूटान के, इनका एक 'common circuit' बना करके, एक 'Package Tour Programme' बना करके इस 'Himalayan Ranges' में विश्व के लोगों को कैसे आकर्षित किया जा सके और 'Tourism' एक ऐसा क्षेत्र है जिस में कम से कम पूँजी निवेश होता है और ज्यादा से ज्यादा लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। गरीब से गरीब व्यक्ति भी, 'Tourism' बढ़ता है तो उसको आय होती है 'Tourism' के विकास के लिए संयुक्त रूप से कैसे प्रयास करें, उसको हम कैसे आगे बढ़ाएँ, और अगर भूटान की प्राकृतिक संपदा के साथ भारत का संबंध जुड़ जाए तो विश्व को भूटान के इस भू-भाग पर और भारत के 'North East' भाग पर आने के लिए बहुत बड़ा निमंत्रण पहुँच जाएगा। पूरी ताकत के साथ पहुँच जाएगा और इसके लिए हम अगर आने वाले दिनों में योजना करते हैं मुझे विश्वास है कि बहुत उद्धार होगा।

मैं कल यहाँ जब मिला तो आप की संसद की जो परंपरा विकसित हुई है, उसे सुन करके बड़ा आनंद हुआ। आप के स्पीकर साहब बहुत ही नियम से संसद को चलाते हैं। किसी को अगर पाँच मिनट बोलने का अवसर मिला है, अगर वो पाँच मिनट पर 10 सैकेंड चला गया तो आखिरी 10 सैकेंड उसके रिकार्ड नहीं होते हैं, ऐसा मुझे बताया गया है। ये बड़ा अच्छा तरीका है। इसलिए जिसको भी अपनी बात बतानी होगी उसको निश्चित मिले हुए समय में। हम भारत के लोग भारत की संसद में इस बात को सीखने का प्रयास जरूर करेंगे कि आपने अपनी संसद की आयु छोटी है लेकिन छोटी आयु में भी आपने संसदीय प्रणालियों में जो नए नियम लाए हैं, कुछ समझने जैसे हैं, कुछ सीखने जैसे हैं।

मैं आप सबको निमंत्रण देता हूँ, भारत से जुड़ने के लिए और अधिक जन-जन का जुड़ाव हो, सरकारें तो हैं वो तो रहने वाली हैं, मिलने वाली हैं लेकिन हमारा नाता जन-जन के साथ जुड़ा हुआ है इसकी मजबूती हमारा मिलन, जितना बढ़ेगा हमारा आना जाना जितना बढ़ेगा एक दूसरे से हमारा नाता जितना बढ़ेगा, उतना ही मैं समझता हूँ, आज कल तो 'टेक्नोलॉजी' ने पूरी दुनिया को छोटा सा गाँव बना कर रख दिया है। 'Fraction of second' में दुनिया के किसी भी कोने में पहुँच पाते हैं। अपनी बात पहुँचा सकते हैं दुनिया की बात जान सकते हैं यह नया विज्ञान भी हमको जोड़ रहा है। भारत के प्रयासों के कारण, भूटान सरकार के निरंतर प्रयासों के कारण यहाँ की जो नई पीढ़ी है वो कंप्यूटर 'Literate' है 'Techno savvy' है आने वाले दिनों में बहुत उपकारक हो सकती है तो चहूँ दिशा में विकास हो, सुख और समृद्धि प्राप्त हो।

आज आप सभी के बीच बात करने का अवसर मिला। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि भारत और भूटान का ये नाता अजर और अमर है। शासकीय व्यवस्थाओं पर निर्भर नहीं है। एक सांस्कृतिक विरासत से बँधा हुआ है। जिस प्रकार से कितनी बड़ी चोट पानी को अलग नहीं कर सकती है, वैसे ही भारत और भूटान के सांस्कृतिक विरासत को कोई अलग नहीं कर सकता है।

मैं जब भूटान के संबंध में जानकारी इकट्ठी कर रहा था तो मुझे एक बात बहुत अच्छी लगी, तीसरे राजा ने भारत के साथ संबंधों की बात आयी तो एक बड़ा अच्छा संदेश भेजा था। उन्होंने कहा था भारत और भूटान का संबंध, जैसे दूध और पानी मिल जाए फिर दूध और पानी को जैसे अलग नहीं किया जा सकता, वैसे ही रहेगा और वो परंपरा आज भी चल रही है, लेकिन यहाँ के तीसरे राजा की वो बात जब मैंने पढ़ी तो मुझे मैं जिस प्रदेश से आता हूँ वहाँ से घटना का स्मरण आया मुझे।

400 साल पहले उस क्षेत्र में एक हिंदू राजा थे, जिद्दी राणा करके उनका राज चलता था, और ईरान से पारसी लोग आए ये दुनिया की सबसे छोटी 'Minority' है 'Micro Minority' ईरान से उनको भेजा गया, वो आए। समुद्र के रास्ते गुजरात के किनारे पर आए। अब वो जिद्दी राणा के क्षेत्र में यानी गुजरात के उस इलाके में आश्रय चाहते थे तो जिद्दी राणा ने उनको लबालब दूध का भरा कटोरा दे दिया और 'indirectly' संदेश भेजा कि पहले से ही मेरे यहाँ इतने लोग हैं हम उसमें नई जगह नहीं देंगे। दूध का कटोरा भरा पड़ा हुआ बताया और जो पारसी लोग ईरान से आए थे उन्होंने क्या किया, उसमें चीनी मिला दी, शक्कर मिला दी और दूध को मीठा कर दिया और लबालब दूध से भरा हुआ वो प्याला वैसे का वैसे वापस भेजा। जिद्दी राणा ने जब देखा की दूध मीठा हो गया है तो उन्होंने तुरंत न्यौता भेजा, समुद्र के अंदर कि आप का स्वागत है, आप आइए। और जो घटना 400 साल पहले ईरान से आए हुए पारसी लोगों के शब्दों में, उस व्यवहार में थी वही बात तीसरे राजा के उन शब्दों में दूध और पानी के मिलन की थी दोनों में थोड़ा सा अंतर है और वो 'Micro Minority' आज भी समुद्र के साथ हिंदुस्तान के अंदर पारसी कौम जीवन के हर क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ प्राप्त की उन्होंने, वैसे ही भूटान और भारत का नाता हर क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को प्राप्त करने वाला बना रहेगा।

मुझे पूरा विश्वास है। मेरी तरफ से भूटान वासियों का मैं अभिनंदन करता हूँ और कल एयरपोर्ट से आगे 50 किलोमीटर तक जो स्वागत और सम्मान दिया है, भूटान के लोगों ने उमंग और उत्साह का देखते ही बनता है। मैं इस स्वागत और सम्मान के लिए भूटान के नागरिकों का हृदय से अभिनंदन करता हूँ आभार व्यक्त करता हूँ और आप सबके बीच आने का मुझे अवसर मिला, आप से बात करने का मुझे अवसर मिला है, इसके लिए आपका बहुत ही अभारी हूँ। राजपरिवार में जिस प्रकार से स्वागत और सम्मान किया है राजपरिवार का भी मैं अभारी हूँ। आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद।

अमित कुमार / शिशिर चौरसिया, रजनी, तारा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

05-अगस्त-2014 13:51 IST

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का नेपाल की संविधान सभा में दिये गये भाषण का मूल पाठ

माननीय श्री सुभाष नेंबंग पार्लियमेंट के स्पीकर श्री एवं माननीय सांसदगण और आदरणीय सभागृह 'मैं नेपाल म आउं न पायकोमा अत्यंत ही हर्षित हूँ। धैरे-धैरे वर्षगी एक पथिक यातित तीर्थालुको रुकमा मय यहां आएको धीये। यो घनइष्ट कि एक पतक तपइले नेपाल को भ्रमण करलो भयो भले यो जीवन पर्यंत संबंध मा बदलिन छो। प्रथमतया यश सुंदर देश को स्वाधिको रुकमा मफेरी फरकेल आएको छो। भारत को प्रधानमंत्री को हैसियत मा पुनः आउमो पावदा। वास्तव में मैले भाग्यशाली महसूस करछू। यो यस्तो याताथियो जुनमें प्रधानमंत्री को कार्यालय म प्रवेश घर्लवितै की घर्ल चाहन थे, जिनकी हामरो नेपाल संघ को संबंधों मेरो सरकार को उच्चतम प्राथमिकता मदे हो। निमंत्रण अगर नू भयको म मै सरकार न नेपाल का जनता राई धन्यवाद देना चाहन छो। मै संग मैले 125 करोड़ भारतीय जनता को मया शुभकामना और सदभावना लिए आयो छो।

आप कल्पना कर सकते हैं कि यह पल मेरे लिए कितने गर्व का पल है क्योंकि आपकी संसद में मैं पहला मेहमान हूँ जिसको आपने बुलाया है और संबोधन करने का अवसर दिया है। यह सम्मान सिर्फ नरेंद्र मोदी का या भारत के प्रधानमंत्री का नहीं यह सवा सौ करोड़ भारतीयों का सम्मान है। मैं इसके लिए आदरणीय स्पीकर श्री का और आप अभी सभी सदस्यों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। भारत और नेपाल के संबंध उतने ही पुराने हैं, जितने हिमालय और गंगा पुराने हैं। और इसलिए हमारे संबंध कागज की किशितियों से आगे नहीं बढ़े हैं हमारे संबंध दिलों की दास्तान कहते हैं। जन-जन के मन के प्रतिकोश के रूप में हम एक ही सांस्कृतिक विरासत के धनी हैं।

मैं मूलतः गुजरात का हूँ सोमनाथ की भूमि है और सोमनाथ की भूमि से चलकर के मैंने राष्ट्रीय विश्वनाथ का फलक काशी विश्वनाथ की छत्रछाया से मैंने प्रारंभ किया, काशी से किया। और आज पशुपतिनाथ के चरणों में आकर के खड़ा हुआ हूँ। यह वो भूमि है जहां किशोरी जी बचपन में खेला करती थी, और आज भी हम जनक का स्मरण करते हैं। यह भूमि है जिसने विश्व को अचंभित कर देने वाले भगवान बुद्ध को जन्म दिया है। ऐसी एक सांस्कृतिक विरासत की धनी है और इसलिए और जब मैं काशी का प्रतिनिधि बन गया तो मेरा तो नेपाल से नाता और जुड़ गया क्योंकि काशी में एक मंदिर है जहां पुजारी नेपाल का होता है और नेपाल में पशुपतिनाथ है जहां का पुजारी हिन्दुस्तान का होता है।

भारत का हर व्यक्ति 51 शक्तिपीठों के दर्शन की कामना करता है उन 51 शक्तिपीठों में दो पीठ नेपाल में हैं। यदि इतना अटूट नाता है हमारा, इतना ही नहीं, हिन्दुस्तान ने वो कोई लड़ाई जीती नहीं है, जिस जीत के साथ किसी नेपाली का रक्त न बहा हो। किसी नेपाली ने शहादत न दी हो। भारत के स्वाभिमान के लिए, भारत की रक्षा के लिए नेपाल का बहादुर मरने-मिटने के लिए कभी पीछे नहीं रहा। भारत के लिए जीने-मरने वाले उन बहादुर नेपालियों को मैं नमन करना चाहता हूँ। भारत की सेना के फील्ड मार्शल एक बहुत बढ़िया बात बताते थे, वो कहते थे कि कोई सेना का जवान यह कहे कि मैं मृत्यु से डरता नहीं हूँ तो मान लेना कि या तो वो झूठ बोल रहा है या तो वो गुरखा है। अगर गुरखा कहता है कि मैं मौत से नहीं डरता तो इसमें सच्चाई है। यह बात फील्ड मार्शल मानेक शॉ ने कही थी। ऐसी वीरों की भूमि है, सांस्कृतिक धारा है। और आज मैं कह सकता हूँ नेपाल के नागरिकों की नहीं लोकतंत्र में विश्वास रखने वाले पूरे विश्व का ध्यान नेपाल की तरफ केंद्रित हुआ है। और नेपाल की तरफ केंद्रित हुआ है मतलब इस सभागृह में बैठे आप सब पर केंद्रित हुआ है। लोकतंत्र में विश्वास करने वाला पूरा विश्व आज आपकी तरफ देख रहा है। बड़ी आशा भरी नजरों से देख रहा है। आपको लगता होगा कि आप इस सदन में बैठकर के संविधान के निर्माण की चर्चा कर रहे हैं भिन्न भिन्न धाराओं की चर्चा कर रहे हैं, समाज के भिन्न भिन्न वर्गों के हितों की चर्चा कर रहे हैं, इतना नहीं है। संविधान के निर्माता के रूप में आपको यह सौभाग्य मिलना। उस घटना को मैं अगर और तरीके से देखू तो जिस परंपरा को हम जीते हैं, कभी कुछ ऋषिमुनियों ने वेद निर्माण किए किसी ने उपनिषद निर्माण किए किसी युग में संहिताओं का निर्माण हुआ और जिसके प्रकाश में हजारों साल से हम अपना जीवन निर्वह और आयोजन करते रहते हैं। उसी कड़ी में आधुनिक जीवन में राष्ट्र का संविधान भी एक नई संहिता के रूप में जन्म लेता है। नए युग को दिशा एवं दशा देने का काम संविधान के माध्यम से होता है, जो किसी जमाने में ऋषियों ने वेद के द्वारा, पुराणों के द्वारा, संहिताओं के द्वारा किया था, एक प्रकार से आप नई संहिता लिख रहे हैं। और इसलिए यह सौभाग्य प्राप्त करने वाले आप सबको मैं हृदय से अभिनंदन करना चाहता हूँ, बधाई देना चाहता हूँ। लेकिन संविधान निर्माण की एक पूर्व शर्त होती है। संविधान के निर्माण के लिए ऋषिमुन होना जरूरी होता है। वो मन जो

दूर का देख सकता है। वो मन समस्याओं का अंदाज लगा सकता है वो मन आज भी उन शब्दों में अंकित करेगा जो सौ साल के बाद भी समाज को सुरक्षित रखने की समाज की विकास यात्रा को आगे बढ़ाने की कोशिश करेगा।

कितना पवित्र, कितना उम्दा, कितना व्यापक, कितना विशाल काम आप लोगों के पास है और इसलिए आप बहुत भाग्यशाली हैं, मैं आपको नमन करने आया हूँ। मैं आपका अभिनंदन करने आया हूँ। संविधान, एक किताब नहीं होती है, संविधान कल आज और कल को जोड़ता है। मैं कभी कभी सोचता हूँ भारत का संविधान, वो हिमालय को समंदर के साथ जोड़ता है, भारत का संविधान कच्छ के रेगिस्तान को नागालैंड की हरी भरी पर्वतमालाओं के साथ जोड़ता है।

सवा सौ करोड़ नागरिकों के मन को आशाओं को आकांक्षाओं को पल्लवित करता है। आप जिस संविधान का निर्माण करने जा रहे हैं वह सिर्फ, सिर्फ नेपाल के नागरिकों के लिए नहीं बल्कि दुनिया के इतिहास में स्वर्णिम पृष्ठ लिखने जा रहे हो। आपको आश्चर्य होगा कि मोदी जी क्या बता रहे हैं, मैं सच बता रहा हूँ। आपका संविधान जो बनेगा वो सिर्फ नेपाल के लिए नहीं विश्व के लिए एक स्वर्णिम पृष्ठ बनेगा क्योंकि इतिहास की धरोहर में देखें तो एक सम्राट अशोक हुआ करते थे, युद्ध के बाद शांति की तलाश में निकले, युद्ध छोड़ बुद्ध की शरण गए और एक नया स्वर्णिम पृष्ठ लिखा गया। मैं उन सबको बधाई देता हूँ जिन्होंने बुलेट का रास्ता छोड़कर के बैलेट के रास्ते पर जाने का संकल्प किया नेपाल की धरती पर। मैं उन सबका अभिनंदन करता हूँ जो युद्ध से बुद्ध की ओर प्रयाण किया है और इस सदन में आपकी मौजूदगी युद्ध से बुद्ध की तरफ की आपकी यात्रा का अनुमोदन करती है और इसलिए मैं आपको बधाई देने आया हूँ।

आप जब संविधान का निर्माण करेंगे वो संविधान, और मुझे विश्वास है कि पीस प्रोसेस धर्म से, एक ऐसा उम्दा संविधान जन्म लेने वाला है जो कोटि-कोटि जनों की आशाओं-आकांक्षाओं की पूर्ति करेगा। लेकिन इससे भी आगे आज दुनिया के हर भूभाग में छोटे मोटे कई गुट ऐसे पैदा हुए हैं, जिनका हिंसा में ही विश्वास है। शस्त्र के माध्यम से ही सुख प्राप्त करने का उनको मार्ग लगता है।

विश्व के सामने नेपाल वो देश बनेगा जब संविधान लेकर आएगा, वो दुनिया को विश्वास दिलाएगा कि शस्त्रों को छोड़कर के शास्त्रों के सहारे भी जीवन को बदला जा सकता है। ये उम्दा काम आप करने वाले हैं। हिंसा में विश्वास करने वाले दुनिया के उन गुटों को यह संदेश जाएगा कि बम, बंदूक और पिस्तौल के माध्यम से भलाई नहीं होती है, संविधान की सीमा में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के द्वारा इच्छित परिणामों को प्राप्त किया जा सकता है। और ऐसा उम्दा काम आपने शुरू किया है और उन लोगों ने इसमें हिस्सेदारी की है, जिन्होंने कभी शस्त्रों में भरोसा किया था। शस्त्रों को छोड़कर के, युद्ध को छोड़कर के बुद्ध के मार्ग पर जाने का रास्ता अपनाया और इसलिए एक ऐसा पवित्र काम आपके माध्यम से हो रहा है इस संविधान सभा के माध्यम से जो इस विश्व के हिंसा में विश्वास करने वाले लोगों को पुनर्विचार करने के लिए मजबूर करेगा। और आपका प्रयोग अगर सफल रहा तो विश्व को हिंसा की मुक्ति का एक नया मार्ग बुद्ध की इस भूमि से मिलेगा। यह मुझे आपके संविधान में ताकत नजर आ रही है और इसलिए मैं उस रूप में इस संविधान सभा को देख रहा हूँ। उस सामर्थ्य के रूप में देख रहा हूँ। संविधान किसके लिए है। भारत प्रारंभ से मानता आया है हमारा काम आपके काम में दखल करने का नहीं है, भारत का काम, आप जो संकल्प करें, आप जो दिशा चुनें, उसमें हम अगर काम आ सकते हैं तो काम आना यही हमारा काम है। आपको दिशा देना यही हमारा काम नहीं है। आपको मंजिल पर ले जाना यह हमारा काम नहीं है।

नेपाल एक सार्वभौम राष्ट्र है। हमारी इच्छा इतनी ही है नेपाल जैसा सार्वभौम राष्ट्र, हिमालय जितनी ऊँचाइयों को प्राप्त करे और पूरा विश्व नेपाल को देखकर के गौरवान्वित हो, ऐसा नेपाल देखने की हमारी इच्छा है। और इसलिए आपके पड़ोस में बैठकर और हमारे लोकतंत्र के अनुभव के आधार पर हमें अच्छा लगता है कि आप इस दिशा में जा रहे हैं आनंद होता है। संविधान वो हो जो सर्वजन समावेशक हो। हर नेपाली नागरिक को गरीब हो, अमीर हो, पढ़ा लिखा हो, अनपढ़ हो, गांव में हो शहर में हो, पहाड़ में हो तराई में, हो कहीं पर भी हो, हर नेपाली को संविधान जब आए तो उसे लगना चाहिए कि यह एक ऐसा गुलदस्ता है जिस गुलदस्ते में मेरे भी पुष्प की महक हैं। और संविधान निर्माता ऐसा गुलदस्ता बनाएंगे कि जिसके कारण हर नेपाली को लगेगा हां ऐसा बढ़िया गुलदस्ता आया है, जिसमें मेरे फूल की महक मुझे महसूस हो रही है वो काम आप कर रहे हैं। संविधान वो हो जो सर्वजन हिताय हो, सर्वजन सुखाय हो। किसी एक का भला करने के लिए नहीं। संविधान जनसामान्य की आशा आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए हो। संविधान जोड़ता है, संविधान कभी तोड़ता नहीं है। संविधान विवादों को संवादों की ओर ले जाने का एक सबल माध्यम होता है और इसलिए चाहे पहाड़ हो तराई हो, संविधान जोड़ने का काम करेगा और अधिक ताकत पैदा करने का काम करेगा। उस दिशा में आप सिद्धि प्राप्त करेंगे ऐसा मेरा पूरा विश्वास है।

संविधान वर्तमान के बोझ से दबा हुआ नहीं होना चाहिए और ऋषि मन का मेरा तात्पर्य यही है, जो वर्तमान से मुक्ति की अनुभूति करता है और जो आने वाले कल को बहुत गहराई से देख सकता है वही ऋषि मन होता है, जो संविधान का

निर्माण आने वाली पीढ़ियों के लिए करता है। और यही हमारी सोच होनी चाहिए। संविधान में हजारों चीजें अच्छी होती हैं, लेकिन एक कोमा एक फुलस्टॉप कहीं पर भी ऐसा आ गया जो आज तो पता नहीं चले कि कोमा है फुलस्टॉप पता नहीं रहे लिख दिया, लेकिन कभी 50 साल के बाद 100 साल के बाद कोमा, फुलस्टॉप के तौर पर आया हुआ कोई एक चीज कहीं विष बीच न बन जाए विष बीज को जन्म न दें, जो नेपाल के इन सपनों को रौंद डाले। ऐसी स्थिति कभी आए नहीं, ये बारीकी की चिंता ये संविधान सभा करेगी ऐसा मुझे पूरा विश्वास है। और मैं मानता हूँ कि आपने जो काम शुरू किया है वो अपने आप में गौरव का काम है। शस्त्र को छोड़कर के शास्त्रों को स्वीकार करना यही तो बुद्ध की भूमि से निकलने की आवाज है, संदेश है और उस अर्थ में भारत चाहेगा, और जो आप लोगों ने तय किया जो मैंने सुना है और मैं मानता हूँ कि बहुत ही उत्तम काम संघीय लोकतांत्रिक गणतंत्र का है। आज उपलब्ध व्यवस्था में उत्तम रास्ता आप सबने चुना है और भारत हमेशा आपके इस संघीय लोकतांत्रिक गणतंत्र की कल्पना का पूरा-पूरा आदर करता है स्वागत करता है। इंतजार यही है कि जितना जल्दी हो। इंतजार इसी बात का है।

नेपाल और भारत के रिश्ते ऐसे हैं कि थोड़ी सी भी हवा इधर उधर हो जाए तो ठंड हमें भी लगती है। अगर सूरज यहां तप जाए तो गर्मी हमें भी लगती है। ऐसा अटूट नाता है। अगर आप चैन से न सोए हों तो हिन्दुस्तान भी चैन से नहीं सो सकता है। नेपाल का कोई मेरा भाई भूखा हो तो भारत कैसे आनंद ले सकता है। कल जब ये कोसी की घटना घटी, समाचार आए। मेरी पूरी सरकार लगी रही। इतना बड़ा हादसा हो गया, क्या हो रहा है इतनी बड़ी चट्टान गिरी है कोसी नदी का पानी रुक नहीं रहा है। पता नहीं क्या हो गया है, कितने लोग खो गए हैं, कितने लोग मारे गए हैं। जितनी चिंता आपको सताती थी, उतनी ही चिंता मुझे भी सताती थी। क्योंकि, क्योंकि ये कष्ट आपका है तो मेरा भी है। ये आपदा आपकी है तो आपदा मेरी भी है। और हिन्दुस्तान के किसी कौने में जितनी तेजी से मदद पहुंचे, उतनी ही तेजी से मदद पहुंचाने के लिए मैंने दिशा पकड़ी और लोगों को मैंने भेज भी दिया। क्योंकि आप मेरे हैं हमारे हैं। हम और आप अलग हो नहीं सकते। और इसलिए आपके विकास के अंदर भारत आपकी जितनी आशा आकांक्षाएं हैं उसकी पूर्ति के लिए प्रतिबद्ध है।

नेपाल जहां से जन्मे हुए बुद्ध ने मन के अंधेरे को दूर किया था, विचारों का प्रकाश दिया और मानव जाति को एक नई चेतना मिली। यह नेपाल पानी की शक्ति का ऐसा धनी है, जो बिजली के माध्यम से आज भी हिन्दुस्तान का अंधेरा दूर कर सकता है और हम बिजली मुफ्त में नहीं चाहते, हम खरीदना चाहते हैं। हम आपका पानी भी नहीं ले जाना चाहते, आपका पानी और वैसे तो मैं एक बात नहीं जानता कि नेपाल में यह बात किस रूप में देखी जाएगी। पानी और जवानी यह कभी पहाड़ के काम नहीं आते, पानी पहाड़ में रहता नहीं चला जाता है और जवानी भी, पहाड़ में जवानी, थोड़ा सी उम्र बढ़े तो मौका देखते हैं कि चलो कहीं चला जाए, बेचारों को वहां रोजी-रोटी नहीं है तो जवानी भी पहाड़ के काम नहीं आती और पानी भी पहाड़ के काम नहीं आता है। लेकिन किसी युग में कहा गया होगा। हमें इस बात को बदलना होगा वो पानी पहाड़ के काम कैसे आये और जवानी पहाड़ को कैसे नई रौनक दे वो नई-नई दिशा में हमको बदलना होगा और इसलिए विकास यही उसके लिए यह मार्ग है।

भारत युवा देश है नेपाल भी युवा देश है। यहां कितने नौजवानों की तादाद है अगर उन नौजवानों के हाथ में अवसर दिया जाए तो नेपाल का कल क्या नेपाल का आज बदलने का सामर्थ्य इन नौजवानों में है वो अवसर कैसे मिलेगा हम प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग करके विकास की एक दिशा तय नहीं करेंगे तो कैसे होगा। भारत इसके लिए आपके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहता है। निर्णय आप कीजिए आप अपने नेतृत्व का परिचय दीजिए। और अकेले हिन्दुस्तान को बिजली बेचकर भी नेपाल समृद्ध देशों में अपनी जगह बना सकता है। इतनी ताकत आपके पास है। हम इसमें आपके साथ हैं आपकी विकास यात्रा में जुड़ना चाहते हैं। यहां पर ट्रकों के द्वारा ऑयल आता है, युग बदल चुका है, पाइप लाइनों से क्यों न आये हम उस काम को पूरा करेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में यहां के नौजवानों भारत आते हैं। भारत सरकार उनको स्कालरशिप देती है। स्कालरशिप पाने वाले नौजवानों की संख्या में मैं बढ़ोतरी चाहता हूँ। अधिक नौजवानों को अवसर मिले समझ लीजिए कि आज ही घोषणा कर रहा हूँ इसका फायदा उठाइए।

जब लक्ष्मण जी मूर्छित हो गये तो हनुमान जी पौधा लेने यहां आये। आज पूरे विश्व में होलिस्टिक हेल्थकेयर की चर्चा चल रही है। हिमालय के गर्भ में जड़ी बूटियां पड़ी हैं। अगर उन जड़ी बूटियों से हम हर्बल मेडिसिन को बढ़ावा दें। क्यों न नेपाल विश्व में सबसे बड़ा हर्बल मेडिसिन का एक्सपोर्टर क्यों ना हो जाए? क्या क्या नहीं है आपके पास। मैं आपके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने के लिए तैयार हूँ।

भारत जो मदद हो सके करने के लिए तैयार है क्योंकि आने वाले दिनों में विकास को किस दिशा में ले जाना आप जानते हैं मैं कुछ नया नहीं कह रहा। टूरिज्म की बात करें तो सवा सौ करोड़ देशवासी आपके पड़ोस में ऐसे हैं जो कभी न कभी पशुपतिनाथ आकर अपना सिर झुकाना चाहते हैं। भगवान बुद्ध के पास आकर शान्ति का संदेश देना चाहते हैं। क्यों ना नेपाल का टूरिज्म उस रूप में विकसित हो कि भारत से बहुत बड़ी मात्रा में टूरिस्ट नेपाल पहुंचें। टूरिज्म एक ऐसा क्षेत्र है कम से कम पूंजी में ज्यादा से ज्यादा रोजगार देने वाला कोई अगर क्षेत्र है तो वह टूरिज्म है। टूरिस्ट आता है तो चना

बेचने वाला भी कमाता है और मूंगफली बेचने वाला भी कमाता है, ऑटो रिक्शा वाला भी कमाता है, टैक्सी वाला भी कमाता है और चाय बेचने वाला भी कमाता है। और जब चाय बेचने वाले की बात आती है तो मुझे ज्यादा आनंद आता है। कहने का मतलब यह है कि टूरिज्म के विकास में इतनी संभावनाएं भरी पड़ी हैं। एडवेंचर टूरिज्म के लिए, हिमालय से बढ़कर क्या हो सकता है। नेपाल से बढ़कर कौन सी जगह हो सकती है। पूरे विश्व के नौजवानों को पागल कर दे इतनी ताकत आप की धरती के पास पड़ी है। मैं आपसे आह्वान करता हूं , आइए आगे आइये। पूरे विश्व का एडवेंचर यूथ, जिसका एडवेंचर करने का मिज़ाज है, जिसको पहाड़ों पर जाने की इच्छा रखता है, आप पूरे विश्व के युवाओं को ललकार सकते हैं।

आईए, कितना बड़ अवसर है। हमें संविधान भी निर्माण करना है। हमें नेपाल को नई ऊंचाईयों पर भी ले जाना है और इसके लिए एक पड़ोसी का धर्म हम निभाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। मेरे मन में आया कि नेपाल को हिट करें, मैंने सोचा अगर मैं अलग शब्दों का उपयोग करूंगा तो आपको बुरा लग जाएगा ये कौन होता है हिट करने वाला। लेकिन मैं जब हिट करने की बात करता हूं तो मेरे मन में तीन प्रमुख बातें हैं - एचआईटी। एक हाईबेस दूसरा आईबेस और तीसरा ट्रांसबेस। नेपाल को भारत जितनी जल्दी ये गिफ्ट दें। आईबेस यानी इनफार्मेशन बेस, पूरे विश्व के भीतर नेपाल पीछे नहीं रहना चाहिए। नेपाल भी डिजिटल बनना चाहिए। नेपाल विश्व के साथ जुड़ना चाहिए। आईबेस चाहिए और ट्रांसबेस, ट्रांसमिशन लाईन्स। आज नेपाल को हम जितनी बिजली दे रहे हैं, उसको डबल करने का मेरा इरादा है और इसके लिए जितना जल्दी ट्रांसमिशन लाईन लगाएंगे, अभी हम नेपाल का अंधेरा दूर करेंगे और दशक के बाद, अंधेरा हिन्दुस्तान का नेपाल दूर करेगा, ये हमारा नाता है और इसीलिए मैंने कहा एचआईटी। एच-हाइवेज,आई-इन्फार्मेशन और टी-ट्रांसमिशन। ये मैं हिट करना चाहूंगा और आप भी चाहेंगे कि ये हिट जल्दी हो।

मुझे लगता है कि हम जितना जल्दी नेपाल को अपने पास बुला सकें बुला लें पर अभी इसको खिसका कर ले जाने वाला कोई विज्ञान तो अभी आया नहीं है लेकिन अगर महाकाली नदी पर ब्रिज बन जाए तो मेरे और आपके बीच की दूरी बहुत खत्म हो जाएगी। आज एकदम हमारे पास आ जाएंगे। आज हमें घूम घामकर पहुंचना पड़ता है लेकिन महाकाली नदी पर अगर ब्रिज बन गया तो हमारी दूरियां कम हो जाएंगी। हम इस बात पर बल देकर आगे बढ़ना चाहते हैं। उसी प्रकार से सीमा यानी बार्डर जो हैं वो बैरियर नहीं हो सकते, बार्डर ब्रिज बनना चाहिए। हम चाहते हैं भारत और नेपाल की सीमाएं इस प्रकार से वाईब्रेट हो, अच्छेपन की यहां लेनदेन होती रहे ताकि आपका भी विकास हो और भारत के भी आपके साथ जुड़े हुए छोटे-छोटे जो राज्य हैं, उनको भी विकास के अवसर मिलें। एक योजना जिसे मैं प्रधानमंत्री जी को आज बता रहा था। मैंने कहा कि हिमालय पर रिसर्च होना जरूरी है। इतनी बड़ी प्राकृतिक संपदा है। भारत ने उस पर एक काम शुरू किया है, हमने अपने बजट में भी इसकी घोषणा की है। नेपाल भी उसमें आगे बढ़े और हम मिलकर के हिमालय की शक्ति, मानव जाति के कैसे काम आ सकती है, उसके वेज और मीन्स क्या हों, उसके सामर्थ्य को हम पहचाने और मानव जाति के कल्याण की दिशा में हम जरूर काम करें। उसी प्रकार से हम प्रयास करना चाहते हैं।

कभी-कभी मैं हैरान हो जाता हूं कि अमेरिका टेलिफोन करना है तो बड़े सस्ते में हो जाता है लेकिन नेपाल फोन करना है तो बड़ा महंगा पड़ जाता है। हमें समझ नहीं आता कि यह क्या बात है। ऐसा कैसे हो सकता है और नेपाल के लाखों लोग हिन्दुस्तान में रहते हैं अपने परिवार से बात करना चाहते हैं कर नहीं पाते। नमस्ते करके फोन रख देते हैं। मैं यह स्थिति बदलना चाहता हूं। दोनों देशों में ये जो सर्विस प्रोवाइडर हैं उनसे मिलकर के हम भी बात करेंगे आप भी बात कीजिए। यह कनेक्टिविटी ऐसी नहीं होनी चाहिए। बड़े आराम से सहज तरीके से कम खर्च में बात हो और उसी से तो नाता जुड़ता है। लाइव कम्युनिकेशन जितना बढ़ता है उतना ही नाता बनता है और हम उसको बढ़ावा देना चाहते हैं।

अभी आपने सुना होगा जब मैं, मेरा शपथ समारोह था जब मैं प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेने वाला था तो मैंने सार्क देशों के राष्ट्राध्यक्षों को निमंत्रित किया था और मैं आभारी हूं आदरणीय प्रधानमंत्री जी का कि बहुत ही कम नोटिस में तो आए और मैं मानता हूं कि सार्क देश मिलकर के गरीबी के खिलाफ लड़ाई लड़ने का एजेंडा लेकर एक साथ आगे क्यों न बढ़ें। गरीबी के खिलाफ लड़ने में हम दोनों हम सब सभी सार्क देश एक-दूसरे की मदद करें। और उसमें एक काम सार्क देशों को और भारत का दायित्व है हम कोई उपकार नहीं करते, हम मानते हैं कि हमारा दायित्व है कि हमारे-अड़ोस-पड़ोस के हमारे जितने भी छोटे भाई हैं हमारे साथी भाई हैं उनकी विकास यात्रा में हम मदद मुख्य रूप से करें।

और इसलिए अभी-अभी मैंने घोषणा की है कि स्पेस टेक्नोलॉजी का लाभ हमारे सार्क देशों को मिलना चाहिए। और इसलिए भारत की तरफ से एक सार्क सैटेलाइट लॉन्च किया जाएगा। इस सार्क सैटेलाइट का लाभ हैल्थ सेक्टर के लिए, एजुकेशन सेक्टर के लिए स्पेस टेक्नोलॉजी का लाभ सार्क देशों को मिले नेपाल को मिले उस दिशा में हमने कदम उठाना तय किया है। और इसलिए इसका आने वाले दिनों में जरूर लाभ मिलेगा।

उसी प्रकार से मैंने पहले ही कहा कि मल्टीपर्सन प्रोजेक्ट, आपने देखा होगा, हम इतने पास में हैं आपके और हमारे बीच में

कोई ज्यादा दूरी नहीं है फिर भी आते-आते 17 साल लग गए। यह अखरता है। मैं आपको वादा करता हूँ कि अब ऐसा नहीं होगा। और मैं तो कुछ ही महीनों में वापस आ रहा हूँ सार्क समिट के समय। और मैंने उस समय तय किया है कि मैं उस समय जब आउंगा तो राजा जनक को भी नमन करने जाउंगा और भगवान बुद्ध को भी नमन करने जाउंगा। यह खुशी की बात है कि पंचेश्वर प्रोजेक्ट बहुत समय पहले तय हुआ था फिर कितने रुपये की बढ़ गई, लेकिन अब अर्थोरेटी का निर्माण दोनों देशों में हुआ है मैं मानता हूँ कि एक साल के भीतर-भीतर 5600 मेगावाट का यह प्रोजेक्ट, काम आरंभ हो जाए तो आप कल्पना कर सकते हैं कि नेपाल की कितनी बड़ी सेवा होगी। आज नेपाल के पास जितनी बिजली है उससे करीब-करीब पाँच गुना बिजली, छोटी बात नहीं है यह। विकास को कितनी नई ऊँचाई मिल सकती है। और उसके लिए भारत बिल्कुल प्रोएक्टिव होकर आपके साथ काम करने के लिए तैयार है। और हम आपको उस दिशा में आगे बढ़ाने के लिए पूरा प्रयास करेंगे।

एक बात मैं और चाहूँगा, जैसा मैंने कहा हर्बल मेडिसिन, एक बहुत बड़ा क्षेत्र है। वैसे भी ऑर्गेनिक फॉर्मिंग पूरी दुनिया के अंदर एक बहुत बड़ा मार्केट खड़ा हुआ है। जो माल रुपये में बिकता है वो अगर ऑर्गेनिक है तो डॉलरों में बिकने लग जाता है।

नेपाल एक ऐसी भूमि है जहाँ यह संभव है। भारत में सिक्किम एक राज्य, आपके पड़ोस में ही माना जाएगा। सिक्किम ने पूरा ऑर्गेनिक स्टेट बना दिया अपने आपको। और उसके कारण पूरे विश्व में उसका एक नया मार्केट खड़ा हुआ है। अगर नेपाल उस दिशा में जाना चाहता है तो मुझे खुशी होगी आपको मदद करने की, आपके साथ काम करने की। उसी प्रकार से हमने एक प्रयोग शुरू किया है हिन्दुस्तान में सोइल (मृदा) हैल्थ कार्ड का। हम जानते हैं कि भारत और नेपाल में हम नागरिकों के पास भी सोइल हैल्थ कार्ड नहीं है। लेकिन हम स्वाइल हैल्थ कार्ड किसानों को उसकी जमीन की तबीयत कैसी है, कोई बीमारी तो नहीं है, विशेषताएं क्या हैं किस प्रकार के फसल के लिए उपयोगी है। कौन सी दवाइयां वहाँ डालनी चाहिए कौन सी दवाएं नहीं डालनी चाहिए। कितना फर्टिलाइजर लिया जा सकता है ये सारी वैज्ञानिक तरीके से आगे बढ़ाया जा सकता है। अगर नेपाल की रुचि होगी तो हम जो सोइल हैल्थ कार्ड के इस काम को जो हिन्दुस्तान में आगे बढ़ा रहे हैं यहाँ के किसानों को भी अगर उसका लाभ मिलेगा तो कृषि आधुनिक हो, कृषि वैज्ञानिक हो उसमें हम बहुत बड़ी मात्रा में उपयोगी हो सकते हैं। और मैं चाहता हूँ कि आने वाले दिनों में आप इसके लिए जरूर ही कुछ न कुछ सोचेंगे।

और मैं मानता हूँ। उसी प्रकार से आज जब मैं आपके बीच आया हूँ तो मैं आज यह भी आपको घोषणा करके जाना चाहता हूँ कि भारत नेपाल को 10,000 करोड़ नेपाली रुपये कंसेसनल लाइन ऑफ क्रेडिट की सहायता देने का हमने निर्णय किया है। हम यह सुनिश्चित करेंगे कि इस क्रेडिट का उपयोग नेपाल की प्राथमिकता पर होगा। आप इसे हाइड्रो पावर, इंफ्रास्ट्रक्चर इन सारे क्षेत्रों में लगाएं तो यह करीब एक बिलियन डॉलर जैसी अमाउंट में आज और पहले इसका जो दिया हुआ है यह इससे अलग है उसको इससे मत जोड़ना वो अलग है, जो दे दिया। यह नया है।

फिर एक बार मैं, आपने मेरा स्वागत किया सम्मान किया इसलिए मैं आपका आभारी हूँ। लेकिन मैं फिर से एक बार विश्वास दिलाता हूँ कि दुनिया कि नजरें आपकी तरफ हैं। विश्व बड़ी आशा भरी नजरों से आपकी तरफ देख रहा है क्योंकि शस्त्र से मुक्ति का मार्ग, संविधान के माध्यम से आज शस्त्र के रास्ते पर चल पड़े लोगों को वापस लाने का काम आज नेपाल की सफलता से जुड़ा हुआ है। आप सफल हुए तो दुनिया को वापस लौटने का अवसर मिलेगा। शस्त्र छोड़ने की प्रेरणा मिलेगी।

लोकतांत्रिक व्यवस्था से भी जन-मन की आशाओं आकांक्षाओं की पूर्ति का रास्ता खुलेगा, नया विश्वास पैदा होगा। आप संविधान के इस काम को उस रूप में देखें। इसलिए मैं दोबारा इस बात का उल्लेख कर रहा हूँ। आपका ऋषि मन 100 साल के बाद नेपाल कैसा होगा, नेपाल के लोग कैसे हों, नेपाल के लोगों को क्या मिले इसका निर्णय आप कर रहे हैं और उस निर्णय में आप सफल होंगे। भगवान बुद्ध की इस भूमि में विचारों की कोई कमी हो नहीं सकती। इरादों की कमी हो नहीं सकती। संकल्पशक्ति की कमी कभी नहीं हो सकती, और इसलिए एक नया इतिहास यहाँ से रचने जा रहा है। इसको इतना बड़ा लाभ मिलने वाला है। मुझे पूरा विश्वास है कि हम सबको, मैं यही कहूँगा कि हमारे जो संबंध हैं भारत-नेपाल मैत्री यह अमर रहें। भारत-नेपाल मैत्री युग-युग जीवे और यह सार्वभौम राष्ट्र नेपाल हिमालय से भी नई ऊँचाइयों पर ऊपर उठे। इसी शुभकामनाओं के साथ फिर एक बार आपके बीच आने का अवसर मिला बहुत बहुत धन्यवाद।

वि. कासोटिया/एएम/एसएस/डीएस/डीसी-2948

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

30-सितम्बर-2014 10:23 IST

**अमेरिकी उपराष्ट्रपति जो बायडन और अमेरिकी सेक्रेटरी ऑफ स्टेट जॉन कैरी द्वारा आयोजित भोज के अवसर पर
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के भाषण का मूल पाठ**

दोनों के बीच किस प्रकार का विश्वास है, leadership के बीच में किस प्रकार की chemistry है, वही तो आखिरकर लंबे अरसे तक काम देती है। सिर्फ Mars में ही, भारत और अमेरिका का मिलन हुआ है, ऐसा नहीं है, अब धरती पर भी उतना ही निकट का मिलन संभव हो चुका है।

कुछ कठिनाइयां जरूर हैं। आप 120 वोल्ट की सिस्टम वाले हैं, मैं 220 वोल्ट वाला हूँ। 120 और 220 के बीच में ऊर्जा का जो अंतर है, उसका मेल करना है, उस यात्रा में हम सफल होंगे। और इसलिए - 120 वोल्ट और 220 वोल्ट - दोनों एक साथ काम करने के सामर्थ्य के साथ आज आपके बीच में खड़े हैं।

मैं इन दोनों महानुभावों के विषय में एक बात कहता हूँ। आमतौर पर राजनीतिक जीवन में सरल रास्ते पर चलना सब पसंद करते हैं। सरल रास्ते पर पहुंचने की कोशिश भी करते हैं। लेकिन बहुत कम लोग होते हैं, जो सामने चल करके संकटों को मोल लेते हैं। ये दोनों नेताओं की विशेषता रही है कि जहां-जहां जब भी कोई संकट हुआ, तो राजनीतिक हिसाब-किताब से परे रह के उससे जुड़ना, उससे जुझना और समस्या का समाधान करने के लिए जी तोड़ मेहनत करना इन दोनों नेताओं का स्वभाव है। ये राजनीति में बहुत ही Rarely देखा जाता है, क्योंकि मक्खन पे लकीर बनाना बड़ा आसान होता है, लेकिन पत्थर पर लकीर बनाने के लिए बड़ा साहस चाहिए। और ये, ये दोनों नेता उस मिजाज के हैं।

आज मैं ये विश्वास से कहता हूँ, भारत बहुत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। भारत की युवा शक्ति, भारत का talent, भारत का Innovative Nature, भारत की Ancient civilisation - ये सारी बातें आज विश्व के मंच पर एक आशा को जन्म देने वाली बनी हैं। विश्व की जो आशाएं हैं, उन आशाओं को पूर्ण करने के लिए भारत प्रतिबद्ध है, भारत कटिबद्ध है, और मैं विश्व समुदाय को और खास करके अमेरिका को विश्वास दिलाता हूँ कि विश्व जिन आशाओं और आकांक्षाओं के साथ भारत की तरफ देख रहा है, भारत उसके लिए सज्ज हो चुका है। भारत कदम बढ़ाने के लिए तैयार हो चुका है। और अमेरिका के साथ मिलकर के हम उन रास्तों को चुनना पसंद करेंगे, जो मानव जाति के कल्याण के लिए काम आए। विश्व कल्याण के काम आए। लोकतंत्र को मजबूत करें। संकटों से जुझ रहा विश्व का छोटा से छोटा देश क्यों न हो, विश्व का पिछड़ा से पिछड़ा मानव समाज क्यों न हो - उनके संकटों को दूर करने में हमारी भी शक्तियां काम आएंगी। ऐसा मुझे विश्वास है।

बहुत ही सफल यात्रा के बाद, आज इस महत्वपूर्ण समारोह में, मुझे आप लोगों से मिलने का अवसर मिला है। मैं President Obama का भी हृदय से अभिनंदन करता हूँ, आभार व्यक्त करता हूँ। उन्होंने काफी वक्त निकाला। हम लंबे अरसे तक कल और आज साथ रहे। और आज तो वो मेरे साथ सैर करने के लिए भी निकल पड़े थे। इतनी सहजता के साथ इन हमारे संबंधों ने एक नया आयाम लिया है। मैं इसके लिए मैं President Obama का भी हृदय से बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूँ।

इस भोज सम्मान के लिए मैं उपराष्ट्रपति जी का हृदय से अभिनंदन करता हूँ। विदेश मंत्री जी का भी अभिनंदन करता हूँ। और आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद।

महिमा वशिष्ठ / शिशिर चौरसिया, तारा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

29-सितम्बर-2014 15:06 IST

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा न्यूयॉर्क में 'विदेशी मामलों की परिषद' में दिए गए सम्बोधन का मूल पाठ

सभी गणमान्य अतिथियों

भारत के पांच प्रधानमंत्री इसके पूर्व इस सभागृह में आपसे बात कर चुके हैं। मेरा छठा नंबर है, मैं तीन दिन से आपके ही शहर में हूँ और मुझे जो उत्साह, उमंग और जो प्यार मिला है इसके लिए मैं इस शहर का और US का हृदय का आभार व्यक्त करता हूँ। मैं विशेष रूप से CFR की इस परंपरा को बढ़ाई देता हूँ कि उसने अपनी Credibility बनाई है। वे स्वयं अपने विचारों को थोपते नहीं हैं, वे विचारों को सुनते हैं, सब पक्षों के विचारों को सुनते हैं और उसी को जगत के सामने रखते हैं और लोगों पर छोड़ देते हैं कि ये भिन्न-भिन्न पहलू हैं, आप judge कीजिए कि सही क्या है, गलत क्या है?

मैं समझता हूँ कि ये अपने आप में छोटा काम नहीं है, वरना संस्थागत प्रेम इतना होता है, संस्था की अपनी छवि की चिंता इतनी होती है, वो अपने विचारों को कहीं न कहीं तो रंग देने की कोशिश करता है, लेकिन CFR ने अपने आप को लगातार बचाए रखा है और जैसे का तैसा और सब पहलुओं को समेट कर के सभी के सामने रखने की एक परंपरा खड़ी की है। इसके लिए मैं CFR को हृदय से अभिनंदन करता हूँ।

डॉ. हास्स का संबंध हिंदुस्तान से अच्छा रहा। भारत और अमेरिका के संबंधों को पिछले दशक में गति देने में, संबंधों को और ताकत देने में डॉ. हास्स ने और अच्छी भूमिका निभाई। जब वाजपेयी जी की सरकार थी भारत में, तब उनकी बड़ी सक्रिय भूमिका रही थी और हम, पूरा भारत उनके इस योगदान को सकारात्मक रूप से हमेशा याद करता है और मैं डॉ. हास्स का उसके लिए हृदय से, आज भी अभिनंदन करना चाहता हूँ।

जैसा अभी डॉ. हास्स ने अभी बताया कि 30 साल के बाद भारत में पहली बार एक पूर्ण बहुमत वाली सरकार चुनकर आई है और वो भी, जो हमेशा विपक्ष में रहती थी, वैसी पार्टी जीतकर आई है और पहली बार भारत में एक ऐसे व्यक्ति को प्रधानमंत्री बनने का अवसर मिला है, जो आजाद हिंदुस्तान में पैदा हुआ है। हमारे यहां अब तक जितने प्रधानमंत्री हुए वो जब ब्रिटिश शासन था, तब उसी काल में उनका जन्म हुआ इसलिए मैं वो इंसान हूँ जिसे गुलामी के वो दिन देखने का अवसर नहीं आया था। मैं जन्मा ही ऐसे समय में, इसलिये मैंने लोकतंत्र को Breathing के साथ लिया है। मेरे सांसां-सांस में लोकतंत्र है और वही लोकतंत्र की ताकत के भरोसे आज समाज में एक सबसे छोटा व्यक्ति हिंदुस्तान के इस पद पर पहुंच पाया है, ये लोकतंत्र की ताकत है।

पहली बार बहुमत मिला है और उसके कारण, करीब-करीब दो Generation अपनी आशाओं, आकांक्षाओं को समेटकर के बैठे थे, एकदम से उफान आया है। भारत का हर नौजवान जिसकी आयु आज 40-45 साल हुई होगी, 10 साल की उम्र से लेकर वह अपनी 40 साल की यात्रा तक उसने अस्थिरता, निराशा और यही माहौल देखा है और जब ये स्थिति आई है तो ये स्वाभाविक है कि उसकी अपेक्षाएं बहुत बढ़ जाती है और उन अपेक्षाओं को पूर्ण करना हमारा दायित्व भी है। भारत एक विशाल देश है और उसके चुनावों को समझना, ये भी एक बहुत कठिन काम है और जैसे पश्चिम के देशों में चुनावों पर किताबें लिखी जाती हैं, भारत में उस प्रकार की परंपरा तो अभी नहीं बनी है और उसके कारण चुनाव का रूप-रंग और इसका दायरा और इसका पूरा अंदाज, जब तक कोई व्यक्ति चुनाव को निकट से न देखे उसको अंदाज नहीं आ सकता और शायद विश्व में इतनी बड़ी संख्या में मतदान, इतने मतदाताओं के मत प्राप्त करके विजय होना, ये अपने आप में एक बहुत बड़ी कठिन तपस्या रहती है, कठोर परिश्रम रहता है लेकिन भारत की जनता ने बहुत आशीर्वाद दिए हैं।

इस चुनाव में हम दो विषय को लेकर के मैदान में उतरे थे। एक हमारा आग्रह था Good Governance दूसरा हमारा आग्रह था Development हम मानते हैं कि भारत की सभी समस्याओं का समाधान, जब तक हम इन बातों पर focus नहीं कर सकते, तब तक हम नहीं कर पाते। पहले हमारे यहां कुल मिलाकर आदत यह रही थी कि छोटे-छोटे वर्गों को खुश करो, टुकड़े फेंको, अपनी वोट बैंक को सलामत रखो और राजनीति करते रहो। वो एक सरल उपाय, बहुत ही सरल रास्ता है और राजनीति में टिकने के लिए, हिंदुस्तान के लोगों को वो जम गया था लेकिन, Good Governance की बात करना, Development की बात करना छोटे-छोटे-छोटे विषयों से ऊपर उठकर के काम करना बहुत कठिन काम है लेकिन,

इस बात को लोगों ने इसलिए स्वीकारा क्योंकि भारत की जो युवा पीढ़ी है, उसकी सोच बदली है, भारत की जो young generation है, वो अब टुकड़ों में जीना नहीं चाहती। अब तक उनको जिस प्रकार से Treatment मिली है, उस Treatment से वो खुश नहीं है। वो कुछ नया चाहती है और भारत वो भाग्यवान देश है, वो दुनिया का सबसे पुराना Civilization है, साथ-साथ दुनिया का सबसे युवा देश है। ये एक बड़ा Unique Combination हमारे पास है कि महान विरासत भी है और हम Youngest Country of the World भी है। हमारी 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 साल से कम उम्र की है। इस Youth का जो aspirations है, ये Youth के मन में जो पड़े हुए विचार हैं, उसी का परिणाम है कि इतना बड़ा राजनीतिक परिवर्तन आया है। ये बात निश्चित है कि राजनीति में Stability वो अपने आप में बहुत बड़ा message होता है। हम जानते हैं कि जब Stability होती है तो सामान्य मानवों को भी विश्वास होता है कि हां भाई चलिए कि अब कुछ नीतियों के आधार पर भी हम साथ चल सकते हैं तो भारत की जनता ने Stability देने का निर्णय कर-करके विकास की यात्रा की नींव डालने का काम स्वयं जनता-जनार्दन ने किया है।

मैं इस बात पर विश्वास करता रहा हूं, जो मैं Good Governance कहता हूं तब, Minimum Government-Maximum Governance। क्योंकि इतना बड़ा देश चलाने के लिए इतनी बड़ी परंपराएं, इतने बड़े नियम, इतने बड़े hierarchies यही चीजें हैं, जो रुकावट का कारण बन जाती हैं। वो सरकारी व्यवस्था ही एक प्रकार से बोझ बन जाती है। मेरी कोशिश है सारी Processes सरल कैसे हो? Speedy कैसे हो? उस दिशा में हमारी कोशिश है। Transparency कैसे आए? ये हमारी कोशिश है। हम E-Governance की ओर बल दे रहे हैं, Electronic Governance और इसके कारण Effective Governance की पूरी संभावनाएं हैं, Easy Governance की पूरी संभावनाएं हैं, उस पर हमारा बल है।

दूसरी बात है Development। Development में भी हमारे दो फलक हैं- एक हम विश्व स्तर पर Developed Countries के बराबर में हमारे देश को कैसे लाकर खड़ा करें? At the same time मेरे देश में गरीब से गरीब जो इंसान है और आखिरी इंसान है, उसके जीवन में बदलाव कैसे लाएं? भारत की जब चर्चा होती है तो एक पहलू छूट जाता है और समय की मांग है कि उस पहलू पर भी चर्चा की जाए और वो है Neo Middle Class, जो लोग गरीबी से बाहर आए हैं लेकिन अभी मध्यम वर्ग की अवस्था तक पहुंचे नहीं हैं और अब गरीबी में वापस जाना नहीं चाहते हैं। यह एक ऐसा बहुत बड़ा bulk है। हम इस Neo Middle Class को address करना चाहते हैं, अगर हम Neo Middle Class को address करते हैं, उसके आर्थिक जीवन में बदलाव लाते हैं तो गरीबी से बाहर निकलने का हौंसला बुलंद हो जाएगा। अगर हमने Neo Middle Class के प्रति उदासी बरती और वो दुर्भाग्य से फिर गरीबी की ओर चला गया, तो कभी भी गरीब को बाहर आने की इच्छा नहीं होगी। वो यही मानेगा कि परमात्मा ने तय किया है कि ऐसे ही गुजारा कर लो, जो होगा-सो देखा जाएगा। मैं ये मनोवैज्ञानिक स्थिति को बदलना चाहता हूं और उसके लिए इस तबके के विकास के लिए क्या योजनाएं हो सकती हैं, उस पर हम बल दे रहे हैं।

जब मैं कहता हूं हम Global Level पर जाना चाहते हैं, जिसमें हमारा Growth Rate बढ़ाना चाहते हैं, हमारी Economy को हम और तेज बनाना चाहते हैं, अच्छा है, पहले तीन महीने में ही हम 4.5 से लेकर 5.7 तक, हमारे Growth को एक प्रतिशत पहले ही तीन महीने में बढ़ाने में सफल हुए हैं और उसका एक मूल कारण है सरकार चुनने के बाद एक विश्वास का माहौल बना है और उस विश्वास का माहौल है वो सबसे ज्यादा गति देता है।

कभी-कभी कोई Patient बीमार हो और किसी दूसरे शहर में बीमार हो जाता है और उसे जब तक अपना डॉक्टर नहीं मिलता है तो वो ठीक नहीं हो पाता है तब तक उसको चिंता रहती है, उसको खुद का डॉक्टर चाहिए, तब उसको उसका अपना विश्वास बीमारी से बाहर लाता है और लोगों ने जिस विश्वास के साथ अपनी सरकार बनाई है, वो सरकार उसने खुद बनाई है, अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए बनाई है। उसके कारण जनता के अंदर अपने-आप में एक विश्वास पैदा हुआ है और विश्वास इन दिनों एक बहुत बड़ा Psychological काम कर रहा है। जिसके कारण एक Magnetic Effect आज मैं देख रहा हूं कि चारों तरफ से विकास की दौड़ का एक माहौल बना है और जो हमें विश्व के समृद्ध देशों के बराबर ले जाने के लिए संभावनाओं को जन्म देता है।

हम हमारी Economy को तीन पिलर पर आगे बढ़ाना चाहते हैं Agriculture, Manufacturing और Service sector और तीनों को हम Balance करना चाहते हैं। हमारी पूरी Economy में 30% contribution, Agriculture का है। 30%, Manufacturing हो, 30% ,Service Sector का हो। कभी-कभार एकाध नीचे चला गया हो तो भी देश की Economy को कोई प्रभाव न पड़े और उस दिशा में हम काम कर रहे हैं। जब हम Manufacturing sector की बात करते हैं तब हम "Make in India" का एक बुलंद विश्वास जगाने का प्रयास कर रहे हैं। हम दुनिया को कहते हैं कि आइए "Make in India" और मैं India के लोगों को कहता हूं कि आप भी ऐसा manufacturing करिए की आपके भी product दुनिया के बाजार में चलें और उसके लिए मैं कहता हूं Zero Defect-Zero Effect। हमारा product ऐसा हो जिसमें Zero Defect हो, हमारे product की process ऐसी हो जो Environment पर Zero Effect करती हो इसलिए Zero Defect-Zero

Effect के साथ हम manufacturing process और products, उन पर हम अपना बल दें, तो हम दुनिया में अपनी जगह बनाने में सफल हो जाएंगे।

जब मैं "Make in India" की बात करता हूँ, फिर कि दुनिया के लोग आएँ। आज दुनिया के हर उद्योगकार को उत्पादन तो करना है, market available है उसकी चिंता यही है कि Low Cost Production कैसे हो? Effective Governance की सुविधा कैसे मिले? अपने Investment की Security कैसे हो? उसको proper Human Resource कैसे मिले? अपने मुलाजिमों के लिए, अपने अफसरों के लिए Quality of Life कैसे उपलब्ध हो? अगर इन बातों पर ध्यान दिया गया तो, विदेश के लोगों के आने की संभावना बढ़ जायेगी।

भारत जहाँ युवा देश है, तो हम Skill Development पर बल दे रहे हैं। Skill Development में भी मेरे दो पहलू हैं। एक, 2020 तक दुनिया को एक बहुत बड़े work force की आवश्यकता होने वाली है। विश्व को इतने बड़े work force की आवश्यकता लगने वाली है कि work force कहाँ से मिलेगा, उनके लिए चिंता का विषय है। भारत एक युवा देश है, दुनिया के work force की requirement को पूरा करने का सामर्थ्य भारत में है। दुनिया को कितने ही प्रकार के लोगों की जरूरत पड़ेगी, उस काम को हम करना चाहते हैं। उसी प्रकार से हम वो भी Skill Development करना चाहते हैं, जिसमें हमारे Entrepreneurs तैयार हों और वो लोग हों जो Job creators हो। छोटे-छोटे लोग छोटे-छोटे व्यवसायों द्वारा Job creators कैसे बनें और उसके कारण छोटे-छोटे उद्योगों का एक जाल बिछे और हमारी Economy और आगे बढ़े, उस दिशा में हम काम करना चाहते हैं। मुझे विश्वास है कि जिन कदमों को हमने उठाया है, उसका सीधा-सीधा परिणाम मिलने वाला है।

पिछले तीन महीने के अल्पकाल में ही....अभी-अभी डॉ. हास्स बता रहे थे Mars में हमने बहुत बड़ा Achievement किया है। आपको जानकर के आनंद होगा कि हिंदुस्तान के अलग-अलग राज्यों में छोटे-छोटे पुर्जे बने और छोटे-छोटे कारखानों ने छोटे-छोटे पुर्जे बनाए और हमारे Space Scientists ने उन्हें इकट्ठा किया और बहुत ही कम खर्च में, हमने Mars तक पहुंचने में सफलता पाई है और बहुत ही कम खर्च में। खर्च में मैं कहूँ तो Hollywood की फिल्म इससे महंगी होती है। Hollywood की फिल्म से भी कम खर्च में Mars Orbiter ने 65 करोड़ किमी यानि 650 Million kilometers की यात्रा पूरी की है और वहाँ तक पहुंचे हैं और दुनिया में भारत पहला देश है कि जो पहले ही प्रयत्न में सफल हुआ है। अब तक किसी ने छह प्रयास के बाद, किसी ने आठ प्रयास के बाद सफलता मिली। भारत एक ऐसा देश है जिसको पहले ही प्रयास में सफलता मिली है तो talent और locus, चीजों को बनाने का समर्थ्य, ये दुनिया को हमने परिचय दिया है। जो Manufacturing Sector के लोग हैं, उनको कुछ और देखने की जरूरत नहीं है, वो सिर्फ हमारे Mars Orbiter की Case Study करें। Case Study करके वो तय कर सकते हैं कि हां, हम हिंदुस्तान जा सकते हैं, कि इतना बड़ा Achievement इतने कम पैसों में इतने Skilled Manpower के द्वारा हो सकता है तो जो product लेकर के आया है, वो भी कर सकता है, इसलिए "Make in India" के विषय के लेकर के हम आगे बढ़ रहे हैं, Skill Development पर हम बल दे रहे हैं।

हम कानून काफी बदलाव ला रहे हैं, हमने Labour Reforms किए हैं। मैं जानता हूँ कि भारत जैसे देश में Labour Reforms के initiatives राजनीतिक दृष्टि से अनुकूल नहीं होते हैं लेकिन जनता ने जो हमें जनादेश दिया है और उसको देखते हुए जो मुझे लगता है कि मुझे देश को विकास की दिशा में ले जाना मेरा दायित्व है और राजनीतिक विषयों पर अनुकूल न हो ऐसे विषयों पर भी हम जिम्मेवारी के साथ कदम उठा रहे हैं। ultimately यह सबके फायदे में जाने वाले हैं, किसी का नुकसान हो, यह हम नहीं चाहते, हम राज्यों को भी authorize कर रहे हैं कि आपको अपने राज्य के अनुसार labour reform करना है तो कीजिए तो! Central Government के पास आएगा तो हम आपका पूरा सहयोग देंगे। केंद्र और राज्य के बीच में भारत एक federal structure है। हमने Team India की एक कल्पना कर-करके Governance को आगे बढ़ाया है। केंद्र और राज्य साथ मिलकर के काम क्यों न करें? अगर कोई company invest करने आती है, वो आकर के दिल्ली में बात करती है, अब दिल्ली के पास खुद तो कुछ करना होता नहीं, उसने किसी न किसी राज्य को ही भेजना होता है लेकिन, राज्य के लोगों को पता नहीं होता तो proper respond नहीं करते लेकिन, केंद्र और राज्य एक टीम के रूप में कार्य करते हैं तो किसी भी व्यक्ति को रहता है कि भई मैं दिल्ली जाऊँ या किसी राज्य के headquarter पर जाऊँ, मेरे काम को कभी रुकावट आने वाली नहीं है, एक विश्वास का माहौल पैदा होगा और इसलिए Team India के इस mood को लेकर के हमने अपनी पूरी कार्यशैली में बदलाव लाया है और उस बदलाव को लेकर के हम आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं।

उसी प्रकार से "Ease of Business", मैं जनता हूँ, मैं कभी-कभी कहता हूँ कि हमारी हिंदू mythology में कहते हैं कि चार धाम की यात्रा करो तो मोक्ष मिल जाता है लेकिन, हमारे यहां फाइल 32 जगह भी यात्रा करे तो उसे मोक्ष नहीं मिलता है। तो मैंने उनको कहा कि फाइल को मोक्ष जल्दी कैसे हो? और इसके लिए हमने process को बदला है। हमारे यहां कोई form भरना है तो पराने जमाने के 10-10 पेज के form भरने पड़ते थे और हर काम के लिए अलग-अलग form

भरने पड़ते थे। मैंने कहा यह अब नहीं होगा। सब मैंने मेरे अफसरों को कहा कि एक पेज का form बना दीजिए और दोबारा किसी से कुछ मांगईए मत। यानी लोगों को लगता है बहुत छोटी-छोटी चीजें हैं लेकिन हम सबको मालूम है। ताला कितना ही बड़ा क्यों न हो लेकिन छोटी चाबी से ही खुल जाता है और इसलिए छोटी-छोटी चीजें बहुत बड़े रास्ते खोल देती हैं और उसी को बल देकर के हम आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं।

हमने Foreign Direct Investment के लिए बड़े महत्वपूर्ण initiatives पहली ही बजट में ले लिए हैं। भारत का रेलवे तंत्र लोगों का ध्यान नहीं गया है लेकिन, आर्थिक प्रवृत्ति का इससे बड़ा कोई क्षेत्र नहीं हो सकता है। ये दुनिया की second largest line है, इतना बड़ा रेलवे का काम है, हम उसमें private investment चाहते हैं। कई सालों से यह बात होती थी, मुझे यहां पर कई बड़े industrial houses ने बताया कि साहब हम सुनते तो आए हैं लेकिन हुआ कुछ नहीं। मैंने कहा साहब आप सुनते आए लेकिन अब हो चुका है। हमने बजट में, कानून में, officially रेलवे में 100% allow कर दिया है। 100% FDI को allow करके हम रेलवे को upgrade करना चाहते हैं, हम रेलवे की speed बढ़ाना चाहते हैं, हम रेलवे को expand करना चाहते हैं, हम हिंदुस्तान के अंदर transportation के लिए main, main जो उसकी आत्मा है, उसको रेलवे द्वारा करना चाहते हैं, हम पूरा convert करना चाहते हैं। मैं मानता हूं कि trillions and trillions का business अकेले भारत की रेलवे से जुड़ा हुआ है और दुनिया में वो कोई ऐसा बड़ा काम नहीं है, जिसके लिए Rocket Science की आवश्यकता हो, एक अच्छे कारखाने के लोग आ जाएं, इस काम में जुड़ सकते हैं।

मेरे पास manpower है, आपके पास पैसे हैं, मेरे पास talent है, आपके पास business का experience है, दोनों को मिलाकर के हम इस चीज को कर सकते हैं और 125 करोड़ लोगों की जिंदगी में बदलाव इन्हीं चीजों से आ सकता है। इन चीजों को लाने का प्रयास कर रहे हैं। हम Environment के लिए भी इतने ही conscious हैं। मैं जब गुजरात में मुख्यमंत्री था तो Gujarat Government was the fourth government in the world जिसका Climate Change का अपना अलग दृष्टिकोण था और हमने Climate Change को बहुत बढ़ावा दिया था। मैं जब गुजरात में था, हमारे देश की 80 प्रतिशत कपड़ा उत्पादन जिस राज्य में होता है .. मैं जिस राज्य में मुख्यमंत्री था, मैं होता था। मैंने हर उस काम पर बल दिया, हर एक काम Environment को ध्यान में रखते हुए किया।

गंगा की सफाई का काम उठाया है। 2500 Kilometre लंबी गंगा भारत की 30% जनसंख्या को प्रभावित करती है। 30-40% जनसंख्या, Probably उसका जीवन उससे जुड़ा है, उनके गांवों का आर्थिक आधार उससे जुड़ा है, पूरा हमारा agriculture sector गंगा के आधार पर चला हुआ है। North belt में, उत्तराखंड हो, उत्तरप्रदेश हो, बिहार हो, पश्चिम बंगाल हो ये सारा इलाका ऐसा है, जहां गरीबी के साथ लड़ाई लड़ना हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता है। उस काम को लेकर के हम आगे बढ़े हैं और गंगा की सफाई तो होगी, environment का protection होगा लेकिन at the same time वो वहां के गरीब लोगों की economy को generate करने का एक बहुत बड़ा आधार बनने वाला है और मैं गंगा की सफाई के लिए एक बड़ा जनांदोलन खड़ा करने वाला हूं।

विश्व भर में जो Environmentalist लोग हैं, उन्हें भी मैं निमंत्रण देने वाला हूं। मैं जो गंगा के प्रति आस्था रखने वाले लोग हैं, उनको भी निमंत्रण देने वाला हूं। लेकिन जो काम, कठिन से कठिन काम है उसमें भी Environment Friendly Development कैसे हो? उस पर भी हम बल दे रहे हैं। तो एक प्रकार से आर्थिक विकास, पर्यावरण की चिंता और नौजवानों की Skill Development की बात, रोजगार की संभावनाओं को बढ़ाने का प्रयास, Governance में सुधार लाना, Effective Governance की दिशा में प्रयास करना इन सारी बातों को लेकर के हम चल रहे हैं।

लेकिन उनके साथ-साथ आज दुनिया में कोई देश अपनी मनमर्जी से नहीं चल सकता है, विश्व बदल चुका है, हमें वैश्विक प्रवाहों के बीच रहना है, वैश्विक प्रवाहों के साथ संतुलन बनाकर रहना है, वैश्विक प्रवाहों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना है। कोई देश अपनी मनमर्जी का मालिक नहीं रह सकता है और भारत को drive करने वाली जो philosophy है और आखिरकर जो देश philosophy के प्रकाश में चलते हैं वो लंबे अर्से तक sustain करते हैं, जो ideology के प्रवाह में चलते हैं, वे कभी न कभी लुढ़क जाते हैं। Ideology की सीमा होती है जबकि philosophy असीम होती है और इसलिए भारत की जो philosophy है, "वसुधैव कुटुंबकम्" की जो Philosophy है, उसी philosophy को लेकर के हम चलने वाले लोग हैं और इसके आधार पर जब आगे बढ़ना चाहते हैं तब हमारे पड़ोसी देशों के साथ हम मैत्री चाहते हैं।

भारत में कई प्रधानमंत्री के शपथ समारोह हुए लेकिन, मैं ऐसा पहला प्रधानमंत्री था जिसके शपथ ग्रहण समारोह में जिसमें SAARC देशों के सभी प्रमुख मौजूद थे। SAARC देशों को हमने निमंत्रित किया था, मेरे इतने कम समय में आते ही हमारे पड़ोसी देशों की मुलाकात थी। नेपाल हमारे देश से 17 साल से कोई गया ही नहीं था। मैं नेपाल गया, भूटान गया, मैं अपने पड़ोसी देशों से दोस्ती बनाने में लगा हुआ हूं और मैं मानता हूं, हम सब मिलकर के एक-दूसरे के दुख बांटे।

अभी हमारे यहां जम्मू-कश्मीर में बाढ़ आई, काफी लोगों का नुकसान हो गया लेकिन उस बाढ़ का प्रकोप POK में भी था तो मैंने पाकिस्तान को publicly कहा था कि हम कश्मीर में मदद कर रहे हैं उधर की तरफ भी, सीमा पार लोग परेशान हैं, हम मानवता के आधार पर उनकी मदद करना चाहते हैं। इस भूमिका से ही दुनिया में जिया जा सकता है। दोस्ती जितनी सघन होगी उतनी ही सुविधा बढ़ेगी, यह हमारा मत रहा है। मैंने announce किया है कि हम एक SAARC Satellite उपग्रह तैयार करेंगे, मैंने हमारे scientists को already यह काम दे दिया है। उन SAARC Satellite के माध्यम से, हमारे जो SAARC देश हैं उनके education में, health में, weather prediction में मुफ्त में ये गरीब देशों को, हमारे साथी देशों को मदद करेगा। तो एक SAARC Satellite की कल्पना भी हमने की है। तो हम ऐसे initiatives ले रहे हैं ताकि हमारे साथी सभी SAARC देश मिलकर के आगे बढ़ें और दुनिया में गरीबी उन्मूलन की जो प्रथा चल रही है, उसमें भी हम कुछ योगदान दे सकें।

हमारे पास चीन भी हमारे पड़ोस में है, सारी दुनिया मानती है कि 21वीं सदी एशिया की सदी है। कुछ लोग मानते हैं हिंदुस्तान की है, कुछ लोग मानते हैं एशिया की है, कुछ लोग मानते हैं चीन की है लेकिन इसमें कोई दुविधा नहीं है कि 21वीं सदी किसकी है। सबको मालूम है कि यह या तो हिंदुस्तान की है या चीन की है।

लेकिन, इस विषय में मैं पूरे विश्व को हिंदुस्तान से एक benefit है। तीन चीजें हमारे पास हैं, जो दुनिया के पास नहीं है। दुनिया के किसी देश के पास ये तीन चीजें एक साथ नहीं हैं। किसी के पास एक होगी, किसी के पास दो होगी लेकिन किसी के पास एक साथ तीन चीजें नहीं होगी। ये हैं, Democracy, Demographic Dividend, Demand, ये तीनों चीजें हमारे पास हैं, लोकतंत्र के विषय में, सबसे पुराना लोकतंत्र अमेरिका गर्व कर सकता है, विशाल लोकतंत्र के नाते भारत इसका गर्व कर सकता है। Demographic Dividend 65% population 35 के नीचे है और Demand 125 करोड़ लोगों का देश कितनी बड़ी Demand है। ऐसी संभावनाओं वाला कोई एक देश नहीं है और इसलिए संभावनाएं सबसे ज्यादा है कि भारत बड़े सामर्थ्य के साथ खड़ा होगा और विश्व के कल्याण के काम, भारत आएगा, इसमें कोई शक की बात नहीं है।

मैंने पिछले दिनों में, आने के बाद, इसी एक महीने में, सितंबर में ही मैं, जापान हो आया, मैं ऑस्ट्रेलिया से मिल लिया, चीन से मिल लिया और आज अमेरिका से मिल लूंगा और UN में भी, सभी बड़े-बड़े महापुरुषों से मिलना हो गया, इतनी तेजी से वैश्विक फलक पर काम करने का काम भारत ने आरंभ किया है और हम पूर्ण विश्वास के साथ कह सकते हैं कि हमें मिल-जुलकर रहना होगा, कंधे से कंधा मिलाकर रहना होगा, कठिनाइयों के बीच भी संवाद और सहअस्तित्व को स्वीकार करके चलना होगा। हम कठिनाइयों का रोना-रונה बैठते हैं तो हम आगे नहीं बढ़ सकते। जैसे चीन है, चीन के विवाद आज भी हैं, उसके बावजूद हमने चीन के साथ अपने व्यापारिक संबंधों को और बढ़ाया है, हमने राजनीतिक संबंधों को और बढ़ाया है।

हमारी कोशिश है, एक संकट जिसको लेकर के सारी दुनिया परेशान है, भारत 40 साल से परेशान है वो है Terrorism। Terrorism के संकट को बड़ी गंभीरता से लेने की आवश्यकता है और मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि दुनिया के बहुत देश वो Terrorism के घिनौने रूप को कभी समझ नहीं पाए। मेरा अपना अनुभव बताता है, मैं 1993 के कालखंड में यहां के State Department में आया था, मैं बात करता था और भारत के Terrorism की चर्चा करता था तो State Department के लोग मुझे समझा रहे थे कि ये तो आपका Law and Order problem है। मैं उनका समझा रहा था, लेकिन वो कह रहे थे कि Law and Order problem है। वो कहते थे, आपको सरकार ठीक चलाना आता नहीं है, आपको अनुभव नहीं है। इसके बाद मैं उनको समझाता रहा हमारा 15 मिनट का समय तय हुआ था, लेकिन डेढ़ घंटे तक बात चलती रही लेकिन मैं उन्हें समझा नहीं पाया।

लेकिन जब मैं 1993 में आया, उन्होंने सामने से मुझे कहा, आईए; आपके साथ बैठेंगे, बात करेंगे तो मैं फिर से State Department में गया और इस बार वो मुझे समझा रहे थे कि Terrorism क्या होता है? वो इसलिए समझा रहे थे क्योंकि उस समय यहां Trade Centre पर बम फूट चूका था यानी जब तक हमारे ऊपर बम विस्फोट नहीं होता तब तक हमें Terrorism का पता नहीं लगता। दुनिया Terrorism से बहुत परेशान है, हमने 40 साल तक इसे भुगता है। Terrorism की कोई सीमा नहीं होती, न उसका कोई देश होता, वो कब किस देश में जाकर के आ धमकेगा, उसका अनुमान लगाना कठिन है। एक ऐसी विकृति है जिसकी हम कल्पना नहीं कर सकते हैं, आप कल्पना कर सकते हैं, टीवी पर जब हम देखें किसी Journalist का गला काटा जा रहा है, यह 21वीं शताब्दी की मानव सभ्यता के साथ कितना घिनौना काम है ये, कितनी बड़ी चुनौती है ये, किसी को भी हिला देने वाली चुनौती है ये और जब तक हमारी मानवता जगती नहीं है, राजनीतिक प्लस-माइनस के हिसाब से Terrorism का इंसाफ नहीं हो सकता।

Terrorism ये मानवता का दुश्मन है और जो भी मानवता में विश्वास करते हैं, उन सबको इकट्ठा होने की आवश्यकता है। देश की जाति, बिरादरी, धर्म, संप्रदाय सबसे ऊपर उठकर के मानवता में विश्वास करने वाले लोगों का एकत्र आना बहुत

जरूरी है और तभी जाकर के हम Terrorism को चुनौती दे सकते हैं और इसलिए Terrorism को देने के लिए साधन कुछ भी हो, रास्ता यही एकमात्र है, इसी रास्ते पर चलना पड़ेगा। दुनिया को यही आह्वान होना चाहिए, आइए; मानवतावाद में विश्वास रखने वाले हम साथ चलेंगे। Terrorism को हम अलग-अलग तराजू में नहीं तौल सकते Good Terrorism और Bad Terrorism ऐसा नहीं कर सकते। मुझे पसंद न आने वाले देश में Terrorism है तो चलता है, चलने दो, आंख बंद करने दो, मुझे पसंद न आने वाले देश में Terrorism चलता है, ऐसा है तो अच्छा है, ऐसे नहीं चल सकता। Terrorism, Terrorism होता है उसको Good Terrorism और Bad Terrorism में कैद कर दिया तो वो Terrorist उसका सबसे ज्यादा फायदा उठाएंगे।

आज जो पश्चिम एशिया का हाल देख रहे हैं। संपत्ति की कमी नहीं थी, धन की वर्षा हो रही थी, पिछले तीन दशक में आर्थिक समृद्धि पश्चिम एशिया तेज गति से आगे बढ़ा है। लेकिन क्या हालत आकर के खड़ी रह गई और इसलिए मानवता के दुश्मन की जो ये गतिविधि है, उसके खिलाफ विश्व को एक आवाज बनकर के कंधे से कंधा मिलाकर के लड़ाई लड़नी पड़ेगी और तब जाकर के हम मानवता की रक्षा कर पाएंगे।

मानवता आखिरकर तत्व ज्ञान के आदर्शों पर चलती है, जिसके आधार पर हम सब के कल्याण की कल्पना कर सकते हैं, तो हम सबके कल्याण की कल्पना करते हैं, हम उस परंपरा और Philosophy की बात कर रहा था, हम वो लोग हैं जिन्होंने वेदकाल से मंत्र सीखा था। “सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्॥” हम उस परंपरा से निकले हुए लोग हैं, जिसमें हम चाहते हैं सब सुखी हों, सब शारीरिक रूप से स्वस्थ हों, सब prosperous हों, ये Philosophy लेकर के हम बड़े हुए हैं सिर्फ भारत में रहने वाले लोग सुखी हों, ऐसी कल्पना भारत की नहीं है और इसलिए विश्व कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करने वाले लोग हैं, उस विचार को लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं।

भारत बहुत तेजी से आगे बढ़ेगा, ये मेरा विश्वास है, हम Tourism को बढ़ावा दे रहे हैं। मैं भी आप सबको निमंत्रित करता हूँ, आइए; भारत देखने जैसा देश है और मेरा तो ये मंत्र रहा है “Tourism Unites and Terrorism Divides”। इसलिए हम मिले-जुले, जाएं, दुनिया देखें, जितना ज्यादा उसको करेंगे, उतना ज्यादा लाभ मिलेगा।

मुझे आप सबके बीच आने का अवसर मिला, मैं आप सबका आभारी हूँ।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

अमित कुमार/ हरीश जैन / मुस्तकीम खान

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

27-सितम्बर-2014 10:25 IST

संयुक्त राष्ट्र महासभा के 69वें सत्र की समान्य चर्चा के दौरान, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए भाषण का मूल पाठ

विशिष्ट अतिथिगण और मित्रों

सर्वप्रथम मैं संयुक्त राष्ट्र महासभा के 69वें सत्र के अध्यक्ष चुने जाने पर आपको हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। भारत के प्रधानमंत्री के रूप में पहली बार आप सबको संबोधित करना मेरे लिए अत्यंत सम्मान की बात है। मैं भारतवासियों की आशाओं एवं अपेक्षाओं से अभिभूत हूं। उसी प्रकार मुझे इस बात का पूरा भान है कि विश्व को 1.25 बिलियन लोगों से क्या अपेक्षाएं हैं। भारत वह देश है, जहां मानवता का छठवां हिस्सा आबाद है। भारत ऐसे व्यापक पैमाने पर आर्थिक व सामाजिक बदलाव से गुजर रहा है, जिसका उदाहरण इतिहास में दुर्लभ है।

प्रत्येक राष्ट्र की, विश्व की अवधारणा उसकी सभ्यता एवं धार्मिक परंपरा के आधार पर निरूपित होती है। भारत चिरंतन विवेक समस्त विश्व को एक कुटुंब के रूप में देखता है। और जब मैं यह बात कहता हूं तो मैं यह साफ करता हूं कि हर देश की अपनी एक philosophy होती है। मैं ideology के संबंध में नहीं कह रहा हूं। और देश उस फिलोस्फी की प्रेरणा से आगे बढ़ता है। भारत एक देश है, जिसकी वेदकाल से वसुधैव कुटुम्बकम् परंपरा रही है। भारत एक देश है, जहां प्रकृति के साथ संवाद, प्रकृति के साथ कभी संघर्ष नहीं ये भारत के जीवन का हिस्सा है और इसका कारण उस philosophy के तहत, भारत उस जीवन दर्शन के तहत, आगे बढ़ता रहता है। प्रत्येक राष्ट्र की, विश्व अवधारणा उसकी सभ्यता और उसकी दार्शनिक परंपरा के आधार पर निरूपित होती है। भारत का चिरंतन विवेक समस्त विश्व को, जैसा मैंने कहा - वसुधैव कुटुम्बकम् - एक कुटुम्ब के रूप में देखता है। भारत एक ऐसा राष्ट्र है, जो केवल अपने लिए नहीं, बल्कि विश्व पर्यंत न्याय, गरिमा, अवसर और समृद्धि के हक में आवाज उठाता रहा है। अपनी विचारधारा के कारण हमारा multi-literalism में दृढ़ विश्वास है।

आज यहां खड़े होकर मैं इस महासभा पर एक टिकी हुई आशाओं एवं अपेक्षाओं के प्रति पूर्णतया सजग हूं। जिस पवित्र विश्वास ने हमें एकजुट किया है, मैं उससे अत्यंत प्रभावित हूं। बड़े महान सिद्धांतों और दृष्टिकोण के आधार पर हमने इस संस्था की स्थापना की थी। इस विश्वास के आधार पर कि अगर हमारे भविष्य जुड़े हुए हैं तो शांति, सुरक्षा, मानवाधिकार और वैश्विक आर्थिक विकास के लिए हमें साथ मिल कर काम करना होगा। तब हम 51 देश थे और आज 193 देश के झंडे इस बिल्डिंग पर लहरा रहे हैं। हर नया देश इसी विश्वास और उम्मीद के आधार पर यहां प्रवेश करता है। हम पिछले 7 दशकों में बहुत कुछ हासिल कर सके हैं। कई लड़ाइयों को समाप्त किया है। शांति कायम रखी है। कई जगह आर्थिक विकास में मदद की है। गरीब बच्चों के भविष्य को बनाने में मदद दी है। भुखमरी हटाने में योगदान दिया है। और इस धरती को बचाने के लिए भी हम सब साथ मिल कर के जुटे हुए हैं।

69 UN Peacekeeping मिशन में विश्व में blue helmet को शांति के एक रंग की एक पहचान दी है। आज समस्त विश्व में लोकतंत्र की एक लहर है।

अफगानिस्तान में शांतिपूर्वक राजनीतिक परिवर्तन यह भी दिखलाता है कि अफगान जनता की शांति की कामना हिंसा पर विजय अवश्य पाएगी। नेपाल युद्ध से शांति और लोकतंत्र की ओर आगे बढ़ा है। भूटान के नए लोकतंत्र में एक नई ताकत नजर आ रही है। पश्चिम एशिया एवं उत्तर अफ्रीका में लोकतंत्र के पक्ष में आवाज उठाए जाने के प्रयास हो रहे हैं। Tunisia की सफलता दिखा रही है कि लोकतंत्र की ये यात्रा संभव है।

अफ्रीका में स्थिरता, शांति और प्रगति हेतु एक नई ऊर्जा एवं जागृति दिखायी दे रही है।

हमें एशिया और उसके पूरे अभूतपूर्व समृद्धि का अभ्युदय देखा है। जिसके आधार में शांति एवं स्थिरता की शक्ति समाहित है। अपार संभावनाओं से समृद्ध महादेश लैटिन अमेरिका स्थिरता एवं समृद्धि के साझा प्रयास में एकजुट हो रहा है। यह महादेश विश्व समुदायों के लिए एक महत्वपूर्ण आधार स्तंभ सिद्ध हो सकता है।

भारत अपनी प्रगति के लिए एक शांतिपूर्ण एवं स्थिर अंतरराष्ट्रीय वातावरण की अपेक्षा करता है। हमारा भविष्य हमारे पड़ोस से जुड़ा हुआ है। इसी कारण मेरी सरकार ने पहले ही दिन से पड़ोसी देशों से मित्रता और सहयोग बढ़ाने पर पूरी प्राथमिकता दी है। और पाकिस्तान के प्रति भी मेरी यही नीति है। मैं पाकिस्तान से मित्रता और सहयोग बढ़ाने के लिए गंभीरता से शांतिपूर्ण वातावरण में बिना आतंक के साथ द्विपक्षीय वार्ता करना चाहते हूँ। लेकिन पाकिस्तान का भी यह दायित्व है कि उपयुक्त वातावरण बनाये और गंभीरता से द्विपक्षीय बातचीत के लिए सामने आये।

इसी मंच पर बात उठाने से समाधान के प्रयास कितने सफल होंगे, इस पर कड़ियों को शक है। आज हमें बाढ़ से पीड़ित कश्मीर में लोगों की सहायता देने पर ध्यान देना चाहिए, जो हमने भारत में बड़े पैमाने पर आयोजित किया है। इसके लिए सिर्फ भारत में कश्मीर, उसी का ख्याल रखने पर रुके नहीं हैं, हमने पाकिस्तान को भी कहा, क्योंकि उसके क्षेत्र में भी बाढ़ का असर था। हमने उनको कहा कि जिस प्रकार से हम कश्मीर में बाढ़ पीड़ितों की सेवा कर रहे हैं, हम पाकिस्तान में भी उन बाढ़ पीड़ितों की सेवा करने के लिए हमने सामने से प्रस्ताव रखा था।

हम विकासशील विश्व का हिस्सा हैं, लेकिन हम अपने सीमित संसाधनों को उन सभी के साथ साझा करने की छूट दें, जिन्हें इनकी नितांत आवश्यकता है।

दूसरी ओर आज विश्व बड़े स्तर के तनाव और उथल-पुथल की स्थितियों से गुजर रहा है। बड़े युद्ध नहीं हो रहे हैं, परंतु तनाव एवं संघर्ष भरपूर नजर आ रहा है, बहुतेरे हैं, शांति का अभाव है तथा भविष्य के प्रति अनिश्चितता है। आज भी व्यापक रूप से गरीबी फैली हुई है। एक होता हुआ एशिया प्रशांत क्षेत्र अभी भी समुद्र में अपनी सुरक्षा, जो कि इसके भविष्य के लिए आधारभूत महत्व रखती है, को लेकर बहुत चिंतित है।

यूरोप के सम्मुख नए वीजा विभाजन का खतरा मंडरा रहा है। पश्चिम एशिया में विभाजक रेखाएं और आतंकवाद बढ़ रहे हैं। हमारे अपने क्षेत्र में आतंकवादी स्थिरतावादी खतरे से जूझना जारी है। हम पिछले चार दशक से इस संकट को झेल रहे हैं। आतंकवाद चार नए नए रूप और नाम से प्रकट होता जा रहा है। इसके खतरे से छोटा या बड़ा, उत्तर में हो या दक्षिण में, पूरब में हो या पश्चिम में, कोई भी देश मुक्त नहीं है।

मुझे याद है, जब मैं 20 साल पहले विश्व के कुछ नेताओं से मिलता था और आतंकवाद की चर्चा करता था, तो उनके यह बात गले नहीं उतरती थी। वह कहते थे कि यह law and order problem है। लेकिन आज धीरे धीरे आज पूरा विश्व देख रहा है कि आज आतंकवाद किस प्रकार के फैलाव को पाता चला जा रहा है। परंतु क्या हम वाकई इन ताकतों से निपटने के लिए सम्मिलित रूप से ठोस अंतरराष्ट्रीय प्रयास कर रहे हैं और मैं मानता हूँ कि यह सवाल बहुत गंभीर है। आज भी कई देश आतंकवादियों को अपने क्षेत्र में पनाह दे रहे हैं और आतंकवादियों को अपनी नीति का उपकरण मानते हैं और जब good terrorism and bad terrorism, ये बातें सुनने को मिलती हैं, तब तो आतंकवाद के खिलाफ लड़ने की हमारी निष्ठाओं पर भी सवालिया निशान खड़े होते हैं।

पश्चिम एशिया में आतंकवाद पाश्विकता की वापसी तथा दूर एवं पास के क्षेत्र पर इसके प्रभाव को ध्यान में रखते हुए सम्मिलित कार्रवाई का स्वागत करते हैं। परंतु इसमें क्षेत्र के सभी देशों की भागीदारी और समर्थन अनिवार्य है। अगर हम terrorism से लड़ना चाहते हैं तो क्यों न सबकी भागीदारी हो, क्यों न सबका साथ हो और क्यों न उस बात पर आग्रह भी किया जाए। sea, space एवं cyber space साझा समृद्धि के साथ-साथ संघर्ष के रंगमंच भी बने हैं। जो समुद्र हमें जोड़ता था, उसी समुद्र से आज टकराव की खबरें शुरू हो रही हैं। जो स्पेस हमारी सिद्धियों का एक अवसर बनता था, जो सायबर हमें जोड़ता था, आज इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में नए संकट नजर आ रहे हैं।

उस अंतरराष्ट्रीय एकजुटता की, जिसके आधार पर संयुक्त राष्ट्र की स्थापना हुई, जितनी आवश्यकता आज है, उतनी पहले कभी नहीं थी। आज अब हम interdependence world कहते हैं तो क्या हमारी आपसी एकता बढ़ी है। हमें सोचने की जरूरत है। क्या कारण है कि UN जैसा इतना अच्छा प्लेटफार्म हमारे पास होने के बाद भी अनेक जी समूह बनाते चले गए हम। कभी G 4 होगा, कभी G 7 होगा, कभी G 20 होगा। हम बदलते रहते हैं और हम चाहें या न चाहें, हम भी उन समूहों में जुड़े हैं। भारत भी उसमें जुड़ा है।

लेकिन क्या आवश्यकता नहीं है कि हम G 1 से आगे बढ़ कर के G-A11 की तरफ कदम उठाएं। और जब UN अपने 70 वर्ष मनाने जा रहा है, तब ये G-A11 का atmosphere कैसे बनेगा। फिर एक बार यही मंच हमारी समस्याओं के समाधान का अवसर कैसे बन सके। इसकी विश्वसनीयता कैसे बढ़े, इसका सामर्थ्य कैसे बढ़े, तभी जा कर के यहां हम संयुक्त बात करते हैं। लेकिन टुकड़ों में बिखर जाते हैं, उसमें हम बच सकते हैं, एक तरफ तो हम यह कहते हैं कि हमारी नीतियां

परस्पर जुड़ी हुई हैं और दूसरी तरफ हम जीरो संघ के नजरिये से सोचते हैं। अगर उसे लाभ होता है तो मेरी हानि होती है, कौन किसके लाभ में है, कौन किसके हानि में है, यह भी मानदंड के आधार पर हम आगे बढ़ते हैं।

निराशावादी या आलोचनावादी की तरह कुछ भी नहीं बदलने वाला है। एक बहुत बड़ा वर्ग है, जिसके मन में है कि छोड़ो यार, कुछ नहीं बदलने वाला है, अब कुछ होने वाला नहीं है। ये जो निराशावादी और आलोचनावादी माहौल है, यह कहना आसान है। परंतु अगर हम ऐसा करते हैं तो हम अपनी जिम्मेदारियों से भागने का जोखिम उठा रहे हैं। हम अपने सामूहिक भविष्य को खतरे में डाल रहे हैं। आइए, हम अपने समय की मांग के अनुरूप अपने आप को ढालें। हम वक्त की शांति के लिए कार्य करें।

कोई एक देश या कुछ देशों का समूह विश्व की धारा को तय नहीं कर सकता है। वास्तविक अन्तरराज्यीय होना, यह समय की मांग है और यह अनिवार्य है। हमें देशों के बीच सार्थक संवाद एवं सहयोग सुनिश्चित करना है। हमारे प्रयासों का प्रारंभ यहीं संयुक्त राष्ट्र में होना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार लाना, इसे अधिक जनतांत्रिक और भागीदारी परक बनाना हमारे लिए अनिवार्य है।

20वीं सदी की अनिवार्यताओं को प्रतिविदित करने वाली संस्थाएं 21वीं सदी में प्रभावी सिद्ध नहीं होंगी। इनके सम्मुख अप्रासंगिक होने का खतरा प्रस्तुत होगा, और भी आग्रह से कहना चाहता हूं कि पिछली शताब्दी के आवश्यकताओं के अनुसार जिन बातों पर हमने बल दिया, जिन नीति-नियमों का निर्धारण किया वह अभी प्रासंगिक नहीं है। 21वीं सदी में विश्व काफी बदल चुका है, बदल रहा है और बदलने की गति भी बड़ी तेज है। ऐसे समय यह अनिवार्य हो जाता है कि समय के साथ हम अपने आप को ढालें। हम परिवर्तन करें, हम नए विचारों पर बल दें। अगर ये हम कर पायेंगे तभी जाकर के हमारा relevance रहेगा। हमें अपने सभी मतभेदों को दरकिनार कर आतंकवाद से लड़ने के लिए सम्मिलित अंतरराष्ट्रीय प्रयास करना चाहिए।

मैं आपसे यह अनुरोध करता हूं कि इस प्रयास के प्रतीक के रूप में आप comprehensive convention on international terrorism को पारित करें। यह बहुत लंबे अरसे से pending mark है। इस पर बल देने की आवश्यकता है। terrorism के खिलाफ लड़ने की हमारी ताकत का वो एक परिचायक होगा और इसे हमारा देश, जो terrorism से इतने संकटों से गुजरा है, उसको समय लगता है कि जब तक वे इसमें initiative नहीं लेता है, और जब तक हम comprehensive convention on international terrorism को पारित नहीं करते हैं, हम वो विश्वास नहीं दिला सकते हैं। और इसलिए, फिर एक बार भारत की तरफ से इस सम्माननीय सभा के समक्ष बहुत आग्रहपूर्वक मैं अपनी बात बताना चाहता हूं। हमें outer space और cyber space में शांति, स्थिरता एवं व्यवस्था सुनिश्चित करनी होगी। हमें मिलजुल कर काम करते हुए यह सुनिश्चित करना है कि सभी देश अंतरराष्ट्रीय नियमों, मानदंडों का पालन करें। हमें UN Peace Keeping के पुनित कार्यों को पूरी शक्ति प्रदान करनी चाहिए।

जो देश अपनी सैन्य टुकड़ियों को योगदान करते हैं, उन्हें निर्णय प्रक्रिया में शामिल करना चाहिए। निर्णय प्रक्रिया में शामिल करने से उनका हौसला बुलंद होगा। वो बहुत बड़ी मात्रा में त्याग करने को तैयार है; बलिदान देने को तैयार है, अपनी शक्ति और समय खर्च करने को तैयार हैं, लेकिन अगर हम उन्हें ही निर्णय प्रक्रिया से बाहर रखेंगे तो कब तक हम UN Peace Keeping फोर्स को प्राणवान बना सकते हैं, ताकतवर बना सकते हैं। इस पर गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है।

आइए, हर सार्वभौमिक वैश्विक रिसेसिकरण एवं प्रसार हेतु अपने प्रयासों में दोगुनी शक्ति लगाएं। अपेक्षाकृत अधिक स्थिर तथा समावेशी विकास हेतु निरंतर प्रयासरत रहें। वैश्विकरण ने विकास के नए ध्रुवों, नए उद्योगों और रोजगार के नए स्रोतों को जन्म दिया है। लेकिन साथ ही अरबों लोग गरीबी और अभाव के अर्द्धकगार पर जी रहे हैं। कई देश ऐसे हैं, जो विश्वव्यापी आर्थिक तूफान के प्रभाव से बड़ी मुश्किल से बच पा रहे हैं। लेकिन इन सब में बदलाव लाना जितना मुमकिन आज लग रहा है, उतना पहले कभी नहीं लगता था।

Technology ने बहुत कुछ संभव कर दिखाया है। इसे मुहैया करने में होने वाले खर्च में भी काफी कमी आई है। यदि आप सारी दुनिया में Facebook और Twitter के प्रसार की गति के बारे में, सेलफोन के प्रसार की गति के बारे में सोचते हैं तो आपको यह विश्वास करना चाहिए कि विकास और सशक्तिकरण का प्रसार भी कितनी तेज गति से संभव है।

जाहिर है, प्रत्येक देश को अपने राष्ट्रीय उपाय करने होंगे, प्रगति व विकास को बल देने हेतु प्रत्येक सरकार को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। साथ ही हमारे लिए एक स्तर पर एक सार्थक अंतराष्ट्रीय भागीदारी की आवश्यकता है, जिसका अर्थ हुआ, नीतियों को आप बेहतर समन्वय करें ताकि हमारे प्रयत्न, परस्पर संयोग को बढ़ावा दे तथा दूसरे को क्षति न

पहुंचाये। ये उसकी पहली शर्त है कि दूसरे को क्षति न पहुंचाएं। इसका यह भी अर्थ है कि जब हम अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक संबंधों की रचना करते हैं तो हमें एक दूसरे की चिंताओं व हितों का ध्यान रखना चाहिए।

जब हम विश्व के अभाव के स्तर के विषय में सोचते हैं, आज basic sanitation 2.5 बिलियन लोगों के पहुंच के बाहर है। आज 1.3 बिलियन लोगों को बिजली उपलब्ध नहीं है और आज 1.1 बिलियन लोगों को पीने का शुद्ध पानी उपलब्ध नहीं है। तब स्पष्ट होता है कि अधिक व्यापक व संगठित रूप से अंतरराष्ट्रीय कार्यवाही करने की प्रबल आवश्यकता है। हम केवल आर्थिक वृद्धि के लिए इंतजार नहीं कर सकते। भारत में मेरे विकास का एजेंडा के सबसे महत्वपूर्ण पहलू इन्हीं मुद्दों पर केंद्रित हैं।

मैं यह मानता हूं कि हमें post 2015 development agenda में इन्हीं बातों को केन्द्र में रखना चाहिए और उन पर ध्यान देना चाहिए। रहने लायक तथा टिकाऊ sustainable विश्व की कामना के साथ हम काम करें। इन मुद्दों पर ढेर सारे विवाद एवं दस्तावेज उपलब्ध हैं। लेकिन हम अपने चारों ओर ऐसी कई चीजें देखते हैं, जिनके कारण हमें चिंतित व आगाह हो जाना चाहिए। ऐसी भी चीजें हैं जिन्हें देखने से हम चिंतित होते जा रहे हैं। जंगल, पशु-पक्षी, निर्मल नदियां, जज़ीरे और नीला आसमान।

मैं तीन बातें कहना चाहूंगा, पहली बात, हमें चुनौतियों से निपटने के लिए अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में ईमानदारी बरतनी चाहिए। विश्व समुदाय ने सामूहिक कार्यवाही के सुंदर संतुलन को स्वीकारा है, जिसका स्वरूप common व differentiated responsibilities। इसे सतत कार्यवाही का आधार बनाना होगा। इसका यह भी अर्थ है कि विकसित देशों को funding और technology transfer की अपनी प्रतिबद्धता को अवश्य पूरा करना चाहिए।

दूसरी बात, राष्ट्रीय कार्यवाही अनिवार्य है। टेक्नोलोजी ने बहुत कुछ संभव कर दिया है, जैसे नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकी। आवश्यकता है तो सृजनशीलता व प्रतिबद्धता की। भारत अपनी टेक्नोलोजी क्षमता को साझा करने के लिए तैयार है। जैसा कि हमने हाल ही में सार्क देशों के लिए एक निःशुल्क उपग्रह बनाने की घोषणा की है।

तीसरी बात हमें अपनी जीवनशैली बदलने की आवश्यकता है। जिस ऊर्जा का उपयोग न हुआ हो, वह सबसे साफ ऊर्जा है। इससे आर्थिक नुकसान नहीं होगा। अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा मिलेगी।

हमारे भारतवर्ष में प्रकृति के प्रति आदरभाव अध्यात्म का अभिन्न अंग है। हम प्रकृति की देन को पवित्र मानते हैं और मैं आज एक और विषय पर भी ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि हम climate change की बात करते हैं। हम होलिस्टिक हेल्थ केयर की बात करते हैं। जब हम back to basic की बात करते हैं तब मैं उस विषय पर विशेष रूप से आप से एक बात कहना चाहता हूं। योग हमारी पुरातन पारम्परिक अमूल्य देन है। योग मन व शरीर, विचार व कर्म, संयम व उपलब्धि की एकात्मकता का तथा मानव व प्रकृति के बीच सामंजस्य का मूर्त रूप है। यह स्वास्थ्य व कल्याण का समग्र दृष्टिकोण है। योग केवल व्यायाम भर न होकर अपने आप से तथा विश्व व प्रकृति के साथ तादम्य को प्राप्त करने का माध्यम है। यह हमारी जीवन शैली में परिवर्तन लाकर तथा हम में जागरूकता उत्पन्न करके जलवायु परिवर्तन से लड़ने में सहायक हो सकता है। आइए हम एक "अंतरराष्ट्रीय योग दिवस" को आरंभ करने की दिशा में कार्य करें। अंततः हम सब एक ऐतिहासिक क्षण से गुजर रहे हैं। प्रत्येक युग अपनी विशेषताओं से परिभाषित होता है। प्रत्येक पीढ़ी इस बात से याद की जाती है कि उसने अपनी चुनौतियों का किस प्रकार सामना किया। अब हमारे सम्मुख चुनौतियों के सामने खड़े होने की जिम्मेदारी है। अगले वर्ष हम 70 वर्ष के हो जाएंगे। हमें अपने आप से पूछना होगा कि क्या हम तब तक प्रतीक्षा करें तब हम 80 या 100 के हो जाएं। मैं मानता हूं कि UN के लिए अगला साल एक opportunity है। जब हम 70 साल की यात्रा के बाद लेखाजोखा लें, कहां से निकले थे, क्यों निकले थे, क्या मकसद था, क्या रास्ता था, कहां पहुंचे हैं, कहां पहुंचना है।

21 सदी के कौन से प्रकार हैं, कौन से challenges हैं, उन सबको ध्यान में रखते हुए पूरा एक साल व्यापक विचार मंथन हो। हम universities को जोड़ें, नई generation को जोड़ें जो हमारे कार्यकाल का विगत से मूल्यांकन करे, उसका अध्ययन करे और हमें वो भी अपने विचार दें। हम नई पीढ़ी को हमारी नई यात्रा के लिए कैसे जोड़ सकते हैं और इसलिए मैं कहता हूं कि 70 साल अपने आप में एक बहुत बड़ा अवसर है। इस अवसर का उपयोग करें और उसे उपयोग करके एक नई चेतना के साथ नई प्राणशक्ति के साथ, नए उमंग और उत्साह के साथ, आपस में एक नए विश्वास साथ हम UN की यात्रा को हम नया रूप रंग दें। इस लिए मैं समझता हूं कि ये 70 वर्ष हमारे लिए बहुत बड़ा अवसर है।

आइए, हम संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार लाने के अपने वादे को निभाएं। यह बात लंबे अरसे से चल रही है लेकिन वादों को निभाने का सामर्थ्य हम खो चुके हैं। मैं आज फिर से आग्रह करता हूं कि आज इस विषय में गंभीरता से सोचें। आइए, हम अपने Post 2015 development agenda के लिए अपनी प्रतिबद्धता को पूरा करें।

आइए 2015 को हम विश्व की प्रगति प्रवाह को एक नया मोड़ देने वाले एक वर्ष के रूप में हम अविस्मरणीय बनायें और 2015 एक नितांत नई यात्रा के प्रस्थान बिंदु के रूप में मानव इतिहास में दर्ज हो। यह हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है। मुझे विश्वास है कि सामूहिक जिम्मेदारी को हम पूरी तरह निभाएंगे।

आप सबका बहुत बहुत आभार।

धन्यवाद। नमस्ते।

SC/AK

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

26-सितम्बर-2014 14:28 IST

वाल स्ट्रीट जर्नल में प्रकाशित प्रधानमंत्री के विचार लेख का मूल पाठ

वाल स्ट्रीट जर्नल में प्रकाशित प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विचार लेख का मूल पाठ इस प्रकार है:

भारत में बदलाव की आशाओं की लहर चल रही है। विशाल और विविधताओं के देश भारत में मई में सवा अरब भारतीयों ने स्पष्ट रूप से राजनैतिक स्थायित्व, सुशासन और तीव्र विकास के लिए अपना वोट दिया। पिछले 30 वर्षों में पहली बार देश के निचले सदन लोकसभा में किसी सरकार को बहुमत मिला और बहुमत की सरकार का गठन हुआ। भारत आशावाद तथा आत्मविश्वास से भरा हुआ युवा राष्ट्र है जिसमें 80 करोड़ लोगों की आयु 35 साल से कम है। इन युवा लोगों की ऊर्जा, उत्साह और उद्यमिता देश की सबसे बड़ी शक्ति है। मेरी सरकार का सबसे बड़ा मिशन इन्हीं गुणों का विकास करना है।

इस मिशन को पूरा करने के लिए हम गैर-जरूरी कानूनों और नियमों को समाप्त करेंगे तथा नौकरशाही की प्रक्रियाओं को आसान और छोटा बनाएंगे। हम यह सुनिश्चित करने का पूरा प्रयास करेंगे कि हमारी सरकार पारदर्शी, प्रभावी और जिम्मेदार बने। किसी विद्वान ने कहा है कि सही विचार उतना ही महत्वपूर्ण है जितना सही कार्य।

हम भारत में विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचागत संरचना तैयार करेंगे। देश में तेज विकास और लोगों की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इस संरचना की बेहद जरूरत है। हम देश के शहरों और गांवों को रहने लायक, टिकाऊ और स्मार्ट बनाएंगे। हम देश के गांवों को आर्थिक बदलाव को प्रोत्साहित करने का मुख्य केन्द्र बनाएंगे। भारत को वैश्विक विनिर्माण का नया प्रमुख केन्द्र बनाने के लिए 'मेक इन इंडिया' हमारी प्रतिबद्धता और सभी को हमारा निमंत्रण है। हम इस विचार को वास्तविक बनाने के यथासंभव प्रयास करेंगे।

हमने अपने चुनाव अभियान का केन्द्र समावेशी विकास को बनाया था। मेरे लिए इसके कई अर्थ हैं - कौशल शिक्षा, अवसर, सुरक्षा, आत्मसम्मान और समाज के प्रत्येक वर्ग खासकर महिलाओं के लिए अधिकार, प्रत्येक भारतीय के लिए बैंक खाता, सभी के लिए किफायती स्वास्थ्य सेवाएं, वर्ष 2019 तक सभी के लिए स्वच्छता, 2022 तक सभी के लिए मकान, हर घर के लिए बिजली और हर गांव से संपर्क। इन चुनौतियों को पूरा करने के लिए, मुझे आम भारतीय नागरिकों की अनगिनत आसाधारण कहानियों से विश्वास प्राप्त हुआ। यह कहानियां दशकों की भारत-यात्रा के दौरान मैंने देखी और सुनी।

मेरा विश्वास है कि प्रौद्योगिकी और नवोन्मेष की संभावना से, लोगों की पहुंच सुशासन, सशक्तिकरण, सामाजिक चुनौतियों के समाधान से लंबे समय तक दूर नहीं बना रह सकती। पिछले एक दशक में देश में मोबाइल फोन की संख्या 4 करोड़ से बढ़कर 90 करोड़ हो गई, हमारा देश स्मार्ट फोन का दूसरा सबसे बड़ा बाजार है और यह बाजार तेजी से बढ़ रहा है। मैं जब पिछले दो दशकों में दुनिया में हुए कंप्यूटर विकास और स्टोरेज क्षमता के बारे में सोचता हूं तो इस आत्मविश्वास से भर जाता हूं कि यह विकास नवीकरणीय ऊर्जा में भी संभव है। सौर और पवन के पारंपरिक संयंत्रों के निर्माण से भारत के हजारों गांवों को बिना लंबे समय तक इंतजार किए भरोसेमंद, किफायती और स्वच्छ ऊर्जा प्राप्त हो सकती है।

इसकी वजह से भारत की समृद्धि अधिक टिकाऊ और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बन सकती है। प्रकृति की उदारता की पूजा करते हुए समृद्ध बनने का यह मार्ग हमारी परंपरा से हमें प्राप्त हुआ है और यही मार्ग हमने चुना है।

भारत अंतर्राष्ट्रीय मित्रों के सहयोग से अपने स्वप्नों को प्राप्त करेगा। इतिहास बताता है कि हम हमेशा से विश्व के साथ जुड़कर रहे हैं। भारत व्यापार, विचार, अनुसंधान, नवाचार और पर्यटन के लिए विश्व से जुड़ने को तैयार है। आगामी महीनों में आप इस बदलाव को महसूस करेंगे कि अमरीका हमारा प्राकृतिक वैश्विक सहयोगी है। भारत और अमरीका अपने साझा मूल्यों की सार्वभौमिक प्रासंगिकता और स्थायी संसाधनों को मिलकर साकार रूप देते हैं। अमरीका में संपन्न भारतीय-अमरीकी समुदाय हमारी भागीदारी के लिए काफी महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ मेहनत का सम्मान और प्राकृतिक उद्योगों के अनुकूल माहौल बनाने की संभावनाएं पैदा करता है। सूचना प्रौद्योगिकी में हमारी मजबूती डिजिटल युग में नेतृत्व के लिए काफी ज्यादा महत्वपूर्ण है। हमारे व्यवसायों के बीच सहभागिता हमारी समान राजनीतिक व्यवस्था और कानून-

व्यवस्था के प्रति साझी वचनबद्धता की निश्चिता का स्थान लेती है। शिक्षा, नव प्रवर्तन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अमरीका लगातार भारत को प्रेरित कर रहा है।

भारत और अमरीका दोनों देशों की एक-दूसरे की सफलता, जैसे कि हमारे मूल्यों और कई साझा रुचियों में आधारभूत भागीदारी है। यह हमारी साझेदारी के लिए भी अति आवश्यक है। एशिया और महासागर क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और स्थिरता लाने में इसका अहम योगदान होगा। यह क्षेत्र आतंकवाद और उग्रवाद, समुद्रों, साइबर स्पेस और बाह्य स्पेस की सुरक्षा आदि का सामना करना कर रहे हैं, ये वे चीजें हैं, जिनका हमारे रोजाना के जीवन पर काफी गहरा प्रभाव पड़ता है।

भारत-अमरीका की पूरक मजबूती को पूरी दुनिया में लोगों की जिंदगी में बदलाव लाने और समावेशी एवं वृहद वैश्विक विकास के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है क्योंकि हमारे देशों के मूल्य और रुचियां एक ही पंक्ति में हैं, जबकि परिस्थितियां पूरी तरह से अलग हैं। हम एक तरह की अलग एवं अनोखी स्थिति में हैं, जहां हम अधिक एकीकृत और सहयोगात्मक विश्व के लिए एक सेतू की भूमिका में आ सकते हैं। एक-दूसरे के विचारों की संवेदनशीलता और हमारी दोस्ती के विश्वास के साथ, हम वर्तमान समय की वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए अधिक संगठित अंतरराष्ट्रीय प्रयासों का योगदान दे सकते हैं।

वैश्विक व्यवस्था में यह एक प्रवाह का क्षण है। मैं दोनों राष्ट्रों की किस्मत के प्रति विश्वस्त हूं, क्योंकि सही परिस्थितियों और मानव उत्साह को बढ़ाने के लिए बेहतर अवसर मुहैया कराने के चलते लोकतंत्र नवीनीकरण का सबसे महान स्रोत है।

विजयलक्ष्मी कासोटिया/एएम/डीपी/प्रवीन/एम -3946

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

18-सितम्बर-2014 19:27 IST

चीन के राष्ट्रपति श्री शी जिनपिंग के साथ प्रेस संबोधन के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा की गई टिप्पणी का मूल पाठ

राष्ट्रपति श्री जिनपिंग और मीडिया के सदस्य

- भारत में चीन के राष्ट्रपति का स्वागत करके मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मैं इस बात से खुश हूँ कि मेरी सरकार बनने के कुछ महीनों के अंदर वे भारत आए हैं।
- मैं चीन के साथ संबंधों को बहुत महत्व और प्राथमिकता देता हूँ। दोनों देशों की प्राचीन सभ्यताएँ हैं और हमारे संबंध भी उतने ही प्राचीन हैं। चीन हमारा सबसे बड़ा पड़ोसी है। भारत के राष्ट्र निर्माण और विदेश नीति में पड़ोस का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। आज हम दुनिया के दो सबसे बड़ी आबादी वाले सबसे बड़े विकासशील देश हैं। दोनों देश बड़े पैमाने पर आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन में जुटे हुए हैं।
- इसलिए यह जरूरी है कि इन संबंधों में आपसी विश्वास और भरोसा हो। एक-दूसरे की चिंताओं और संवेदनशीलता का आदर हो। संबंधों में और सीमा पर शांति एवं स्थिरता रहे। मित्रता और सहयोग हो। अगर यह रहे तो हम इन संबंधों की अपार क्षमताओं को पूरा कर सकते हैं।
- एक-दूसरे के विकास में योगदान दे सकेंगे। साथ ही साथ इस क्षेत्र में शांति, स्थिरता और समृद्धि को बढ़ा सकेंगे और विश्व अर्थव्यवस्था को नई दिशा और ऊर्जा दे सकेंगे।
- पिछले दो दिनों में अहमदाबाद और दिल्ली में हमें भारत और चीन के संबंधों में हर विषय पर बातचीत करने का मौका मिला। जैसे राजनीतिक और सुरक्षा के मुद्दे, आर्थिक संबंध और लोगों के बीच संपर्क।
- हमने तय किया है कि अपने आदान-प्रदान को हर स्तर पर बढ़ाएंगे। शिखर सम्मेलन का सिलसिला बनाए रखेंगे।
- हम दोनों का विचार है कि हमारे आर्थिक संबंध क्षमता से बहुत कम हैं। मैंने उनसे इस पर चिंता प्रकट की कि हमारे व्यापार (ट्रेड) की गति कम हुई है और व्यापार असंतुलन (ट्रेड इम्बैलेंस) भी बढ़ा है। मैंने उनसे अनुरोध किया है कि हमारी कंपनियों को चीन के बाजार में पहुंच (मार्केट एक्सेस) एवं निवेश के अवसर और आसान कराएँ। मुझे राष्ट्रपति श्री शी जिनपिंग ने आश्वासन दिया है कि इस विषय पर ठोस कदम उठाएंगे।
- साथ ही साथ मैंने भारत में, विशेषकर बुनियादी ढांचा (इन्फ्रास्ट्रक्चर) और मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र में निवेश के लिए आमंत्रित किया है। नई नीतियों और प्रशासनिक कदमों के बारे में उन्हें अवगत कराया है।
- मुझे प्रसन्नता है कि आज भारत में दो चीनी औद्योगिक पार्क बनाने का समझौता हुआ है और उन्होंने पांच साल में 20 अरब डॉलर के चीनी निवेश की प्रतिबद्धता (कमिटमेंट) भी व्यक्त की है। यह आर्थिक संबंधों का एक नया अध्याय है। रेलवे के क्षेत्र में हमने आज सहयोग के कुछ ठोस निर्णय लिए हैं। हम असैन्य नाभिकीय सहयोग (सिविल न्यूक्लियर को-ऑपरेशन) के लिए बातचीत शुरू करेंगे। यह हमारे ऊर्जा सहयोग को एक नए स्तर पर पहुंचा सकता है।
- मैं दोनों देशों की पंचवर्षीय आर्थिक एवं व्यापार विकास योजना को एक अहम कदम मानता हूँ और उसका स्वागत करता हूँ।
- आज हुए समझौतों और घोषणाएं यह दिखाते हैं कि अपनी साझेदारी को बढ़ाने में हम लोगों के बीच संपर्क और संस्कृति, पर्यटन एवं कला को केन्द्र बिंदु मानते हैं।

- मैं राष्ट्रपति श्री शी जिनपिंग का भारत के सभी लोगों की तरफ से इस बात का आभार प्रकट करता हूँ कि उन्होंने कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए नाथुला से एक नया रास्ता खोलने की अनुमति दी है। यह नया रास्ता उत्तराखण्ड के रास्ते के अतिरिक्त होगा। नाथुला के रास्ते से कई फायदे हैं। मोटर से कैलाश मानसरोवर तक यात्रा की जा सकती है। इससे विशेषकर बुजुर्ग तीर्थयात्रियों को लाभ होगा। तीर्थयात्रा कम समय में पूरी की जा सकेगी और अब भारत से बड़ी संख्या में तीर्थयात्री कैलाश मानसरोवर जा सकते हैं। कई मायनों में यह नया रास्ता बरसात के मौसम में सुरक्षित भी होगा।

- जहाँ हमने अपने संबंधों को बढ़ाने की बात कही है। हमने साथ ही साथ मित्रता की भावना से कुछ कठिन विषयों पर खुलकर बातचीत की है।

- मैंने सीमा पर जो घटनाएं हुई हैं उस पर चिंता प्रकट की है और कहा है कि इन्हें सुलझाना आवश्यक है। हम इस बात पर सहमत हैं कि सीमा क्षेत्र में शांति और स्थिरता हमारे आपसी विश्वास और संबंधों की नींव है। यह दो देशों की एक महत्वपूर्ण सहमति है और इसका दृढ़ता से पालन किया जाना चाहिए। हमें सीमा से जुड़े प्रश्न (बाउंड्री क्वेश्चन) को जल्दी हल करना चाहिए।

- हमारे सीमा संबंधी समझौते और विश्वास बढ़ाने के उपायों से फायदा हुआ है। परंतु मैंने यह भी सुझाव दिया है कि सीमा पर शांति और स्थिरता के लिए एलएसी को लेकर स्पष्टीकरण (क्लैरिफिकेशन) बहुत बड़ा योगदान दे सकता है। यह कई सालों से रुका हुआ है और इस कार्य को दोबारा शुरू करना चाहिए।

- मैंने चीन की वीजा नीति और सीमापार नदियों (ट्रांस बॉर्डर रिवर्स) पर हमारी चिंताएं प्रकट की क्योंकि मेरा मानना है कि इस तरह के विषयों का समाधान होने पर आपसी विश्वास और संबंध एक नए स्तर पर पहुंच जाएंगे।

- हमने क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर भी अच्छी बातचीत की है। इन विषयों पर अपने रणनीतिक विचार-विमर्श (स्ट्रेटेजिक डायलॉग) को मजबूत करने का निर्णय लिया है। एक शांतिपूर्ण और स्थिर क्षेत्र दोनों देशों के हित में है। इसमें एक शांतिपूर्ण, स्थिर और समृद्ध अफगानिस्तान भी आवश्यक है। आतंकवाद और अतिवाद के विरुद्ध हम अपना सहयोग बढ़ाएंगे। विश्व स्तर पर भी अपने साझा हितों पर सहयोग बढ़ाएंगे।

- क्षेत्रीय संपर्क (रीजनल कनेक्टिविटी) और इसके संदर्भ में बीसीआईएम आर्थिक कॉरिडोर पर भी बातचीत हुई। भारत एशिया के चौराहे पर है। मैं मानता हूँ कि एशिया के विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ने से एशिया की समृद्धि बढ़ेगी। लेकिन भौतिक संपर्क (फिजिकल कनेक्टिविटी) को बढ़ाने के लिए इस पूरे क्षेत्र में विश्वास, शांति, स्थिरता और सहयोग का माहौल बनाना भी जरूरी है।

- अंत में मैं कहना चाहूंगा कि भारत और चीन के लिए यह एक ऐतिहासिक अवसर है, जो अपार संभावनाओं से भरा हुआ है। हम अपने संबंधों के नए युग की शुरुआत कर सकते हैं। अगर हम अपने अवसरों को और चुनौतियों को पूरी तरह से ध्यान में रखें तो मुझे पूरा विश्वास है कि हम इसे सफल बनाने में अपने दायित्व पूरी तरह से निभा पाएंगे।

धन्यवाद।

एससी/वीएल/आरआर-3781

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

06-सितम्बर-2014 17:05 IST

ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री के साथ प्रतिनिधिमंडल स्तर की बातचीत के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा मीडिया को दिए गए वक्तव्य का मूल पाठ

माननीय प्रधानमंत्री टोनी एबोट,

मीडिया के मेरे मित्रों,

प्रधानमंत्री टोनी एबोट की भारत यात्रा पर उनका स्वागत करने में मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मेरी सरकार के वे पहली राजकीय यात्रा के माननीय अतिथि हैं। यह हमारा सौभाग्य है क्योंकि भारत ऑस्ट्रेलिया को बहुत महत्वपूर्ण साझेदार के रूप में देखता है और इन संबंधों को और गहरा बनाना चाहता है।

हम दोनों शांतिप्रिय लोकतांत्रिक देश हैं। दोनों देशों में विविधता है। हिन्द महासागर से हम दोनों जुड़े हुए हैं। भारत के विकास में ऑस्ट्रेलिया बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है, क्योंकि भारत संसाधनों की कमी महसूस करने वाला देश है और भारत की आवश्यकताएं बहुत हद तक ऑस्ट्रेलिया पूरी कर सकता है। ढांचागत और मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र में भी विशाल संभावनाएं हैं। आने वाले समय में भारत अत्यंत कुशल मानव संसाधन का बहुत बड़ा स्रोत बन सकता है।

शिक्षा, विज्ञान और कौशल विकास के क्षेत्रों में व्यापक सहयोग है। ऑस्ट्रेलिया में चार लाख से भी अधिक भारतीय समुदाय के निवासी हैं जो समाज में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं और दोनों देश के संबंधों को गहरा कर रहे हैं।

हिन्द महासागर क्षेत्र में और एशिया-प्रशांत में शांति और विकास को आगे बढ़ाना है, तो भारत और ऑस्ट्रेलिया को आपसी सहयोग को प्राथमिकता देनी होगी और अन्य देशों को इस काम में जोड़ने में नैतिक जिम्मेदारी लेनी होगी।

प्रधानमंत्री एबोट और मैंने इन सभी क्षेत्रों में अपने संबंधों को और गहरा करने के उपायों पर सार्थक बातचीत की है।

सबसे पहले 125 करोड़ भारतीयों की तरफ से मैं आभार प्रकट करता हूं कि उन्होंने भारत से चुरायी हुई दो प्राचीन मूर्तियों को स्वयं साथ लाकर भारत को वापस सौंपा है। जैसे ही उनकी सरकार को इन मूर्तियों के बारे में पता चला तो उन्होंने बहुत शीघ्रता से यह निर्णय लिया था। प्रधानमंत्री एबोट ने केवल हमारी संपत्ति का ही आदर नहीं किया है, बल्कि हमारी संस्कृति की ओर सम्मान की भावना प्रकट की है।

आज संपन्न हुआ असैन्य परमाणु ऊर्जा सहयोग करार एक ऐतिहासिक कदम है। यह हमारे आपसी विश्वास और भरोसे का बहुत बड़ा प्रमाण है। हमारे सहयोग में एक नए अध्याय का शुभारंभ करेगा। परमाणु ऊर्जा भारतीय अर्थव्यवस्था की कार्बन पदार्थों पर निर्भरता कम करेगी।

हम अपने राजनीतिक संवाद और रक्षा क्षेत्र में सहयोग और मजबूत करेंगे। इस क्षेत्र में हम ऑस्ट्रेलिया को एक महत्वपूर्ण पार्टनर मानते हैं। जनप्रतिनिधियों के बीच आदान-प्रदान भी बढ़ाएंगे।

1986 के बाद भारत का कोई प्रधानमंत्री ऑस्ट्रेलिया के दौरे पर नहीं गया है। मैं नवंबर में जी-20 शिखर सम्मेलन के बाद द्विपक्षीय दौरा करूंगा। हम दोनों का प्रयास रहेगा कि जब भी हो सके आपसी बातचीत का सिलसिला जारी रहे।

मंत्रियों और वरिष्ठ अधिकारियों के स्तर पर भी हम अपने संवाद को बढ़ाएंगे - राजनैतिक, आर्थिक और सुरक्षा क्षेत्र में। साथ ही साथ हम हिंद महासागर क्षेत्रीय सहयोग और पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन जैसे मंचों में अपने संवाद और सहयोग को गहरा बनाएंगे।

अगले साल हमारी पहली द्विपक्षीय सामुद्रिक अभ्यास होगी। आने वाले समय में हम इसे और आगे बढ़ाएंगे। हिंद

महासागर क्षेत्र में विभिन्न तरह से, जैसे मानवीय सहायता है, हम बहुत योगदान दे सकते हैं। हम प्रथम विश्वयुद्ध, जिसमें हमारे सैनिक कंधे से कंधा मिलाकर लड़े थे, के 100वें साल के अवसर पर आयोजित समारोह में भाग लेंगे।

आतंकवाद, साइबर खतरा और अन्य समस्याओं के खिलाफ भी हमारी साझेदारी बढ़ेगी। हमारे बीच व्यापार और निवेश संबंधों को और मजबूत करने की विशाल संभावनाएं मौजूद हैं। भारत की कंपनियां, जो ऑस्ट्रेलिया में निवेश करना चाहती हैं, उनको प्रधानमंत्री एबोट की सरकार ने सहायता दी है और उन्होंने मुझे आज आश्वासन दिया है कि निवेश निर्णयों को तेजी से संपन्न करेंगे। हम भारत में ढांचागत, उच्च प्रौद्योगिकी और अन्य क्षेत्रों में ऑस्ट्रेलियाई कंपनियों द्वारा निवेश का स्वागत करेंगे।

पिछले कुछ वर्षों में हमारे द्विपक्षीय व्यापार में कुछ कमी आ गई थी। हमने तय किया है कि हम जल्द से जल्द व्यापक आर्थिक भागीदारी करार (सीईसीए) को संपन्न करने का प्रयास करेंगे। मुझे खुशी है कि आज हम ऑस्ट्रेलिया-भारत रणनीतिक अनुसंधान फंड के लिए नए वित्त पोषण की घोषणा कर रहे हैं। इस कोष का उपयोग हम ऊर्जा, खाद्य, जल, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अनुसंधान परियोजनाओं के लिए करते हैं।

प्रधानमंत्री एबोट ने भारत में युवा ऑस्ट्रेलियाई छात्रों की पढ़ाई के लिए एक नए कोलंबो प्लान की घोषणा की है। युवाओं के आदान-प्रदान से आपसी समझ और मित्रता बढ़ेगी।

प्रधानमंत्री एबोट ने कौशल विकास जो मेरे लिए एक प्राथमिकता का विषय है, में हमारे सहयोग को एक नए स्तर पर ले जाने का आश्वासन दिया है। हमने यह भी निर्णय लिया है कि शिक्षा के क्षेत्र में, विशेषकर विश्वविद्यालय के स्तर पर, हमारे सहयोग बढ़ें ताकि भारत के युवाओं के लिए विश्वस्तरीय शिक्षा के अवसर बढ़ें।

क्रिकेट और हॉकी से तो हम दो देश जुड़े ही हैं। पर मैंने आग्रह किया है कि भारत में खेल-कूद विश्वविद्यालय बनाने में ऑस्ट्रेलिया का सहयोग मिले।

विद्यार्थियों और दोनों देशों के बीच पर्यटकों की बढ़ती संख्या हमारे जन संपर्क का विस्तार कर रही है।

बहुपक्षीय मंचों में हमारे बीच घनिष्ठ सहयोग है। संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी को ऑस्ट्रेलिया के समर्थन की हम सराहना करते हैं। मैं ब्रिस्बेन में जी-20 शिखर सम्मेलन की राह देख रहा हूं। मुझे विश्वास है कि प्रधानमंत्री एबोट के नेतृत्व में जी-20 वैश्विक चुनौतियों के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा। 2015 के आगामी क्रिकेट वर्ल्ड कप के आयोजन के लिए भी शुभकामनाएं देता हूं।

मैं इस शिखर सम्मेलन से बहुत संतुष्ट हूं। मुझे विश्वास है कि आज की मुलाकात के बाद इन संबंधों को नई गति मिलेगी। आज हमने कई विषयों पर बात की है। नवंबर के शिखर सम्मेलन में उसे हम और आगे बढ़ाने में सफल होंगे। और मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाले दिनों में ऑस्ट्रेलिया भारत की 'पूरब की ओर देखो नीति' का एक बहुत ही महत्वपूर्ण भाग होगा और हर क्षेत्र में एक मजबूत साझेदार होगा।

वसुधा गुप्ता/वीएल/एम/आरआरएस/एसएनटी-3564

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

02-सितम्बर-2014 18:30 IST

जापान-भारत एसोसिएशन तथा जापान-भारत संसदीय मैत्री लीग द्वारा आयोजित स्वागत समारोह में, मुख्य वक्ता के रूप में, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए भाषण का मूल पाठ

भारत और जापान के बीच जो गहरे संबंध हैं, उन संबंधों का यश सिर्फ दो देशों की सरकारों को नहीं जाता है। उन संबंधों का यश आप जैसे सामाजिक जीवन के सभी वरिष्ठ लोगों ने जिस भावना के साथ एक छोटे से पौधे को अपनी बुद्धिमत्ता-क्षमता के अनुसार एक विशाल वटवृक्ष बनाया है, इसके लिए आपको और आपके पूर्व के पीढ़ियों को इसका यश जाता है। उनका हक बनता है और मैं इसलिए अब तक जिन-जिन लोगों ने भारत और जापान के संबंधों को सुदृढ़ किया है, उन सबका मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

मुझे बताया गया है कि भारत-जापान एसोसिएशन को 110 साल हो गए हैं। मैं सोच रहा था कि आज के युग में एक फैमिली भी 100 साल तक इकट्ठे नहीं रहती है। अगर एक परिवार 100 साल तक इकट्ठा नहीं रह सकता है तो ये लीडरशिप की कितनी मैच्योरिटी होगी, दोनों देशों के नीति निर्धारकों की कितनी मैच्योरिटी होगी, जिसके कारण 110 साल तक ये संबंध और गहरा होता गया। ये अपने आप में, एक बहुत बड़ी प्रेरणा दायक घटना है।

मुझे यह भी बताया गया कि जापान की किसी भी देश के साथ इतनी पुरानी एक भी एसोसिएशन नहीं है, जितनी कि जापान और भारत की है। हमारे पूर्वजों ने ये जो महान नींव रखी है, मैं नहीं मानता हूँ कि ये महान काम किसी तत्कालीन लाभ के लिए किया गया है। ये नींव पूरे मानव जाति के कल्याण को ध्यान में रखते हुए ये नींव रखी गई है जिसे दोनों देशों के महानुभावों ने और ताकतवर बनाया है।

अब हम इस पीढ़ी की और आने वाले पीढ़ियों की जिम्मेदारी है, कि जो 110 साल की ये यात्रा है, एक तपस्या है, उसको हम अधिक प्राणवान कैसे बनायें, अधिक जीवंत कैसे बनायें और आने वाली पीढ़ियों तक उसके संस्कार संक्रमण के लिए हम मिलकर के क्या कर सकते हैं, ये हम सबका दायित्व है।

कल जैसे प्रधानमंत्री आबे और मेरे बीच जो वार्ता हुई, हमारा एक जो तोक्यो डिक्लरेशन था, उसमें एक महत्वपूर्ण निर्णय हुआ है कि अब तक हम 'स्ट्रेटेजिक ग्लोबल पार्टनर्स' के रूप में काम करते थे, अब हमारा उसका स्टेटस ऊपर करके 'स्पेशल स्ट्रेटेजिक ग्लोबल पार्टनर्स' के रूप में आगे बढ़े हैं। ये हो सका है, इसके दो कारण हैं। एक, ये 110 साल पुरानी निरंतर हमारी ये एसोसिएशन, ये निरंतर संपर्क की व्यवस्था, इंडियन और जापानीज पार्लियामेंट्री एसोसिएशन की सक्रियता और दूसरा जो सबसे बड़ा कारण है, वह आज भले हम स्पेशल स्ट्रेटेजिक ग्लोबल पार्टनर्स के रूप में कागज पर हमने शायद लिखा हो, लेकिन जो चीज हमने कागज पे नहीं, हमारे दिलों में लिखी गई है, वह है जापान भारत की 'स्पिरिटुअल पार्टनरशिप'।

मैं देख रहा हूँ कि जापान में धीरे-धीरे हिंदी भाषा सीखने का जो उत्साह है, उमंग है, वह बढ़ता ही चला जा रहा है। उसी प्रकार से योग के संबंध में मैं देख रहा हूँ कि जापान की रुचि और बढ़ रही है। यानी एक-एक बारीक चीज का संबंध हमारा जुड़ रहा है।

जापान का भारत पर कितना बड़ा हक है, मैं एक उदाहरण बताना चाहता हूँ। अभी कुछ दिन पहले मुझे आपकी एक चिट्ठी मिली थी और चिट्ठी में आपने मुझे लिखा था कि मोदी जी आप आएंगे तो हिंदी में बोलिये। आप ही ने लिखी थी ना। जरा सा हमारे भारत के लोगों को आपका चेहरा बताइए। और इतनी बढिया हिंदी में चिट्ठी लिखी है। प्लीज, ये हमारे लोग देखना चाहेंगे, आपको। इतनी, इतनी बढिया हिंदी में चिट्ठी लिखी है उन्होंने मुझे और उन्होंने मुझे आग्रह किया है कि मोदी जी, मैं आपसे आग्रह करूंगा कि आप जापान के किसी भी कार्यक्रम में जाएं, कृपा करके हिंदी में बोलिये।

देखिए, एक-एक सामान्य व्यक्ति का ये जो लगाव है, ये जो अपनापन है, ये अपने आप में हैरान करने वाला है। जब मैं यहां सुभाष चंद्र बोस की बात करूँ तो मुझे यहां इतने लोग मिलेंगे, बड़े गौरव के साथ उन स्मृतियों को बताएंगे। मुझे ये भी बताया गया है कि आपके इन सदस्यों में एक सबसे वयोवृद्ध हैं। शायद उनकी उमर 95 इयर है। वे आज भी सुभाष

बाबू की सारी घटनाओं का इतना वर्णन करते हैं, इतनी डिटेल बताते हैं। सुभाष बाबू उनसे शेक हैंड नहीं करते थे, गले लगते थे। वे सारी बातों को बताते हैं। वो यहां बैठे हैं खास इस काम के लिए आए हैं। खड़े हो पाएंगे, मैं उनको प्रणाम करता हूं। वो सुभाष बाबू के एक बहुत बड़े निकट के साथी रहे हैं। मैं उनको प्रणाम करता हूं।

आपको सुभाष बाबू की कौन सी साल, कौन सी डेट, सारी घटनाएं अभी भी याद हैं। मैंने हमारे एम्बेसेडर को कहा है कि हाइली प्रोफेशनल वीडियो टीम उनके साथ एक महीने के लिए लगा दिया जाए और उसका वीडियो रिकॉर्डिंग होना चाहिए। महीने भर कोई उसके साथ रहें, उनका इंटरव्यू लेते रहे और हर पुरानी बातों को रिकार्ड करे। क्योंकि यह एक जीते-जागते इतिहास की हमारे पास तवारीख हैं। तो ऐसी बहुत सी चीजें हमारे साथ जुड़ी हुई हैं।

मैं जब पहली बार जापान आया था तो मैं मोरी जी के घर गया था। बड़े प्यार से उन्होंने मुझे अपने घर पर बुलाया था, तो कड़ी की बात निकली। जापान में कड़ी बहुत फेमस है। तो मुझे बताया गया, बंगाल से जो परिवार आए थे, उन्होंने सबसे पहले कड़ी की शुरुआत की थी। वो आज एक प्रकार से जापान की फेवरेट डिश बन गई है। यानी कितनी निकटता कितनी बारीकी है। और मैं मानता हूं कि इसको हमें और महात्म्य देना चाहिए। और आगे बढ़ना चाहिए।

पार्लियामेंट्री एसोसिएशन का भी बहुत बड़ा योगदान है। इन संबंधों के कारण दोनों देशों की नीतियों में हमेशा उस बात पर ध्यान रखा गया है कि हमारे संबंधों को कोई खरोंच न आ जाए। कोई भी उस पर नुकसान न हो जाए।

पार्लियामेंट्री एसोसिएशन के लिए मेरे मन में कुछ विचार आए हैं। मैं चाहूंगा कि इसको आगे चलकर के हम इसको कुछ एक्सपैंड कर सकते हैं क्या ? एक तो मैं भारत के लिए इस पार्लियामेंट्री एसोसिएशन के लिए निमन्त्रण देता हूं। आप आइए और दिल्ली के सिवाए भी मैं चाहूंगा कि कुछ और लोकेशन पर भी जाइए और भारत को खुशी होगी, आप सबकी मेहमान नवाजी करने की। दो-तीन और चीजें अगर हम कर सकते हैं तो सोचें। एक पार्लियामेंट्री एसोसिएशन बहुत अच्छा चल रहा है। भारत से भी लोग यहीं आते हैं। यहां के भी पार्लियामेंट मेम्बर्स आते हैं और एक अंडरस्टैंडिंग ईच अंदर, ये अपने आप में बहुत अच्छी प्रोग्रेस हो रही है। लेकिन समय रहते उसमें मुझे थोड़े बदलाव की मुझे जरूरत लगती है।

इसी पार्लियामेंट्री एसोसिएशन के साथ एक छोटा सा यंग पार्लियामेंट्री एसोसिएशन बना सकते हैं क्या ? जो दोनों देशों के यंगेस्ट पार्लियामेंटेरियंस हैं, उनका जरा मिलना-जुलना हो, वो अपनी नई पीढ़ी की सोच की चर्चा करें। उस दिशा में कुछ कर सकते हैं क्या ?

दूसरा, एक मेरे मन में विचार आता है, क्या दोनों देशों की वीमेन पार्लियामेंट मेम्बर्स का एसोसिएशन बन सकता है क्या। जिसमें महिला पार्लियामेंट मेम्बर्स के बारी-बारी से मिलने की संभावना बन सकती है क्या ? सभी महिलाओं ने सबसे पहले तालियां बजाई हैं।

तीसरा एक जो मुझे लगता है कि भारत इतना विशाल देश है। इतने राज्य हैं, हर राज्य की अपनी असेम्बली है, और असेम्बली के भी मेम्बर्स हैं। क्या कभी न कभी हम उन राज्यों से और एक ही राज्य से सभी एमएलए नहीं, लेकिन 5-6 राज्यों के दो-दो करके एमएलए यहां आए और यहां से भी उसी प्रकार से लोकल बॉडीज के लोग आयें। ये अगर हमारा बनता है तो इतना बड़ा विशाल देश है, भिन्न-भिन्न कोने में जाने का हो जाए। और हम यह तय कर सकते हैं कि जापान का कोई न कोई डेलीगेशन, हिंदुस्तान में 25 से भी ज्यादा राज्य हैं, हर महीने अगर दो डेलीगेशन आते हैं, और एक राज्य में एक डेलीगेशन जाता है और लोग आते चलें - आते चलें। अब देखिए, देखते ही देखते जापान में हिंदुस्तान की एक्सपर्टाईज वाले 1000 लोग तैयार हो जाएंगे।

आपने मुझे यहां बुलाया, मेरा सम्मान किया। मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूं। लेकिन मैं अनुभव करता हूं, मैं कारण नहीं जानता हूं। लेकिन, मैं जब भी जापान आया हूं और जब भी जापान के लोगों से मिलता हूं मुझे एक अलग सा अपनापन महसूस होता है। वो ये अपनापन क्या है, मैं नहीं जानता, शास्त्र कौन से होंगे। देखिए मुझे बहुत अपनापन लगता है और मुझे इतना प्यार मिलता है जापान से।

आपके एम्बेसेडर मेरे यहां थे, वो मेरे यहां 3 साल रहे और मैंने देखा कि हम इतने मित्र की तरह साथ काम करते थे, इतनी हमारी दोस्ती बन गई थी। और इतने कामों को हम बढ़ा रहे थे और इसलिए मैं मानता हूं कि आपने जो अपनापन मुझे दिया है, वो प्रधानमंत्री पद से भी बहुत बड़ी चीज है। बहुत बड़ी चीज है, जो आपने मुझे दिया है। मैं इसको कभी भूल नहीं सकता हूं।

मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूं, और मेरी आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

अमित कुमार/ शिशिर चौरसिया/ तारा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

01-सितम्बर-2014 21:11 IST

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा जापान के प्रधानमंत्री श्री शिंजो आबे के साथ टोक्यो में हुए संयुक्त प्रेस संबोधन के दौरान दी गयी टिप्पणी का मूल पाठ

जापान आकर के मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई है।

प्रधानमंत्री बनने के बाद मैंने निर्णय लिया था कि अपने पड़ोस के बाहर सबसे पहली बाईलेटरल विजिट जापान की होगी। यह मेरा सौभाग्य है कि प्रधानमंत्री आबे ने मुझे यहां प्रधानमंत्री बनने के 100 दिन के भीतर जापान आने का अवसर दिया और हमारी बहुत पुरानी जो दोस्ती है, उसको और अधिक मजबूत बनाया।

यह इस बात का प्रमाण है कि भारत जापान को सबसे घनिष्ठ और विश्वसनीय मित्रों में समझता है और हमारी विदेश नीति में जापान की ऊंची प्राथमिकता है, क्योंकि भारत के विकास में जापान की महत्वपूर्ण भूमिका है और हम दो शांतिप्रिय लोकतांत्रिक देशों की साझेदारी, आने वाले समय में इस क्षेत्र और विश्व के लिए प्रभावशाली भूमिका निभा सकती है।

जिस प्रकार से प्रधानमंत्री आबे ने क्योटो और टोक्यो में हमारा स्वागत किया है, सम्मान किया है और अपना अमूल्य समय दिया है, इसके लिए मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूं। यह उनके भारत के प्रति प्रेम और विश्वास का प्रतीक है। यहां हर क्षेत्र के लोगों से मिलकर उनका भारत के प्रति प्रेम और आदर देखकर मुझे अत्यंत खुशी हुई।

क्योटो में भेंट और एक शिखर सम्मेलन से मैं केवल संतुष्ट ही नहीं हूं, बल्कि मुझमें इस भारत और जापान की साझेदारी का विश्वास और गहरा हो गया है और मुझमें एक नया विश्वास और नई उम्मीदें जगी हैं।

मेरे मित्र प्रधानमंत्री आबे ने हमारी चर्चा के बारे में काफी उल्लेख किया है और आपके सामने ज्वाइंट स्टेटमेंट और फैक्ट शीट भी है। इसलिए मैं, उन बातों को दुहराना नहीं चाहता हूं। मैं इस संबंध में शिखर सम्मेलन को किस दृष्टिकोण से देखता हूं, उस विषय पर कुछ शब्द कहना चाहता हूं। आज सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमने स्ट्रेटेजिक एंड ग्लोबल पार्टनरशिप को अब स्पेशल स्ट्रेटेजिक एंड ग्लोबल पार्टनरशिप का दर्जा देने का निर्णय लिया है।

भारत और जापान की स्प्रिचुअल पार्टनरशिप कालातीत है। वह समय के बंधनों से बंधी हुई नहीं है। लेकिन आज शासकीय दायरे में ये स्पेशल स्ट्रेटेजिक एवं ग्लोबल पार्टनरशिप के रूप में आप सबके सामने हम खड़े हैं। मेरी दृष्टि से यह सिर्फ शब्द नहीं है। ये एक कोई एक कैटेगरी से दूसरी कैटेगरी में जाना, इतना ही नहीं है, हम दोनों देश इस विषय में अत्यंत गंभीर हैं और मुझे विश्वास है कि हमारे यह संबंध का नया रूप अधिक परिणामकारी और अधिक दायित्वपूर्ण रहेगा।

ये स्पेशल स्ट्रेटेजिक इसलिए है कि भारत के विकास और परिवर्तन में जापान की आने वाले दिनों में और अधिक महत्वपूर्ण भूमिका रहने वाली है। आज प्रधानमंत्री आबे ने आश्वासन दिया है, एक प्रकार से शपथ ली है, कि भारत के इंस्क्यूसिव डेवलपमेंट में वह जापान का नए स्तर से सहयोग को और साझेदारी देंगे।

हम लोग भली-भांति समझ सकते हैं कि आज प्रधानमंत्री आबे ने 3.5 ट्रिलियन येन, यानी कि अगर मैं भारत के रुपये के संदर्भ में कहूं तो 2 लाख 10 हजार करोड़ यानी कि 35 बिलियन डॉलर के पब्लिक और प्राइवेट इंवेस्टमेंट और फाइनेंसिंग अगले पांच सालों में भारत में करने का लक्ष्य रखा है। मैं उनके इस महत्वपूर्ण निर्णय का हृदय से स्वागत करता हूं।

यह किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। प्रधानमंत्री जी ने मेरे विजन को समझते हुए हर क्षेत्र में सहयोग देने का आश्वासन दिया है। आज मैं आपसे जब गंगा शुद्धीकरण की बात कर रहा था तो तुरंत उन्होंने कहा कि आप तय कीजिए कि आपको क्या मदद चाहिए। एक विकसित और तेज गति से बढ़ता भारत न केवल एक विशाल आर्थिक अवसर रहेगा, जिससे जापान को भी बहुत लाभ मिलेगा, बल्कि वह दुनिया में लोकतांत्रिक शक्ति को मजबूत करेगा और स्थिरता बढ़ाने में एक बहुत बड़ा कारण रहेगा। मैं समझता हूं कि इसमें दोनों देशों का लाभ है और भी एक बात है कि हमारे संबंध सिर्फ आर्थिक रूप में नहीं हैं, बल्कि इस संबंध में और भी कई आयाम जुड़े हुए हैं।

हम राजनीतिक संवाद और सहयोग को एक नए स्तर पर, एक नई ऊंचाई पर ले जाने के पक्ष में हैं। हमने हमारे रक्षा क्षेत्र के संबंधों को भी एक दिशा देने का निर्णय लिया है। न केवल आपसी बातचीत और अभ्यास को बढ़ाने का, और मित्र देशों के साथ इन अभ्यास को करने का बल्कि टेक्नोलॉजी और इक्विपमेंट के क्षेत्र में भी साझेदारी बढ़ाएंगे। दोनों देशों का भविष्य सामुद्रिक सुरक्षा के साथ भली भांति जुड़ा हुआ है।

कई और क्षेत्रों में जैसे एडवांस टेक्नोलॉजी, रसायन, शिक्षा, टेक्नोलॉजी, अनुसंधान और विकास ऐसे क्षेत्र में भी दोनों देशों के लाभ के लिए हम काम कर रहे हैं। समाज की चुनौती का समाधान ढूंढने के लिए हम भरसक प्रयास कर रहे हैं।

विकसित भारत और सफल जापान, दोनों देशों के लिए यह लाभप्रद है। परंतु उससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि एशिया और विश्व में शांति, स्थिरता और स्मृद्धि बढ़ाने में बड़ा योगदान देंगे।

ग्लोबल दृष्टिकोण से इसका यह अर्थ है कि भारत और जापान, एशिया के दो सबसे महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक देश हैं और एशिया की तीन सबसे बड़ी इकोनोमी में शामिल हैं और हमारे संबंध इस पूरे क्षेत्र पर तो प्रभाव करेंगे ही, परंतु सारे विश्व पर भी इसका प्रभाव अनेक प्रकार से होने की संभावना, में देखता हूं।

पूरा विश्व एक बात को मानता है भलीभांति और कनविंस है कि 21वीं सदी एशिया की सदी और पूरे विश्व में 21वीं सदी एशिया की सदी है, इसमें कोई कनफ्यूजन नहीं है। लेकिन 21वीं सदी कैसे हो, यह उस बात पर निर्भर करता है कि भारत और जापान मिल करके किस प्रकार की व्यूह रचना को अपनाते हैं, किस प्रकार की रणनीति आगे बढ़ते हैं, और कितनी घनिष्टता के साथ आगे बढ़ते हैं।

यह काम हम भगवान बुद्ध के शांति और संवाद के रास्ते पर चलकर इस क्षेत्र में सभी देशों के साथ मिलकर इस लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।

दूसरा, इससे, दुनिया में कई विषयों पर जैसे नॉन पोलिप्रिफरेशन, स्पेस सिक्युरिटी, साइबर सिक्युरिटी, यू एन रिफार्मस और इस क्षेत्र के रीजनल फोरम्स में साथ मिलकर के हमारे जुड़े हुए हितों को आगे बढ़ा सकते हैं।

तीसरा, हमारी साझेदारी अन्य क्षेत्र और विभिन्न देशों को लाभ पहुंचा सकती है, जहां हम साथ मिलकर काम कर सकते हैं, चाहे एशिया में हो या और क्षेत्रों में, आने वाले दिनों में हम इसे प्राथमिकता देने वाले हैं।

स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप को जब हम स्पेशल स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप कहते हैं, तब इसका मतलब है कि पहले दोनों देशों के लिए इस संबंधों का महत्व बहुत बढ़ गया है। दोनों देशों की विदेश नीति में इस संबंध की प्राथमिकता नया रूप लेगी और हम दोनों देशों ने निर्णय लिया है कि इस संबंध को बढ़ाने के लिए विशेष बल दिया जाएगा।

हमारे सहयोग के अवसर की कोई सीमा नहीं है, ना ही दोनों तरफ इरादे और इच्छा की कोई कमी है। अगर हमारे पोटेंशियल को हासिल करना है तो स्पेशल तरीके से काम करना होगा, इसलिए मैंने 'जापान फास्ट ट्रैक चैनल' बनाने का भी निर्णय लिया है।

दूसरा, हमने आज जो निर्णय लिये हैं, उससे हमारा गहरा आपसी विश्वास एक नए स्तर तक पहुंचा है। पिछले कुछ महीने में हमने सिविल न्यूकिलियर इनर्जी क्षेत्र में प्रगति की है। आज हमने इस विषय पर विस्तार से चर्चा भी की है और हम इससे आपसी समझ बढ़ाने में भी सफल हुए हैं। हमने अपने अधिकारियों को निर्देश दिया है कि इस काम को जल्द समाप्त करें ताकि हमारी स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप और मजबूत हो।

उसी प्रकार जापान ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है कि हमारी कुछ कंपनियों पर लगे प्रतिबंधों को हटायेंगे। यह भी नए आपसी विश्वास का प्रमाण है। रक्षा के क्षेत्र में एमओयू साइन किया है और टेक्नोलॉजी इंफ्लोमेंट पर सहयोग का निर्णय लिया है। इन सबसे स्पष्ट होता है कि हमारे संबंध वास्तविक रूप में एक नए स्तर पर पहुंचे हैं।

उसी प्रकार आर्थिक संबंधों को कई गुना बढ़ाने का जो हमने संकल्प किया है और जिस मात्रा में जापान ने सहायता करने का वचन और आश्वासन दिया है, वह भी विशेष संबंध का प्रमाण है।

इस संबंध की विशेषता हमारे संबंध की प्राचीन नींव और दोनों देशों के लोगों में अटूट प्रेम और आदर भी अंतर्निहित हैं।

हमने ऐसे निर्णय लिये हैं जिनसे भविष्य में संबंध और मजबूत होंगे। विशेष रूप से यूथ एक्सचेंज, लैंग्वेज ट्रेनिंग, हिंदी और जापानी भाषा में प्रशिक्षण, कल्चरल एक्सचेंज, अनुसंधान और विकास में साथ काम करना।

इतना ही नहीं, हमने जो पांच और एग्रीमेंट साइन किये हैं- स्वास्थ्य, क्लीन एवं रिन्यूएबल इनर्जी, वीमेंस डेवलपमेंट, रोड्स एवं क्योटो-वाराणसी के बीच समझौता, वह दिखाते हैं कि हमारे संबंध हर क्षेत्र में उभर रहे हैं और लोगों के हितों से जुड़े हुए हैं।

मैं प्रधानमंत्री आबे का पुनः आभार प्रकट करता हूँ। मुझे विश्वास है कि हमारे संबंधों की यह एक नई सुबह है और नए विश्वास और ऊर्जा के साथ हम आगे बढ़ेंगे और हम जो नए स्तर की बात करते हैं, उसको हम जल्द ही वास्तविकता में बदल देंगे। मैं फिर एक बार प्रधानमंत्री जी का और मेरे परम मित्र का हृदय से बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूँ। जापान के नागरिकों का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

थैंक यू।

अमित कुमार/ शिशिर चौरसिया

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

25-नवंबर-2014 22:52 IST

काठमांडू में राष्ट्रीय ट्रामा सेंटर के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि बहुत ही कम अवधि में मुझे दोबारा नेपाल की भूमि के दर्शन करने का सौभाग्य मिला है। इन दिनों विश्व के कई देशों में मेरा जाना हुआ है। कई वैश्विक स्तर की मीटिंगों में जाना हुआ है, लेकिन नेपाल के साथ मेरी जो स्मृतियाँ जुड़ी हुई हैं, नेपाल ने मुझे जो प्यार दिया है, अपनापन दिया है, वो मैं कभी भूल नहीं सकता हूँ। इसके लिए मैं नेपाल का बहुत बहुत आभारी हूँ।

आज ये Trauma Center का लोकार्पण हो रहा है। एक प्रकार से ये जीवन रक्षा का अभियान है। First Golden Hour, आकस्मिक परिस्थितियों में इंसान की जिंदगी बचाने का बहुत महत्वपूर्ण समय होता है। उस First Golden Hour में अगर उपयुक्त सुविधा मिल जाए, proper treatment का सहारा मिल जाए, तो इंसान की जिंदगी बचाई जा सकती है। नेपाल और भारत की मैत्री का ये उत्तम नजराना है, जो एक प्रकार से जीवन की सौगात दे रहा है। जो नजराना जीवन की सौगात देता है, वो हमें जड़ों से जोड़ता है, हमें जीवन से जोड़ता है, हमें अरमान से जोड़ता है और हमें अरमान पूरे करने के लिए प्रयास करने की एक शक्ति भी देता है। इसलिए ये Trauma Center भारत और नेपाल के बीच एक जीवंत संबंध का उदाहरण बन रहा है।

आगे भी इस Trauma Center का upgradation करना होगा, technology support की आवश्यकता होगी, human resource development की आवश्यकता होगी। भारत भविष्य में भी इस काम में नेपाल के साथ रहेगा, पूरी सहायता करता रहेगा और हम चाहेंगे कि नेपाल अपने पैरों पर खड़े हो करके..इस Trauma Center को चलाने का उसमें सार्वभौमिक अधिकार आए। वहां तक जो भी मदद चाहिए, भारत खुले दिल से यहां के लोगों की जिंदगी बचाने के लिए सदा सर्वदा आपके साथ खड़ा है। और वो हमारे लिए सौभाग्य होगा। एक प्रकार से अपनों की सेवा करने का यह अवसर है और अपने यहाँ तो, सेवा परमोधर्म- ये शास्त्रों ने कहा है। और जिस शास्त्र ने हमें 'सेवा परमोधर्म' कहा है, उस शास्त्र से हम दोनों जुड़े हुए हैं। इसलिए एक सेवा का यह प्रकल्प है और मुझे गर्व है कि आज मुझे इस समारोह में लोकार्पण के काम में आने का अवसर मिला। भारत और नेपाल का एक अटूट नाता, एक जीवंत नाता, उसका एक जीवंत स्मारक हमारे सामने आज खड़ा हुआ है।

जब मैं पिछली बार आया था, तब भी मैंने सार्वजनिक रूप से कहा था कि मैं उस समय तो जनकपुर, मुक्तिनाथ और लुम्बिनी नहीं जा पाया था, मैंने कहा था कि मैं अगली बार आउंगा तो जाउंगा। इस बार भी मेरा इरादा था कि मैं by-road जाऊँ। By-road जाने का मेरा इरादा इसलिए था कि मैं खुद अनुभव करना चाहता था कि नेपाल से वहां आने वाले लोगों को वहां क्या दिक्कतें होती हैं, क्या तकलीफ होती हैं। भारत से उस तरफ जाने वाले लोगों को क्या दिक्कतें होती हैं, क्या तकलीफ होती हैं। उसे मैं खुद experience करना चाहता था और फिर मैं उसको ठीक करना चाहता था। लेकिन, समयभाव के कारण मैं इस बार उसको नहीं कर पाया हूँ। मैं विशेष रूप से जनकपुर, लुम्बिनी और मुक्तिनाथ - वहां के नागरिकों को जो कष्ट हुआ है, जो निराशा हुई है, मैं भलीभांति उनकी पीड़ा को समझ सकता हूँ। लेकिन, मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूँ कि निकट भविष्य में जब भी मुझे अवसर मिलेगा मैं आपके बीच आउंगा। आपके प्यार को मैं भली-भांति दूर बैठे-बैठे भी अनुभव कर रहा हूँ। और इसलिए वहां के सभी नागरिकों को मैं विश्वास दिलाता हूँ। नेपाल के हर नागरिक का भारत पर पूरा अधिकार, भारतीयों पर पूरा अधिकार है, सरकार पर अधिकार है और भारत के प्रधानसेवक पर प्रधान अधिकार है।

मैं जब पिछली बार आया था, और आज मैं आया हूँ, सौ दिन भी नहीं हुए हैं। लेकिन जब विश्वास का इंजिन किसी काम को लग जाता है, तो काम कितनी तेजी से होता है, कितना अच्छा हो सकता है, इसका मैं आज अनुभव कर रहा हूँ। आज नेपाल और भारत के बीच भरोसे का, विश्वास का एक बहुत बड़ा horse power वाला इंजिन लग गया है, जो विश्वास का इंजिन है, भरोसे का इंजिन है। उसी के कारण 100 दिनों के अंदर जिस प्रकार से नेपाल और भारत ने एक के बाद एक निर्णय किए, काम शुरू किया, 25-25, 30-30 साल से रुके हुए काम - ये आज आगे बढ़े हैं। हमारे यहां कहावत है - एक हाथ से ताली नहीं बजती है। ये संभव इसलिए हुआ है कि नेपाल सरकार, नेपाल के सभी राजनीतिक दल, नेपाल के प्रशासनिक व्यवस्था में जुड़े हुए अधिकारी - उन सब ने मिल करके आगे बढ़ने की शुरुआत की। आगे बढ़ाया। छोटी-मोटी

रूकावटें आईं तो उन रूकावटों को भी बहुत बुद्धिमत्ता पूर्ण तरीके से, उसका निराकरण करते हुए, चीजों को ठोस रूप देने का काम किया है। इसलिए मैं आदरणीय प्रधानमंत्री जी का, उनकी सरकार का, सभी राजनीतिक दलों का, प्रशासनिक अधिकारियों का भारत की तरफ से हृदय से अभिनंदन करता हूँ, कि उन्होंने ये काम न किया होता तो आज 100 दिन के भीतर भीतर 25-25, 30-30 साल से लटके हुए काम, अटके हुए काम आज पूरे न होते।

मैं आज एक संतोश का भाव अनुभव कर रहा हूँ कि मेरी पहली मुलाकात और दूसरी मुलाकात के बीच मैं तेज़ गति से एक के बाद एक फैसले हुए हैं। ये फैसले नेपाल के जीवन को तो ताकत देने वाले हैं, भारत को बहुत बड़ा संतोश देने वाले हैं। हमारे लिए नेपाल की खुशी, नेपाल का आनंद हमारी मुस्कुराहट का कारण बनता है। अगर नेपाल खुश नहीं तो हिंदूस्तान मुस्कुरा नहीं सकता है। इसलिए हमारे लिए नेपाल की खुशी, ये हमारे लिए संतोश की औषध है। वो संतोश की औषध हमें प्राप्त हुई है, उसके लिए नेपाल से संबंधित सभी जनों का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

खासतौर पर Hydro Power. कितने समय से यह लटका हुआ था, कितने विवाद चल रहे थे, आशंकाओं के बादल हर बार छाए रहते थे। लेकिन, यहां के सभी राजनीतिक दलों ने जिस प्रकार की दूर दृष्टि का परिचय करवाया है, और उसका परिणाम यह हुआ है कि Power Trade Agreement, 900 Megawatt Upper Karnali Project, Pancheshwar Development Authority, 900 मेगावाट क्षमता वाले Arun III Project - यानि एक के बाद एक। शायद 10 साल में एक चीज़ हो जाए तो भी बड़ा आनंद हो जाता है। यहां तो 100 दिन में इतने सारे काम आगे बढ़ गए। तो आप कल्पना कर सकते हैं कि दो देश मिल करके क्या नहीं कर सकते हैं।

उसी प्रकार से हमने कहा था Transmission Line के संबंध में। हम चाहते थे कि नेपाल को बिजली मिले, ज्यादा बिजली मिले। Transmission Line मज़बूत बनाने के लिए बहुत ही कम समय में काम पूरा हो जाएगा। 125 मेगावाट बिजली और यहां आना शुरू हो जाएगा। इतना ही नहीं, एक नई लाइन तैयार हो रही है, जिसकी क्षमता 1000 मेगावाट की है। अब नेपाल जगमगा उठेगा, ये मेरा पूरा विश्वास है। हमने पिछली बार कहा था कि एक बिलियन डॉलर - यानि कि 10 हज़ार करोड़ नेपाली रुपयों की कीमत जिसकी होती है - कम ब्याज़ पर और लंबे समय के लिए हम देंगे। आज हम मिल रहे हैं, उसका Final Agreement हो जाएगा। ये भी काम एक प्रकार से आज पूरा हो गया, मान लीजिए।

हम एक Motor Vehicle Agreement पर करार कर रहे हैं और मैं मानता हूँ कि नेपाल और भारत को जोड़ने के लिए ये बहुत ही उत्तम व्यवस्था हो रही है। उसी के तहत आज ही काठमांडू से दिल्ली Regular Bus Service शुरू करने का भी हमें सौभाग्य मिल रहा है। काठमांडू से दिल्ली जब Regular Bus Service शुरू होती है तो यहां के सामान्य मानव के जीवन में वो कितनी बड़ी आर्थिक रूप से सहायता करने वाली सुविधाजनक होती है, उसका आप अंदाज़ लगा सकते हैं।

लेकिन नेपाल और भारत के बीच चलने वाली ये टूरिज़्म की दृष्टि से चलने वाली बस में यात्री भी उसका फायदा उठाते हैं, international यात्री भी प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव करने के लिए बस से सफर करना पसंद करते हैं। हम चाहते हैं कि नेपाल का टूरिज़्म भी बढ़े। लेकिन टूरिज़्म बढ़ता है, उसके लिए कुछ सुविधाएं चाहिए। उसमें एक महत्वपूर्ण सुविधा होती है- connectivity. मैंने मेरे अफसरों को कहा है कि क्या हम - ये जो दिल्ली काठमांडू के बीच बस सर्विस चलेगी - वो बस सेवा Wi-Fi के साथ हो सकती है क्या? अगर Wi-Fi के साथ वो बस सेवा होगी तो टूरिस्ट जरूर पसंद करेगा क्योंकि वो बस में जाता रहेगा, वो दुनिया से अपना connect होता रहेगा, अपना आनंद लेता रहेगा। हमारे अफसरों ने कहा कि "साब मालूम नहीं है, हम ज़रा देखेंगे कि कितना संभव है।" मैंने कहा तो है, अब देखते हैं technological अगर support मिल गया तो ये काम भी हम करवा देंगे। हम चाहते हैं, व्यवस्थाएं हों, व्यवस्थाएं आधुनिक हों और सुविधाजनक हों।

मैंने एक चिंता जताई थी कि भारत में हमारे नेपाल के लोग बहुत बड़ी मात्रा में हैं। नेपाल और भारत की रिश्तेदारी भी बहुत है, व्यापारिक संबंध भी है और इसलिए, यहां के फोन कॉल बहुत महंगे होते हैं। मैंने कहा था कि अमरीका बात करना सस्ता जाता है लेकिन Nepal-India बात करना महंगा जाता है। मैंने कहा था कि ये सस्ता होना चाहिए। मैं भारत गया, मैंने पूछा, "भई! ये क्या कर रहे हो? क्या हम नहीं मदद कर सकते?" लेकिन जब जाना तो बहुत आश्चर्य हुआ मुझे। भारत में तो इसका रेट सिर्फ 40 पैसा है, लेकिन यहां पर वो रेट शायद 3.50 रुपया है, नेपाल में, नेपाल authority जो है। मैं हैरान हो गया कि "भई अब क्या करूं? मैंने तो कह दिया है।"

मैंने कहा कि "ठीक है, हम कम लेते हैं। न के बराबर लेते हैं तो भी कुछ कम करें।" मैंने 35% कम करने का फैसला कर लिया। लेकिन, अब मैं चाहता हूँ, नेपाल की जो टेलीफोन सेवा है, वो भी उसमें कुछ कम करें ताकि नेपाल के लोगों को, और नेपाल से जुड़े हुए भारत के संबंधों में ये टेलीफोन का खर्चा थोड़ा कम होना चाहिए। मेरी तरफ से जो कर सकता हूँ, उतना ज़रूर कर दिया है। मैं चाहूंगा कि यहां उस दिशा में कुछ हो।

Border Infrastructure - खासतौर से road मार्ग से जब हम आते हैं - तो वहां पर कुछ प्रश्न थे, पिछली बार, मैंने उसे तेज़ गति से आगे बढ़ाने के लिए काम किया है। कुछ पुराने contract की भी समस्याएँ थीं, उसको भी रद्द करने के लिए कह दिया है। मैं मानता हूँ छः महीने के भीतर-भीतर आपको सही रूप में वहां पर प्रगति दिखाई देगी।

एक और बात है, नेपाल और भारत के संबंधों में। एक तो, बहुत बड़ी मात्रा में नेपाल के लोग जो भारत में काम करते हैं, वो यहां आते हैं, भारत के टूरिस्ट यहां आते हैं। एक कठिनाई थी- 500 और 1000 रूपए के नोट। वो प्रतिबंधित थे। हमने नेपाल सरकार को प्रार्थना की थी। और हमने मिल करके एक निर्णय किया है कि अब भारत से 500 रूपए और 1000 रूपए के नोट 25 हजार की मर्यादा में, ये हम ला सकते हैं। इसके कारण, भारत में काम करने वाले जो लोग अपने घर वापस आते हैं, उनको साथ में पैसे लाने हों तो उनका सुविधा बनेगी। और जो टूरिस्ट आते हैं, टूरिस्ट के हाथ में भी पैसे रह पाएंगे। तो इस व्यवस्था को भी हमने निर्णय कर लिया है।

एक काम जिसका मेरा स्वयं का बहुत अच्छा अनुभव है। मैं जब गुजरात में काम करता था तो गुजरात के मुख्यमंत्री के नाते एक महत्वपूर्ण initiative हमने लिया था। हिंदुस्तान में हमने सबसे पहले इस काम को किया था, और वो था soil testing। आमतौर पर हम developing countries में मनुष्य का भी health card नहीं होता है। लेकिन हमने कोशिश की थी कि soil health card बने। किसान के पास जो ज़मीन है, उस ज़मीन में क्या गुण हैं, क्या अवगुण हैं, क्या अच्छाईयां हैं, क्या बिमारियां हैं, वो ज़मीन किस crop के लिए उपयुक्त है, किस crop के लिए अनउपयुक्त है, किस ज़मीन पर कौन सी दवाई सूट करेगी, कौन सी दवाई सूट नहीं करेगी - ये सारी चीज़ें soil testing से संभव होती हैं। ये करने से औसत एक एकड़ भूमि में किसान फसल तो ज्यादा कर ही सकता है, लेकिन साथ-साथ, जो फालतू खर्च होते हैं- गलत दवाईयां डाल देता है, गलत fertilizer डाल देता है, गलत crop डाल देता है, वो सब उसका बच जाता है और करीब-करीब एक एकड़ भूमि में 15-20 हजार तो सहज रूप से उसकी मदद हो जाती है। ये soil testing का काम नेपाल में भी हो, ये बात मैंने पिछली बार प्रधानमंत्री जी से मैं जब मिला तो कही थी कि आपको लाभ होगा। तो उन्होंने कहा कि देखेंगे और मुझे लगा कि मैं सुझाव देके चला हूँ, वो शोभा नहीं देता है, मुझे कुछ करना चाहिए। तो आज हम एक Mobile soil test laboratory नेपाल को भेंट दे रहे हैं। उसकी पूरी technology दे रहे हैं। उससे पता चलेगा कि निश्चित एरिया में इस प्रकार की जांच हो गई। आप देखिए, उसको अगर बाद में आप चलाएंगे तो बहुत लाभ होगा, तो एक बहुत बड़ा काम।

हमने पिछली बार कहा था कि people-to-people contact. देश जुड़ते हैं, तब जब जन जुड़ता है। और जन भी तब जुड़ता है जब मन जुड़ता है। लेकिन मन जुड़ने की, जन जुड़ने की प्रक्रिया कुछ व्यवस्था के तहत होती है। और इसलिए हम चाहते थे कि जन-जन संपर्क बढ़ना चाहिए। इसीलिए हमने Youth Exchange की बात की थी। मुझे खुशी है कि Youth Exchange Programme में पहली बैच already हिंदुस्तान पहुंची हुई है। इन दिनों कलकत्ता युनिवर्सिटी में वे नौजवान, सारे नेपाल के - वहां का नजारा देख रहे हैं, अभ्यास कर रहे हैं, वहां के लोगों से मिल रहे हैं, बातचीत कर रहे हैं।

तो एक एक चीज़ हम तेजी से कर रहे हैं।

दूसरा, मैंने कहा था - हम नेपाल को e-library देंगे। मुझे खुशी है कि नेपाल सरकार की तरफ से और नेपाल के कुछ प्रमुख लोगों की तरफ से, e-library उनको कैसी चाहिए, उसके बहुत अच्छे सुझाव आए। मैं मानता हूँ कि हमारे लिए भी सीखने जैसे अच्छे सुझाव आए। मैं मानता हूँ कि ये जो आपका सक्रिय योगदान था, तो e-library का काम बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। जैसी आपकी अपेक्षा है, उन आपके सुझावों को संकलित करते हुए, उस e-library को हम प्रारंभ करेंगे। मैं मानता हूँ कि वक्त बदल चुका है। 21वीं सदी ज्ञान की सदी है। जो ज्ञान के उपासक हैं, उनका ये युग आने वाला है। नेपाल और भारत की इस भूखंड की सांस्कृतिक ज्ञान की उपासना की संस्कृति रही है। नेपाल भी ज्ञान की उपासना वाली संस्कृति की विरासत को लेकर चल रहा है और इसलिए e-library उस ज्ञान वर्धन का एक बहुत बड़ा माध्यम बनेगी। ये युग ऐसा है कि जितनी highways की जरूरत है उतनी ही i-ways की जरूरत है। Highways भी चाहिए information-ways भी चाहिए। e-library एक प्रकार से i-ways का काम करेगी और जो हम नेपाल में प्रवेश करने वाले रास्ते ठीक करेंगे, वो highways का काम करेंगे। भारत आपकी highways की भी चिंता करेगा, i-ways की भी चिंता करेगा और उस काम को हम आगे बढ़ाएंगे।

हमारा सुरक्षा सहयोग भी.. बहुत ही एक विश्वास का वातावरण चाहिए। सुरक्षा का काम तब होता है, जब दो देश के बीच में अटूट विश्वास हो, भरोसा हो। और आज भारत और नेपाल के बीच में विश्वास का ताना बाना इतना मजबूत हुआ है कि जिसके कारण रक्षा के क्षेत्र में भी भारत और नेपाल मिल करके काम कर रहे हैं।

आज मेरे लिए खुशी की बात है कि हम एक 'ध्रुव हेलीकॉप्टर' जो सेना के काम आएगा, वो आज भारत की तरफ से नेपाल को हम समर्पित कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि नेपाल को एक अच्छा रक्षा कवच मिलेगा, वो एक नई ताकत बनेगा। यहां

पर पुलिस एकेडेमी का काम भी, उसका foundation stone, उसकी चिंता भी हम करेंगे।

यानि अनगिनत चीज़ें, सौ दिन के भीतर-भीतर, अनगिनत चीज़ों का एक के बाद एक हो जाना, ये अपने आप में ही दो सरकारों के बीच विश्वास की ताकत कितनी बड़ी गति देती है, कितना बड़ा परिणाम देती है।

मेरा ये सौभाग्य रहा कि पिछली बार जब मैं आया, तब आपकी संविधान सभा को संबोधित करने का मुझे अवसर मिला था। Constituent Assembly को संबोधित करने का अवसर मिला था। एक प्रकार से नेपाल के सभी stake holdres कहिए, नेपाल की सभी क्रीम कहिए - उस सभी विशाल समूह के सामने मैं आया था। तब मैंने कहा था कि नेपाल जितना जल्द अपना संविधान बनाएगा, उतना ही नेपाल के भविष्य के लिए वो एक नई ताकत मिलेगी। नेपाल के संविधान के निर्मिति में जितना विलंब होगा, वो विलंब नेपाल के लिए अच्छा नहीं होगा। संविधान आप बनाएं, आपके तरीके से बनाइए, आपके निर्णय होंगे, भारत का उसमें कोई दखल नहीं हो सकता, होना भी नहीं चाहिए। लेकिन, आपकी खुशी, हमें मुस्कुराहट देती है और इसलिए भी संविधान का जल्दी बनना बहुत ज़रूरी है। मेरा यह भी आग्रह था कि संविधान के अंदर एक ऐसा गुलदस्ता बने कि नेपाल के हर कोने में रहने वाले व्यक्ति को लगे कि मेरा भी फूल उस गुलदस्ते में है। मेरे फूल की महक भी उस गुलदस्ते में है। कभी मधेसी को यह नहीं लगना चाहिए कि हमारा पूछने वाला कौन? कहीं पहाड़ी को यह नहीं लगना चाहिए कि हमारा पूछने वाला कौन? माओवादी को यह नहीं लगना चाहिए कि हमारा पूछने वाला कौन? ये संविधान ऐसा होना चाहिए कि जिसमें हर किसी की आवाज़ हो, हर किसी के सपने हों, हर किसी के अरमान हों, हर किसी को काम करने का अवसर हो। इस काम में नेपाल की संविधान सभा बहुत अच्छे ढंग से आगे बढ़ रही है, लेकिन समय बहुत जा रहा है।

इसलिए मैं आज सार्वजनिक रूप से आज नेपाल के सभी राजनीतिक नेताओं से आग्रह करूंगा कि संविधान का निर्माण सहमति से ही करने से फायदा होगा। संख्या के बल पर संविधान का निर्माण कभी भी नेपाल का भला नहीं करेगा। सहमति से संविधान बने और आगे चलकर भी - आज भी, भारत का संविधान, इतने वर्ष हो गए, हर वर्ष हम कुछ न कुछ amendment करते ही जाते हैं। और वो amendment दो तिहाई से करते हैं। एक बार संविधान सहमति से बने, बाद में संसद बने और संसद में दो चार चीज़े जोड़नी, कम करनी लगती हैं, तो आप दो तिहाई बहुमत से ज़रूर कर सकते हैं। लेकिन, पहला प्रारूप अगर सबको अपना नहीं लगता है तो नेपाल को बहुत बड़ी कठिनाई आएगी।

आपके एक मित्र देश के नाते, आपको दुख हो, आपको कठिनाई हो और हमें समझ हो, तो वो स्थिति हम देखना नहीं चाहते हैं। फिर एक बार, आज सार्वजनिक रूप से, जिस प्रकार से ज़िंदगी बचाने के लिए ये Trauma Center काम आ रहा है, उसी प्रकार से नेपाल के सपनों को संवारने के लिए संविधान एक अवसर बन करके आ रहा है। मैं चाहूंगा कि संविधान की पवित्रता, उसी पवित्र भाव से..और मैंने कहा था कि ऋषि-मन होगा तो संविधान बनेगा, संविधान सभा में बैठे हर व्यक्ति का ऋषि-मन होना चाहिए और ऋषि-मन को लेकर संविधान का निर्माण होगा, ये मैंने आग्रह से कहा था।

मैं आज फिर नेपाल की धरती पर आया हूं। मैं विश्वनाथ की धरती पर काम करता हूं, पशुपतिनाथ की धरती पर आया हूं। तो मेरा भी आपको प्रार्थना करने का हक बन जाता है। मैं प्रार्थना करने आया हूं। मैं उसी धरती से आया हूं। बोध गया से मैं आज एक पौधा ले करके आया हूं, जो हमारे एम्बेसेडर लुम्बिनी में जा करके उसको रोपित करने वाले हैं। एक ऐसा संदेश ले करके आया हूं जो हमें सांस्कृतिक प्राणशक्ति देता रहता है और उस भरोसे भी मैं कह सकता हूं कि मैं प्रार्थना करता हूं कि आप संविधान बनाने के काम में विलंब मत कीजिए। सहमति से बनाने का ही प्रयास कीजिए और सारे रास्ते नए संकेतों को जन्म देंगे। मैं अयोध्या और जनकपुरी का नाता जानता हूं, इसलिए भी हम लोगों को आपसे प्रार्थना करने का हक बनता है कि आप सहमति से संविधान का निर्माण कीजिए, जल्द कीजिए। लोगों की आशाओं पर आप खरे उतरें।

आप देखिए कि आप लोगों का नेतृत्व नेपाल को कहां से कहां पहुंचाएगा और युग इस भूभाग के भविष्य का है। एशिया के भविष्य का समय है। नेपाल को ये मौका चूकना नहीं चाहिए। विश्व के अंदर एक ताकत बन करके नेपाल ने खड़े होना चाहिए। लोकतांत्रिक व्यवस्था नेपाल को एक नई ताकत देगी, नई पहचान देगी, विश्व नेपाल को स्वीकार करने लग जाएगा। ये स्थिति आपके हाथों में है, मौका आपके पास है। 30-40 दिन का समय बचा है। मैं विश्वास करता हूं कि इस काम को आप आगे बढ़ाएंगे।

फिर एक बार, ये Trauma Center यहां के किसी भी पीड़ित को बचाने के काम आएगा, भारतवासियों को बहुत संतोश होगा। हमारे लिए एक प्रकार से 'सेवा परमोधर्म', जीव-दया का ये काम हुआ है, एक मन के संतोश के साथ, मुझे इस अवसर पर आने का अवसर मिला, मैं आपका बहुत बहुत आभारी हूं। प्रधानमंत्री जी का बहुत बहुत आभारी हूं। उनके परिवार में संकट होने के बाद भी, जिस उमंग और उत्साह के साथ इस पूरे सार्क समिट की आप चिंता कर रहे हैं। पूरा नेपाल अभिनंदन का अधिकारी है। मैं ऐयरपोर्ट से उतरा हूं, मैं देख रहा हूं, क्या उत्साह है, क्या उमंग है। आपने सार्क देशों

के सभी नेताओं का दिल जीत लिया है। इन व्यवस्थाओं के लिए नेपाल ने जो ताकत दिखाई है, अपनापन दिखाया है, बहुत बहुत अभिनंदन के अधिकारी हैं। प्रधानमंत्री जी को और पूरे नेपाल को मैं हृदय से नमन करता हूँ, बहुत बहुत अभिनंदन करता हूँ।

धन्यवाद।

महिमा वशिष्ट / रजनी त्यागी

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

11-दिसंबर-2014 17:38 IST

रूस के राष्ट्रपति की सरकारी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का मीडिया वक्तव्य

राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और मीडिया के सदस्यों,

राष्ट्रपति पुतिन का भारत में स्वागत करते हुए सचमुच बहुत प्रसन्नता हो रही है। हम पहले दो बार विश्व की दो विपरीत अलग-अलग धुरियों-ब्राजील और ऑस्ट्रेलिया में मिले थे। मुझे दिल्ली में वार्षिक शिखर बैठक के लिए उनकी मेजबानी करने का सम्मान मिला है। नई शताब्दी की शुरुआत से श्री पुतिन दोनों देशों के बीच भागीदारी के प्रमुख रचनाकार रहे हैं।

राष्ट्रपति पुतिन और प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने वर्ष 2000 में वार्षिक शिखर बैठकों की शुरुआत की थी। नवम्बर, 2001 में जब प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी ने मास्को में पहले शिखर सम्मेलन में भाग लिया उस समय मैं गुजरात और अस्ताराखान के बीच सहयोगी राज्य यानी सिस्टर स्टेट के समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए वहीं मास्को में था।

राष्ट्रपति पुतिन एक ऐसे महान राष्ट्र के नेता हैं जिसके साथ हमारी अनूठे आपसी विश्वास और सदभाव की मैत्री है। हमारी सामरिक भागीदारी की विषय वस्तु की कहीं कोई समानता नहीं की जा सकती। रूस की जनता का भारत के प्रति समर्थन हमारे इतिहास में कठिन क्षणों में भी बना रहा है। यह भारत के विकास, सुरक्षा और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की मजबूती का स्तम्भ भी रहा है। भारत अपनी चुनौतियों का सामना करते हुए भी रूस के साथ हमेशा खड़ा रहा।

वैश्विक राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के स्वरूप और चरित्र में परिवर्तन आ रहा है। इस संबंध का महत्व और भारत की विदेश नीति में इस के अद्वितीय स्थान में हालांकि परिवर्तन नहीं आएगा। दोनों देशों के लिए हमारे संबंधों का महत्व कई तरीकों से आने वाले वर्षों में और बढ़ेगा।

रूस कई दशकों से भारत का प्रमुख रक्षा भागीदार रहा है। प्रधानमंत्री के रूप में दिल्ली से बाहर मैं पहली यात्रा पर वायुसेना के नये कैरियर जहाज आईएनएस विक्रमादित्य में गया। यह हमारे समुद्र में हमारे रक्षा सहयोग के महान प्रतीक के रूप में तैरता दिखाई देता है। आज हालांकि भारत के सामने विकल्प बढ़ गये हैं फिर भी रूस हमारा अत्यंत महत्वपूर्ण रक्षा भागीदार बना रहेगा। हमने पिछले छः महीनों में सेना के तीनों अंगों के संयुक्त अभ्यास किए हैं।

राष्ट्रपति पुतिन और मैंने रक्षा परियोजनाओं के व्यापक क्षेत्र पर परिचर्चा की है। हमने मेक इन इंडिया समेत भारत की प्राथमिकताओं के अनुरूप दोनों देशों के बीच रक्षा संबंध बनाने के तौर तरीकों पर भी चर्चा की।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि रूस ने अपने अति उन्नत हेलिकॉप्टरों का पूरी तरह भारत में निर्माण करने की पेशकश की है। इसमें भारत से निर्यात की संभावना भी शामिल है। इसे सैन्य और असैन्य दोनों उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। हम इस पर तेजी से आगे कार्यवाही करेंगे।

मैंने प्रस्ताव किया कि रूस को अपने देश के रक्षा उपकरणों के हिस्से पुर्जों के निर्माण की सुविधाएं भारत में विकसित करनी चाहिए। श्री पुतिन ने मेरे अनुरोध पर बहुत अनुकूल प्रतिक्रिया दी।

भारत के आर्थिक विकास और यहां के युवकों के लिए रोजगार विकसित करने के लिए ऊर्जा सुरक्षा महत्वपूर्ण है। रूस भी इस क्षेत्र में प्रमुख भागीदार है।

मुझे खुशी है कि कुंडनकुलम परमाणु विद्युत संयंत्र की पहली इकाई में उत्पादन हो रहा है। इससे भारत की मौजूदा परमाणु विद्युत क्षमता में 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। हम कम से कम एक-एक हजार मेगावाट क्षमता की तीन और इकाइयां संस्थापित करने की स्थिति में हैं। हमने आज कम से कम दस और रियेक्टरों के साथ परमाणु ऊर्जा के महत्वाकांक्षी कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई है। इसमें सुरक्षा के ऐसे मानक होंगे जो विश्व में सबसे सुरक्षित माने जाएंगे। इसमें भारत में ही उपकरणों और हिस्सों पुर्जों का निर्माण किया जाएगा। इससे हमारी मेक इन इंडिया नीति को बल मिलेगा।

रूस विश्व में पेट्रोलियम संसाधनों का शीर्ष स्रोत है और भारत विश्व में इनका सबसे बड़ा आयातक है। हमारी घनिष्ठ मैत्री के बावजूद इस क्षेत्र में हमारा सहयोग निराशाजनक रहा है। हमने आज कुछ महत्वपूर्ण समझौतों के साथ नई शुरुआत की है। इतना ही नहीं हम तेल और प्राकृतिक गैस में भागीदारी का महत्वाकांक्षी एजेंडा बनाएंगे।

हमने आज कई फैसले लिए हैं और कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। इनसे आज के विश्व में हमारे साझे विश्वास की झलक मिलती है और हमारे जीवंत आर्थिक संबंधों से सशक्त सामरिक भागीदारी की बुनियाद बनती है। इसी तरह शिक्षा, संस्कृति और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में दोनों देशों की जनता के बीच घनिष्ठ संपर्क भी महत्वपूर्ण है।

मैं यूरोएशियन आर्थिक संघ के साथ भारत के घनिष्ठ संबंधों के लिए समर्थन देने पर राष्ट्रपति पुतिन का धन्यवाद करता हूं। अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा हमें यानी दोनों देशों को बेहतर तरीके से जोड़ेगा और आज हम दोनों मिलकर विश्व हीरा सम्मेलन-वर्ल्ड डायमंड कांफ्रेंस में उपस्थित रहेंगे। इससे आर्थिक संबंधों को मजबूत बनाने के लिए हमारा नया दृष्टिकोण उजागर होता है।

राष्ट्रपति पुतिन और मैं इस बात पर सहमत हैं कि विश्व में यह एक चुनौतीपूर्ण क्षण है। हमारी भागीदारी और एक दूसरे के हितों के लिए सदैव रही सशक्त संवेदनशीलता दोनों देशों की मजबूती का स्रोत बनेगी।

मैं चेचेन्या में आतंकी हमलों में मारे गये लोगों के प्रति अपनी ओर से गहरा शोक व्यक्त करता हूं। इससे हमारी कई साझी चुनौतियों का भी पता चलता है। सहयोग के लिए हमारे प्राथमिकता के क्षेत्र में आतंकवाद और उग्रवाद को काबू पाना; अफगानिस्तान में शांति और स्थिरता को बढ़ावा देना; स्थिर, संतुलित, शांतिपूर्ण और समृद्ध एशिया प्रशांत के लिए काम करना; और अन्य देशों में विकास के लिए सहयोग देना शामिल है।

ब्रिक्स, पूर्व एशिया शिखर बैठक और जी-20 जैसे संगठनों ने हमारे सहयोग का दायरा भी विस्तृत बना दिया है। यह राष्ट्रपति पुतिन की 11वीं वार्षिक शिखर बैठक और मेरी पहली ऐसी बैठक है। इस शिखर बैठक से इस भागीदारी के असाधारण महत्व और मूल्य तथा शक्ति में मेरी प्रतिबद्धता मजबूत हुयी है। मुझे विश्वास है कि हमारे द्विपक्षीय सहयोग और हमारी अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी में आने वाले वर्षों में नई ऊर्जा आयेगी और यह नयी बुलंदियों को छूएगी।

विजयलक्ष्मी कासोटिया/एसपी/डीसी -7534

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

28-अक्टूबर-2014 19:10 IST

वियतनाम के प्रधानमंत्री महामहिम न्युन तंग जुंग के साथ संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन का मूल पाठ

Your Excellency, प्रधान मंत्री न्युन तंग जुंग, मीडिया के सदस्यों

भारत में प्रधान मंत्री न्युन तंग जुंग का स्वागत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। भारत की यह उनकी तीसरी यात्रा है। यह हमारे दोनों देशों के बीच मजबूत रिश्तों के प्रति उनके विश्वास और रुचि का प्रमाण है।

नई सरकार बनने के बाद हमने शीघ्रता से एशिया पैसिफिक क्षेत्र में अपनी engagements को बढ़ाया है, क्योंकि यह क्षेत्र भारत के भविष्य के लिए अति महत्वपूर्ण है।

और यह कोई आश्चर्य नहीं कि इन प्रयासों में वियतनाम को एक प्रमुख दर्जा दिया गया है। जैसा आप जानते हैं, हमारे राष्ट्रपति जी ने सितंबर में वियतनाम की अत्यंत सफल State Visit की; हमारी विदेश मंत्री भी अगस्त में वियतनाम गई थीं।

भारत और वियतनाम के बीच प्राचीन आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संबंध हैं। और प्रधान मंत्री न्युन तंग जुंग द्वारा दिल्ली आने से पहले बोध गया की यात्रा करना इस बात का प्रमाण है। हम दोनों ही विकासशील देश हैं जिन्होंने हमेशा एक दूसरे का समर्थन किया है और हर कठिन मोड़ पर एक दूसरे के साथ खड़े रहे हैं। वियतनाम के लोगों ने जिस साहस, दृढ़ संकल्प और धैर्य से अपने देश की चुनौतियों का सामना किया है, उसका सम्मान हम करते हैं।

आज, दोनों देश की समृद्धि को बढ़ाने और हमारे पास-पड़ोस में शांति और स्थिरता कायम करने के लिए हमारी साझेदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। Maritime security में हमारे समान हित हैं। हम दोनों यह विश्वास करते हैं कि सामुद्रिक व्यापार और परिवहन में कोई बाधा नहीं होनी चाहिए और हर विवाद को शांतिपूर्ण तरीके से अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के आधार पर सुलझाना चाहिए।

आज की वार्ता के दौरान, हमारे क्षेत्र की स्थिति, और हमारे रिश्तों को कैसे प्रगाढ़ बनाया जाए, इन सबके संबंध में प्रधान मंत्री न्युन तंग जुंग और मेरे विचारों में बहुत समानता थी।

रक्षा क्षेत्र में वियतनाम के साथ सहयोग हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। वियतनाम की सेना और सुरक्षा बलों को आधुनिक बनाने के लिए भारत प्रतिबद्ध है। इसके अंतर्गत हमारे चल रहे ट्रेनिंग प्रोग्राम, संयुक्त अभ्यास और defence equipment में सहयोग का विस्तार होगा। हम जल्द ही 100 मिलियन अमरीकी डॉलर की Line of Credit को operationalise करेंगे जिससे वियतनाम भारत से नए naval vessels प्राप्त करेगा। Counter-terrorism सहित सुरक्षा क्षेत्र में आपसी सहयोग को बढ़ाने के लिए हमने सहमति जताई है।

हम अंतरिक्ष क्षेत्र में अपने सहयोग को बढ़ाने पर भी सहमत हुए हैं। इसमें space applications तथा वियतनाम की satellites को भारत द्वारा लांच करना शामिल है। हम सिविल परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण कार्यों में इस्तेमाल पर सहयोग के लिए भी सहमत हैं।

हमारे आर्थिक संबंध, जो कि इस समय काफी सीमित हैं, को और मजबूत करने की आवश्यकता पर हमने जोर दिया है। यह हमारी strategic partnership का एक अहम हिस्सा है। आपसी व्यापार और वियतनाम में energy, infrastructure, textiles, chemicals, machinery, agro-processing और information technology जैसे क्षेत्रों में भारत की भागीदारी को बढ़ाने के लिए हमने बातचीत की है। वियतनाम द्वारा अपनी industry और economic linkages को diversify करने के प्रयासों के समर्थन में हमने नई lines of credit पर विचार विमर्श करने की पेशकश की है।

वियतनाम द्वारा भारतीय कंपनियों को infrastructure projects व Bank of India को लाइसेंस देने के निर्णयों, और Jet Airways तथा Vietnam Airlines द्वारा सीधी हवाई सेवाओं की शुरुआत, हमारे आर्थिक संबंधों में आई नई गति का प्रतीक हैं।

मैंने वियतनाम द्वारा तेल और गैस के क्षेत्र में भारत के साथ सहयोग बढ़ाने के लिए दिखाई गई प्रतिबद्धता और नए exploration blocks के प्रस्ताव के लिए प्रधान मंत्री को धन्यवाद दिया। इस क्षेत्र में और इससे जुड़े उद्योग में हम निश्चित रूप से आगे बढ़ेंगे।

सांस्कृतिक, शैक्षिक और लोगों के बीच आपसी संपर्क हमारे संबंधों के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। दोनों देशों के बीच आपसी संपर्क और पर्यटन को बढ़ाने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। जैसे आज किए गए समझौते हैं - "मी सों" में प्राचीन "चाम मन्दिरों" का संरक्षण और पुनर्निर्माण, नालंदा विश्वविद्यालय में वियतनाम की भागीदारी; और Audio Visual क्षेत्र में आपसी सहयोग।

मैंने वियतनाम द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ में 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किए जाने के भारत के प्रस्ताव को Co-Sponsor करने के लिए, प्रधान मंत्री जुंग को धन्यवाद दिया है।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत की उम्मीदवारी हेतु वियतनाम ने जो निरंतर समर्थन किया है, उसके लिए मैंने प्रधान मंत्री जुंग को धन्यवाद दिया है। क्षेत्र में शांति, स्थिरता और समृद्धि के लिए, आगामी East Asia Summit और India-ASEAN Summit सहित अन्य क्षेत्रीय मंचों में हम निरंतर मिलकर कार्य करते रहेंगे।

मुझे विश्वास है कि 2015 में जब वियतनाम भारत के लिए ASEAN में Coordinator का दायित्व संभालेगा तब भारत और ASEAN के संबंध और गहरे हो जाएंगे।

मुझे यह कहते हुए अत्यंत खुशी हो रही है कि प्रधान मंत्री न्यून तंग जुंग की स्टेट विजिट और विगत माह में हमारे राष्ट्रपति के दौरे से न केवल हमारी पारंपरिक मित्रता मजबूत हुई है, बल्कि हमारी Strategic Partnership को भी एक नई ऊर्जा और गति मिली है।

धन्यवाद - कैम अर्न।

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

01-अक्टूबर-2014 13:46 IST

**प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा, अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा के साथ संयुक्त प्रेस वक्तव्य के दौरान दी गयी
टिप्पणी का मूल पाठ**

प्रेसिडेंट ओबामा और मीडिया के सभी सदस्य

सबसे पहले, मैं प्रेसिडेंट ओबामा के निमंत्रण और उनके गर्मजोशी से भरे स्वागत और आदर सत्कार के लिए मैं उनका आभार प्रकट करना चाहता हूँ।

पदभार ग्रहण करने के कुछ ही महीनों के अंदर, अमरीका आकर प्रेसिडेंट ओबामा से मिलकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई है।

यह खुशी की बात है कि दोनों देशों के मिशनों के मार्स पहुंचने के कुछ ही दिनों के भीतर हम आज यहां मिल रहे हैं। भारत और अमरीका के बीच मार्स पर Summit के बाद, अब यह Summit धरती पर हो रहा है। यह शुभ संयोग हमारे संबंधों की क्षमता का प्रतिबिम्ब है।

इस यात्रा के दौरान, खासकर President Obama से हुई बातचीत से, मेरा विश्वास और दृढ़ हो गया है कि भारत और अमेरिका के बीच वैश्विक Partnership होना स्वाभाविक है। जो हमारे जुड़े हुए मूल्यों, हितों और digital age में हमारी क्षमताओं पर आधारित हैं।

President Obama और मैंने अपनी सहज आर्थिक प्राथमिकताओं के बारे में विस्तार से चर्चा की।

मेरा विश्वास है कि निकट भविष्य में भारत का एक बड़े पैमाने पर आर्थिक विकास और परिवर्तन होगा। भारत में हम Policy और Process दोनों को बदलने पर बल दे रहे हैं, जिससे भारत के साथ Business करना सहज और लाभदायक होगा। भारत में आर्थिक अवसर तेजी से बढ़ रहे हैं। मुझे विश्वास है कि भारत-अमेरिका के आर्थिक संबंधों में तीव्र गति से विस्तार होगा।

मैंने President Obama से यह आग्रह किया है कि वह ऐसे कदम उठाएं जिससे भारत की Service कंपनियां US की market को आसानी से access कर सकें। हम दोनों Civil Nuclear Cooperation को आगे ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं और इससे जुड़े मुद्दों को जल्दी सुलझाने के प्रति गंभीर हैं। यह भारत की energy security के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

WTO के मुद्दों के ऊपर हमारी बड़ी खुलकर बातचीत हुई। भारत Trade facilitation का समर्थन करता है। परंतु मेरी यह भी अपेक्षा है कि ऐसा समाधान निकले जो हमारी Food Security की चिंताओं को भी दूर करे। मेरा विश्वास है कि यह जल्दी किया जा सकेगा।

Climate Change हम दोनों के लिए प्राथमिकता का विषय है। हमने तय किया है कि इस विषय पर आपसी संवाद व सहयोग बढ़ाएंगे।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उभर रही चुनौतियों को लेकर भी दोनों देशों के विचारों में समानता है। इसमें Asia Pacific क्षेत्र में शांति तथा स्थिरता भी शामिल हैं। अमरीका हमारी 'Look East and Link West' Policy का अभिन्न अंग है।

दक्षिण एशिया सहित पश्चिम एशिया और अन्य क्षेत्रों में पनप रहे आतंकवाद की चुनौतियों पर हमने विस्तार से विचार-विमर्श किया। हमने counter terrorism और intelligence में पारस्परिक सहयोग बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की।

अफगानिस्तान के लोगों ने हिंसा और आतंकवाद पर विजय पाने के अपने संकल्प का प्रदर्शन किया है। हम दोनों ने अफगानिस्तान को सहायता देते रहने की हमारी प्रतिबद्धता और इस क्षेत्र में अधिक coordination की आवश्यकता पर

चर्चा की।

अफ्रीका में इबोला (Ebola) crisis को लेकर दोनों पक्षों में गहरी चिंता है। भारत ने इस crisis से निपटने और अन्य सहायता के लिए 12 million dollars की मदद देने का commitment किया है।

हमारे साझा हितों को ध्यान में रखकर हम अपने security dialogue और defence relations को और बढ़ाएंगे। मैं US Defence Companies को विशेषकर भारत की Defence manufacturing capacities के विकास में भाग लेने के लिए आमंत्रित करता हूँ।

पिछले चार दिनों में मैंने भारत और भारत-अमेरिकी partnership के प्रति अमेरिका में अपार रुचि और उत्साह देखा है। वह हमारे पारस्परिक संबंधों से जुड़ी उनकी आशाओं और उत्साह का प्रमाण है। और यही हमारी शक्ति और प्रेरणा होगी। इन संबंधों को नई ऊर्जा और दृढ़ता के साथ एक नए स्तर पर ले जाने में।

मैंने President Obama तथा उनके परिवार को भारत आने का निमंत्रण दिया है। मैं President Obama को, अमेरिका की जनता को और विशेषकर अमेरिका में बसे भारतीय समुदाय के लोगों को उनकी गर्मजोशी तथा भव्य सत्कार के लिए धन्यवाद देता हूँ।

SC/AK

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

19-नवंबर-2014 14:26 IST

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, फिजी में सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत का मूल पाठ

नमस्ते। मैं तय नहीं कर पा रहा हूँ कि किस विषय पर बोलूँ और आप क्या सुनना चाहते होंगे। फिजी की यह मेरी पहली मुलाकात है, और भारत की प्रधानमंत्री की 33 साल के बाद मुलाकात है। यहां के जीवन में ऐसे कई मूल्य हैं जो हमें और भारत को जोड़ते हैं और यह भारत का भी दायित्व बनता है और फिजी का भी दायित्व बनता है कि हम उन मूल्यों को जितना अधिक बढ़ावा दें, उन मूल्यों को जितनी अधिक ताकत दें, उतना हमारी विशालता में भी फर्क पड़ेगा और हमारी ताकत में भी बढ़ोतरी होगी।

लोकतंत्र। Democracy. आज दुनिया में उसका जो मूल्य है, उसको जो महत्त्व है, किसी न किसी रूप में दुनिया के सभी देश लोकतंत्र की ओर आगे बढ़ने के लिए मजबूर हुए हैं। कुछ लोग चाहते हुए करते होंगे, कुछ लोग मजबूरन करते होंगे, लेकिन आज विश्व में एक वातावरण बना है कि अगर वैश्विक प्रवाह में हमें अपनी जगह बनानी है तो लोकतंत्र दुनिया के साथ जुड़ने का एक सबसे सरल रास्ता बन गया है। फिजी ने बहुत उतार-चढ़ाव देखे हैं, लेकिन एक खुशी की बात है कि कुछ महीने पहले लोकतांत्रिक ढंग से आपने अपनी सरकारी चुनी है। फिर एक बार फिजी ने लोकतंत्र में अपनी आस्था प्रकट की है और जब फिजी लोकतंत्र में आस्था प्रकट करता है, तब वो सिर्फ फिजी तक समिति नहीं रहता है। लोकतंत्र एक ऐसी ताकत है जो फिजी को विश्व के लोकतांत्रिक फलक पर उसकी जगह बना देता है, और लोकतंत्र एक ऐसी व्यवस्था है, जहां हर एक को अपना जीवन, अपना लक्ष्य, अपने इरादे, अपने सपने, उसे साकार करने का रास्ता चुनने का हक रहता है। वो अपनी जिंदगी के फैसले एक राष्ट्र के रूप में भी एक सामूहिक मन के साथ कर सकता है। अगर कोई गलती भी हो जाए तो लोकतंत्र एक ऐसी व्यवस्था है कि उस में सुधार की पूरी संभावना रहती है।

मैं आशा करूंगा कि फिजी ने जो लोकतंत्र के मार्ग को स्वीकार किया है, वो और फले-फूले-खिले। यहां का मन भी लोकतांत्रिक बने, व्यवस्थाएं भी लोकतांत्रिक बने और न सिर्फ फिजी.. इस भू-भाग के और छोटे-छोटे कई टापू है, देश है, उनके जीवन पर भी फिजी की लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का प्रभाव पैदा हो और मुझे विश्वास है कि आने वाले समय में यहां का लोकतंत्र और अधिक मजबूत होगा, और अधिक सामर्थ्यवान होगा।

दुनिया में एक क्षेत्र पर आज सर्वाधिक ध्यान केंद्रित हो रहा है और वो है - ज्ञान, शिक्षा। दुनिया इस बात को मानती है कि 21वीं सदी ज्ञान की सदी है और अगर 21वीं सदी ज्ञान की सदी है, तो 21वीं सदी में जो भी आगे बढ़ना चाहता है, जो भी अपनी जगह बनाना चाहता है, वो गरीब से गरीब देश क्यों न हो, अमीर से अमीर देश क्यों न हो। ताकतवर देश क्यों न हो, लेकिन उसे भी ज्ञान अर्जित करने के मार्ग पर जाना पड़ेगा, ज्ञान के आधार पर आगे बढ़ना पड़ेगा। और ज्ञान के फलक इतने विस्तृत हो रहे हैं। पूरा ब्राह्मण ज्ञान पिपासुओं के लिए एक पूरा खुला मैदान है और पूरे ब्रह्मण की जो स्थिति है उसमें आज मनुष्य जो जानता है वो शायद एक प्रतिशत भी नहीं जानता होगा। अभी तो और कुछ जानना बाकी है। और उसके लिए ज्ञान हो, रीचर्स हो, प्रयोग हो। इस पर जितना बल मिलता है उतना ही जीवन नई ऊंचाईयों को प्राप्त करता है और हमारी universities, हमारे शिक्षा के दान एक तो उनका रास्ता यह हो सकता है। जो किताबों में है वो परोसते चल जाए। पीढ़ी दर पीढ़ी हम देते चले जाए। हमारे दादा जो कितना पढ़ते थे, हम भी वही पढ़ें और हमारे पोते जो पढ़ने वाले हैं हम भी उनके लिए छोड़ कर चले जाए। तो वो जीवन की स्थगितता होती है, एक रूकावट आ जाती है। लेकिन हर पीढ़ी आने वाली पीढ़ी के लिए कुछ खोज करके जाती है, नये आविष्कार करके जाती है। कुछ नया प्राप्त करके दुनिया को देने का सामर्थ्य रखती है।

तो खोज करने वाली जो पीढ़ी है, वो क्षेत्र के लोग हैं, वो relevant बने रहते हैं, नहीं तो वो भी irrelevant हो जाते हैं। और इसलिए universities का काम रहता है कि मूलभूत तत्वों को तो जरूरत हमें पढ़ाना पड़ेगा, लेकिन मूलभूत तत्वों को पढ़ने-पढ़ाने के बाद उन्हीं मूलभूत तत्वों के आधार पर नये आविष्कार की और कैसे चला जाए? नई खोज के लिए कैसे चला जाए? मानव कल्याण की जो आवश्यकतायें हैं, वो आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हम क्या कर सकते हैं?

विश्व ने पिछले 200 साल में जितने आविष्कार किए हैं, उससे ज्यादा गत 30-40 साल में किये हैं। जगत पूरी तरह बदल चुका है। नये आविष्कारों ने जीवन को समेट लिया है। हम कल्पना कर सकते हैं 20 साल पहले मोबाइल फोन का क्या

रोल था और आज क्या रोल है। एक information technology ने जीवन को कैसे बदल दिया। जीवन की तरफ देखने का दृष्टिकोण कैसे बदल गया, जीवन जानने के रास्ते कैसे बदल गए। एक अविष्कार पूरे युग को कैसे बदल देता है, यह हमारे सामने हुई घटना है। क्योंकि हम उस जीवन को भी जानते हैं जबकि मोबाइल फोन या connectivity नहीं थी और हम उस जीवन को भी जानते हैं जो उसके बिना जीने के लिए मुश्किल कर देता है। उन दोनों चीजों के हम साक्षी हैं। अब ऐसे अवस्था के लोग हैं जो दोनों के बीच ऐसे खड़े हैं जो कल भी देखा है और आने वाले कल की संभावना भी देख रहे हैं और यही हमें प्रेरणा देती है। और इसलिए universities वो सिर्फ ज्ञान परोसने के केंद्र नहीं होते हैं, universities ज्ञान अर्जित करने के केंद्र बनते हैं, सम्बोधन करने के केंद्र बनते हैं और मुझे विश्वास है भले ही यह university नहीं हो, लेकिन यह नई university भी आने वाले दिनों में एक पूरे region के लिए, यहां की पूरी समस्याओं के लिए, सामान्य मानव के जीवन में बदलाव लाने के लिए वो कौन सा सामर्थ्य पड़ा हुआ है। जिस सामर्थ्य को तब तक हमने छुआ नहीं है, उस सामर्थ्य को कैसे छुआ जाए? और उसमें हम कैसे आगे बढ़ सकते हैं, इसकी दिशा में अगर प्रयास होता है तो मैं मानता हूं कि university गया, काम सार्थक हो जाता है।

भारत में नई सरकार बनी है। अभी तो इस सरकार की उम्र छह महीने है। लेकिन भारत सिर्फ भारत के लिए नहीं जी सकता है। न ही भारत का निर्माण सिर्फ भारत के लिए बना है। हमारे ऋषियों ने, मुनियों ने, महापुरुषों ने यह हमेशा कहा है कि भारत एक वैश्विक दायित्व को लेकर पैदा हुआ है। उसका जीव मात्र के लिए जगत मात्र के लिए कोई-न-काई दायित्व है। और उस दायित्व को पूरा करने के लिए उस देश को पहले सज्य होना पड़ता है। अपने आप को सामर्थ्यवान बनाना पड़ता है। भारत वो देश नहीं है कि वहां के करोड़ों-करोड़ों नागरिक भरने के लिए देश चलाया जाए। भारत वो देश है जिसने विश्व को कुछ देने की जिम्मेदारी उसके सिर पर है। वो क्या देगा, कब देगा, कैसे देगा, कौन देगा - यह तो समय ही तय करेगा। लेकिन उसका कोई वैश्विक दायित्व है इस बात में किसी को कोई आशंका नहीं है।

दुनिया कहती है कि 21वीं सदी एशिया की सदी है। और कुछ लोग कहते हैं कि एशिया में.. कुछ लोगों को लगता है कि चीन की सदी है। किसी को लगता है कि हिंदुस्तान की सदी है। लेकिन इस बात में किसी को कोई दुविधा नहीं है कि 21वीं सदी एशिया की सदी है। अगर 21वीं सदी ज्ञान की सदी है, और 21वीं सदी एशिया की सदी है तो फिर तो भारत की जिम्मेदारी और बढ़ना स्वाभाविक है। लेकिन क्योंकि जब-जब मानवजात ने ज्ञान युग में प्रवेश किया है तब-तब भारत विश्व गुरु के स्थान पर रहा है। पूरा पाँच हजार साल का इतिहास देखा जाए। सोने की चिड़िया कहलाता था। ज्ञान युग - उसका नेतृत्व हमेशा भारत ने किया है। शायद बाहुबल में वो काम नहीं आया होगा, धनबल में भी काम नहीं आया होगा, लेकिन जब ज्ञान के बल के सामर्थ्य की बात आती है तो भारत हमेशा आगे निकल चुका है। और इसलिए भारत का दायित्व बनता है कि वो ज्ञान के माध्यम से और नई विधाओं का आविष्कार करके दुनिया के सामने अपनी ताकत को दिखाए। और भारत में सामर्थ्य है। तभी भारत ने मंगलयान में सफलता प्राप्त की। कुछ लोगों को लगता होगा कि भई लोग चंद्र पर जा रहे हैं अब मंगल पर गए उसमें क्या है, लेकिन पहले ही प्रयास में मंगल पर पहुंचने वाले हम अकेले हैं। और आज diesel और petrol के दाम इतने हैं कि एक किलोमीटर कहीं जाना है तो कम से कम दस रुपये खर्चा होता है। हमें मंगलयान पहुंचने में एक किलोमीटर का सिर्फ सात रुपया खर्चा हुआ है।

यह संभव इसलिए होता है कि युवा शक्ति में सामर्थ्य है और भारत ने इसे एक सौभाग्य भी माना है, एक जिम्मेवारी भी मानी है और एक अवसर भी माना है। सौभाग्य यह है कि हम उस युग के अंदर हैं, जबकि दुनिया में हिंदुस्तान सबसे जवान है। 65% जनसंख्या हिंदुस्तान की 35 साल से कम उम्र की है। जिस देश में 800 मिलियन लोग जो 35 साल से कम उम्र के हैं, जबकि सारी दुनिया में सबसे ताकतवर देश भी बूढ़े होते चले जा रहे हैं, तो यह एक अवसर है, पूरे मानव जात की सेवा करने के लिए हिंदुस्तान के नौजवान के पास अवसर है। उसे अपने आप को सज्य करना होगा। और हमारी सरकार का प्रयास यह है कि हमारी युवा शक्ति को अवसर दें। और इसमें बहुत बड़ा अभियान चलाया है - Skill India. दुनिया को जो work force की जरूरत है उस प्रकार का Human Resource Development कैसे हो, Skill Development कैसे हो? हर भुजा में हुनर कैसे हो? ताकि वो दुनिया को कुछ-न-कुछ दे सके। और ये हुनर ही तो है जिसके कारण सदियों पहले भारतीय दुनिया के कोने-कोने में पहुंचे थे - आपके पूर्वज Fiji भी तो आए थे।

वो हुनर, वो सामर्थ्य, विश्व के आवश्यकताओं के अनुसार हो हुनर। विश्व पर बोझ बनने के लिए नहीं। विश्व के भले-भलाई के लिए इस युवा शक्ति को Skill Development के माध्यम से सज्य करना, जोड़ना, उसका एक Global Exposure बने। उसका सोचने का दायर Global बने। वे वैश्विक परिवेश में सोचने लगे। वे वैश्विक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपने आप को सज्य करने के लिए आतुर हो। ऐसी एक व्यवस्था को बनाने का प्रयास हमने प्रारंभ किया है, और मुझे पूरा भरोसा है कि ये जिम्मेदारी हिंदुस्तान निभाएगा। दुनिया की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भारत इस काम को कर पाएगा।

एक जमाना था शिक्षा का महत्व था। अक्षर ज्ञान का महत्व था। पढ़ने-पढ़ाने का महत्व था। लेकिन वो युग बहुत पीछे रह

गया है। आज कितने ही पढ़े-लिखे क्यों न हों, लेकिन अगर आप Information Technology और Computer से अनभिज्ञ हैं, अगर आपको अज्ञान है, तो कोई आपको शिक्षित मानने को तैयार नहीं है। परिभाषा बदल गई है। और ये नई Technology की गति इतनी तेज है कि अगर आप Computer पर काम कर रहे हैं और अगर आपकी माता जी देखें, या दादी मां देखें, तो गर्व करें, कि “वाह बेटा तूझे इतना कुछ सारा आता है! कैसे करते हो?” लेकिन अगर आपका दस साल का पोता देख ले तो कहता है “क्या दादा! आपको कुछ नहीं आता है!” ये इतना अंतर है दो पीढ़ी में कि जिस काम के लिए आपकी दादी मां गर्व करती है कि मेरा पोता बहुत अच्छा जानता है, उसी व्यक्ति को उसी काम करता हुआ देख करके पोता कहता है कि “दादा तुम्हें कुछ नहीं आता है। आप अनपढ़ हो।”

आप कल्पना कर सकते हैं तीन पीढ़ी मौजूद हों तब कितने दायरे में ज्ञान विज्ञान और technology ने कितना बड़ा दायरा बदल दिया है। और तब जा करके, हम उससे अछूते नहीं रह सकते हैं। एक समय था गरीब और अमीर के बीच की खाई की चर्चा हुआ करती थी। Haves and have-nots की चर्चा हुआ करती दुनिया के अंदर। आने वाले उन दिनों में चर्चा होने वाली है Digital Divide की। और पूरा विश्व अगर Digital Divide का शिकार बन गया, तो जो पीछे रह गया है उसको आगे जाने में दम उखड़ जाएगा। और इसलिए कैसे भी करके दुनिया को इस Digital Divide के संकट से बचाना पड़ेगा। भारत ने कोशिश की है - Digital India का सपना देखा है। जैसे एक सपना देखा Skill India, दूसरा सपना देखा है Digital India. आधुनिक से आधुनिक विज्ञान, आधुनिक से आधुनिक टेक्नोलॉजी उसकी वहां अंगुलियां पर होनी चाहिए। वो सामर्थ्य में से होना चाहिए।

और भारतवासियों के संबंध में लोगों का देखने का दृष्टिकोण बहुत अलग है। मुझे एक घटना बराबर स्मरण आती है। मैं एक बार Taiwan गया था। Taiwan में जो उनका interpreter था, वो Computer Engineer था। और मेरी कोई वहां 7-8 दिन की वहां tour थी, तो मेरे साथ रहता था। वो Taiwanese Chinese language जो लोग उपयोग करते हैं, वह बोलता है तो मुझे वह interpret करता था, वही काम करता था। 24 घंटों मेरे साथ रहता था, तो धीरे-धीरे दोस्ती हो गई। दोस्ती हो गई तो एक दिन फिर हिम्मत करके उसने मुझसे पूछा, आखिर दिनों में, कि “मैं आपके एक बात पूछू? आपको बुरा नहीं लगेगा न?”

मैंने कहा, “नहीं नहीं आप पूछिए।”

“नहीं-नहीं, आपको बुरा लग जाएगा।”

बेचारा संकोच कर रहा था पूछ नहीं रहा था। मैंने कहा “बताइए न क्या पूछना है?”

उसने कहा कि “हमने सुना है, पढ़ा है, कि हिन्दुस्तान तो जादू टोना करने वालों लोगों का देश है। Black Magic वालों का देश है। सांप-सपेरों का देश है।”

बोला “सचमुच में ऐसा देश है?”

मैंने कहा “मुझे देखकर क्या लगता है? मैं तो कोई जादू-वादू तो करता नहीं हूं।”

उसने कहा “नहीं, आपको देखने के बाद ही मन करता है कि पूछू कि क्या है”

मैंने कहा “तुम्हारा सवाल सही है। एक ज़माना था, हमारे पूर्वज सांप-सपेरे की दुनिया में जीते थे। लेकिन अब हमारा बड़ा devaluation हो गया है। अब हमारे में वो सांप वाली ताकत रही नहीं। और इसलिए हम अब mouse से खेलते हैं।”

और हिन्दुस्तान का नवजान mouse पर उंगली दबाने की ताकत रखता है आज - ये सामर्थ्य हमने पैदा किया है। ये नया Digital World है। उसमें भारत के नवजानों ने अपना कमाल दिखाई है। लेकिन इतने से ही सीना तानकर रहने से काम नहीं चलने वाला है। हमने आने वाली शताब्दी के अनुसार को सज्ज करना होगा, और वो हम अगर कर पाते हैं तो और नई ऊंचाईयों को पार करना होगा। और वो हम अगर कर पाते हैं तो हम विश्व को बहुत कुछ दे सकते हैं। हमारा प्रयास उस दिशा में है। हमने एक ऐसा अभियान चलाया है जो यहां हिन्दुस्तान के लोग रहते हैं उनको जरूर मन को पसंद आया होगा। और वो है स्वच्छता का अभियान. Cleanliness. आपके बच्चें हिन्दुस्तान आने की बात होती होगी तो कहते होंगे “नहीं!” उनका नाक सिकुड़ जाता होगा। हम ऐसा देश बनाएंगे, आपके बच्चों को वहां आने का मन कर जाए। उसको नाक सिकुड़ने की इच्छा नहीं होगी। उसको आने का मन कर जाएगा ऐसा देश बनाना है। और उस दिशा में प्रयास कर रहे हैं।

आज सुबह मैं आया, यहां के सरकार ने बहुत ही स्वागत किया सम्मान किया। हमने कुछ घोषणाएं की हैं, कुछ निर्णय किए हैं। एक तो भारत की तरफ दुनिया का बहुत ध्यान है सारी दुनिया भारत की तरफ देख रही है - जाना चाहती हैं आना चाहती हैं। लेकिन आपको कभी-कभी लगता होगा कि अस्पताल जाना अच्छा है, embassy जाना बुरा है। मैं भले ही Fiji में पहली बार आया हूं, लेकिन आपकी पीड़ा का मुझे पता रहता है। लेकिन आप सज्जन लोग हैं इसलिए शिकायत करते नहीं हैं।

हमने निर्णय किया है, कि अब फिजी से और यह Pacific महासागर के टापूओं से आने वाले लोगों के लिए Visa-On-Arrival. बाते छोटी-छोटी होती है, लेकिन वो ही बदलाव लाती है। और उस दिशा में हम काम कर रहे हैं।

आज भारत ने यह भी कहा है कि फिजी में Small or Medium Level की जो industries हैं, उनको upgrade करने के लिए Five Million American Dollar फिजी को हम देंगे। फिजी के नागरिकों को भारत scholarships देती है, यहां के students को, यहां के Trainees को - हमने निर्णय किया है कि वो संख्या अब double कर दी जाएगी।

जो समुद्री तट पर रहने वाले देश हैं। भारत के पास भी बहुत बड़ा समुद्री तट है और जब Global Warming की चर्चा होती है तो समुद्री तट पर रहने वाले सबसे ज्यादा चिंतित होते हैं और कभी पढ़ ले Nostradamus की आघाई तो उनको तो कल ही दिखता है, कल ही डूबने वाला है। और कभी अखबार में आ जाता है कि दो मीटर समुद्र चढ़ जाने वाला है और कभी तीन मीटर, तो वो सोचता है कि मेरा घर तो दूर ले जाओ भाई। एक बहुत बड़ा तनाव रहता है। और उसमें भी एक बार ज्यादा ही waves में उछाल आया तो यार लगता है कि अब तो आया, मौत सामने दिखती है। Global Warming की चिंता है। दुनिया को चिंता है। और ऐसी जगह पर रहने वालों को ज्यादा चिंता है। भारत भी उसमें से एक है। इसकी समस्या का समाधान खोजना पड़ेगा। हमारी जीवनशैली को बदलना पड़ेगा। Exploitation of the nature - यह crime है यह हमें स्वीकार करना पड़ेगा। Milking of nature - इतना ही मनुष्य को अधिकार है। Exploitation of the nature - मनुष्य को अधिकार नहीं है। तो जो बिगड़ा सो बिगड़ा, लेकिन आगे न बिगाड़े - यह जिम्मेवारी हमने निभानी होगी। पूरे विश्व को निभानी होगी। लेकिन जो बिगड़ा है उसको भी बनाने की कोशिश करनी होगी। और इसलिए इस बार हमने तय किया है - One million American dollar से एक Adaption Fund के रूप में एक fund बनाया जाएगा, ताकि इस भू-भाग में Technologically upgradation करके इस Global Warming के दुःभाव से कैसे बचा जा सके, यहाँ के जीवन को कैसे रक्षा मिले, उस दिशा में काम करने का हमने निर्णय किया है।

Global Warming की चर्चा करता हैं तो energy एक ऐसा क्षेत्र है, जहां सबसे ज्यादा चिंता का विषय रहता है। और उसके लिए हमने तय किया है कि renewal energy हो, solar energy हो, wind energy हो, इसकी generation के लिए, इस प्रोजेक्ट को करने के लिए 70 Million American dollar का line of credit देने का।

फिजी की Parliament की Library आधुनिक बने, E-Library बने, उसकी जिम्मेवारी भी भारत लेगा ताकि, हां, उस Library का उपयोग हर कोई कर सके।

यहां राजदूत भवन बनाने का सोचा है। आप लोग मिलकर देखिए, बनाइये, हम लोग आपके साथ रहेंगे।

तो कई ऐसी बातें हैं जिसको ले करके हम देश को नई ऊंचाईयों पर ले जाने का प्रयास... और वो मोदी नहीं कर रहा है, यह सवा सौ करोड़ देशवासी कर रहे हैं। हर हिंदुस्तानी के मन में जज्बा पैदा हुआ है - उसको लगता है "नहीं, मेरा देश ऐसा नहीं रहना चाहिए"। और कभी कभी तो लगता है कि लोग बहुत आगे हैं, सरकार बहुत पीछे है। लेकिन जिस तेज गति से आज देश चल पड़ा है। वो चलता रहेगा और भारत लोकतांत्रिक मूल्य के कारण, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना के कारण "सर्वे भवन्तु सुखीना, सर्वे संतु निरमाहया" यह भाव के कारण, जिसकी सोच, जिसके विचार-आचार में यह चिंतन पड़ा है, वो अगर ताकतवर होता है, तो फिजी का भी भला होता है, इस उपखंड का भी भला होता है, मानवजाति का भी भला होता है। हरेक की भलाई में काम आने वाला देश बन सकता है। तो मैंने प्रारंभ में कहा था - वैश्विक दायित्व को निभाने के लिए राष्ट्र को तैयार होना चाहिए। और जिस दिशा में दुनिया जा रहा रही है, उसमें लगता है कि भारत मूलभूत चिंतन के द्वारा विश्व की बहुत बड़ी सेवा कर सकता है। और उस दिशा में काम करने का प्रयास चल रहा है।

मुझे आप सब के बीच आने का अवसर मिला। मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूं। university को मैं मेरी शुभकामनाएं देता हूं। मैं चाहूंगा कि यहां से भी ऐसे रत्न पैदा हो, जो पूरी मानवजात की सेवा करने का सामर्थ्य रखते हो - ऐसी यहां की शिक्षा- दीक्षा बने।

बहुत-बहुत शुभकमानाएं।

धन्यवाद।

महिमा वशिष्ट / तारा, सोनिका

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

13-नवंबर-2014 21:38 IST

म्यांमार में प्रवासी भारतीयों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

आपका जो हक है वो हक बरकरार रहेगा। मैं आपके हक को पूरा करने की पूरी कोशिश करूंगा। मैं दोबारा आउंगा।

आप सब विदेश में रहते हैं तो अनुभव करते होंगे कि एक भारतीय व्यक्ति के नाते इसके पूर्व दुनिया आपको कैसे देखती थी। देशों की सरकारें और शासक आपको कैसे देखते थे और पिछले कुछ महीनों में आपकी तरफ देखने का दुनिया का दृष्टिकोण कैसे बदला है। विश्व की महासत्ताएं भी भारत की तरफ जिस प्रकार से देख रही हैं, तो एक भारतीय व्यक्ति के नाते आप सबको भी एक गर्व महसूस होता होगा कि "हां भई, हम हिंदुस्तानी हैं!"

लेकिन जब ये अवसर आता है, तब हमारी जिम्मेदारी जरा ज्यादा बढ़ जाती है। पहले तो कोई देखता ही नहीं था, हम किस कोने में पड़े हैं, कोई पूछता ही नहीं था। लेकिन अब! अब हमारा बायां हाथ किस तरफ है, दाहिना हाथ किस तरफ है, सब चीजें बारीकी से देखी जाएंगी। इसलिए भारतीय समाज को - सिर्फ भारत सरकार को और भारत देश को नहीं - विश्व में फैले हुए भारतीय समाज को पूरा विश्व एक विशिष्ट नज़र से इन दिनों देख रहा है। बारीकी से हम लोगों का मूल्यांकन कर रहा है। हम तक पहुंचने के लिए रास्ता खोज रहा है। हमें अपना बनाने के लिए, जो पहले कभी हमारी नमस्ते भी नहीं लेता था, वो आजकल गले लगाने की कोशिश कर रहा है। ये आप सबने भली-भांति अनुभव किया होगा। किया है कि नहीं? ऐसा ही अनुभव आ रहा है? पहले से अभी बदलाव दिखता है? लोग आपके प्रति आदर से देखते हैं?

ये एक ऐसी अमानत हमारे पास है, इस अमानत को संभालना भी है, संवारना भी है। हमें - दुनिया के किसी भी देश में हम क्यों न हों - उस देश का प्यार पाना, उस देश की प्रगति के लिए हमारा योगदान पहले से अधिक बढ़े और हम भी फले फूलें। ऐसा नहीं कि सिर्फ अड़ोस-पड़ोस वाले ही फले फूलें, हम भी फले फूलें। आप विकास की नई ऊंचाइयों को पार करें।

भारत का और यहां का इतिहास बहुत जुड़ा हुआ है। आज़ादी का संघर्ष साथ साथ किया है। हम सुख-दुख के साथी रहे हैं और आज भी यहां के लोग भारत को, एक पुण्य भूमि के रूप में, और भगवान बुद्ध के कारण बहुत आदर और सत्कार के भाव से देखते हैं। हमारी कोशिश है, खास करके, हमारे पड़ोस के जो देश हैं, भारत उनको काम कैसे आए? उनके लिए भारत क्या कर सकता है? और मैं मानता हूं ये भारत की जिम्मेवारी भी है। कुछ दिन पहले मैंने कहा था कि हम एक satellite का निर्माण करके, आकाश में उस satellite को भेजेंगे और वो पूरी तरह SAARC के लिए dedicated होगा। और आज मैं जब म्यांमार में आया हूं, तो मैं ये भी घोषणा करना चाहता हूं कि भारत का ये जो satellite हम SAARC को dedicate करने वाले हैं, उसके सारे लाभ म्यांमार को भी देंगे। इसका सर्वाधिक लाभ health sector में होता है, education में होता है, tele-medicine में होता है, long-distance education में होता है। तो एक प्रकार से आधुनिकतम विज्ञान का लाभ इस धरती को भी मिले, उस दिशा में हम सोचेंगे। हमने ये भी तय किया है कि अभी नेपाल में जब हमारी SAARC देशों की meeting होगी, हमने कहा है कि भारत ये काम, ये जिम्मा उठाने के लिए तैयार है। वो काम है, SAARC देशों में से - और उसमें हम म्यांमार को भी जोड़ सकते हैं - polio मुक्त ये हमारा क्षेत्र कैसे बने? भारत में polio के खिलाफ लड़ाई में हम सफल हुए हैं। Polio से मुक्ति में असफल रहने की पिछले पांच सात साल से कोई घटना नहीं हुई है। लेकिन, अभी भी हमारे अड़ोस-पड़ोस के देशों में ये हो रहा है, पाकिस्तान में तो अभी भी कुछ न कुछ घटनाएं हो रही हैं। जिस परिवार में किसी बालक को polio हो जाता है, तो पूरा परिवार एक प्रकार से अपंग हो जाता है। एक व्यक्ति अपंग नहीं होता है। तो ये मानवता का काम है। और इस मानवता के काम में भारत अड़ोस-पड़ोस के देशों के लिए एक वृहद योजना बना करके काम करेगा। उन देशों से सहमति तो लेनी पड़ेगी। जब हम SAARC की meeting में मिलेंगे तब उसकी चर्चा होगी, कार्य योजना बनाएंगे और उसके लिए जो कुछ भी करना होगा.. एक मानवता का काम... और भारत की तो विशेषता यही रही है। मानवता के काम में ही भारत हमेशा जाना पहचाना गया है। तो उसमें हम कहीं पीछे न रहें, उस दिशा में हमारा काम रहेगा। भारत ने अभी एक अभियान चलाया है 'Make in India'। पूरे विश्व को हम कह रहे हैं, "आइए, भारत में अपना नसीब आजमाइए और औद्योगिक विकास में आप शरीक हो जाइए।" भारत में बहुत संभावनाएं पड़ी हैं, विकास के लिए बहुत अवसर पड़े हैं और ये दुनिया का सबसे युवा देश है, भारत। यहां पर युवा workforce हमारे पास है, तो उसको ले करके भारत विकास की नई ऊंचाइयों को पार करें उस दिशा में हम प्रयास कर रहे हैं।

तीन दिन मुझे यहां विश्व के कई नेताओं से मिलने का अवसर मिला। मेरा बहुत ही सुखद अनुभव रहा है और इतने बड़े आयोजन को जिस प्रकार से यहां की सरकार ने कामयाब किया, मैं यहां की सरकार को, म्यांमार की जनता को इस स्वागत, सम्मान, समारोह के लिए बहुत बहुत बधाई देता हूं। आपने मुझे बुलाया, सम्मान किया। मुझे सबसे अच्छा ये लगा कि जब मैं सबसे मिल रहा था, मुझे संकोच हो रहा था कि मेरा समय कम पड़ रहा है। मुझे आपको समय ज्यादा देना चाहिए था। लेकिन, कम समय का आपने जो उत्तम उपयोग किया और discipline से किया, मैं इसके लिए आपको बहुत बधाई देता हूं। मैं जहां जाऊंगा, आपका ये जो discipline वाला कार्यक्रम देखकर मेरे मन पे जो छवि बनी है, मैं डंका बजाता रहूंगा। तो मैं आपका बहुत बहुत आभारी हूं, बहुत बहुत धन्यवाद।

महिमा वशिष्ट / रजनी

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

12-नवंबर-2014 20:31 IST

म्यांमार के ने पी दौ में 12वें भारत-आसियान शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री का सम्बोधन

महामहिम राष्ट्रपति यू थैन सेन, इस शिखर सम्मेलन का आयोजन करने और इस सत्र की अध्यक्षता करने के लिए मैं आपका आभारी हूँ। आपके नेतृत्व के तहत, म्यांमार इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और इससे भारत-आसियान संबंधों को भी मजबूती मिली है।

आपके विचारों के लिए मैं आप सभी का आभारी हूँ। इससे भारत-आसियान सामरिक साझेदारी में मेरा विश्वास और मजबूत हुआ है।

उपर्युक्त सभी बातों के साथ, अच्छे मित्रों की भांति आप सभी ने एक सफल और समृद्ध भारत की कामना की है।

मैं कुछ बिंदुओं का उल्लेख करना चाहता हूँ। हमारे बीच में कई समानताएं और समरूपताएं हैं। भारत और आसियान जनसंख्या के मामले में द्वितीय और तृतीय नंबर पर हैं। हम सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हैं और इस शताब्दी की सबसे तेजी से उभरती तीन अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हैं। हमारे पास एक युवा जनसंख्या की ताकत और क्षमता मौजूद है। भारत में 35 वर्ष की आयु से कम के आठ सौ मिलियन लोग एक बड़े अवसर का सृजन करते हैं।

हम भारत में एक नई आर्थिक यात्रा प्रारंभ कर चुके हैं। हम बुनियादी ढांचे, विनिर्माण, व्यापार, कृषि, कौशल विकास, शहरी नवीकरण और स्मार्ट शहरों पर बल दे रहे हैं। 'मेक इन इंडिया' एक नया अभियान है। हम भारत में कारोबार करना आसान बनाने पर विशेष जोर दे रहे हैं और इसके तहत हम अपनी नीतियों को आकर्षक बना रहे हैं। मैं आपको भारत के इस नए वातावरण में शामिल होने के लिए आमंत्रण देता हूँ। भारतीय कंपनियां भी आसियान के साथ निवेश और व्यापार करने की इच्छुक हैं।

मैं आपको यह भी विश्वास दिलाता हूँ कि हमारी व्यापार नीति और माहौल में व्यापक सुधार होगा। हम आसियान के साथ त्वरित गति से संपर्क परियोजनाओं की दिशा में भी आगे बढ़ेंगे। मैं यह भी सुझाव देता हूँ कि हम भविष्य में और सुधार के लिए अपने सामान पर निःशुल्क व्यापार समझौते की भी समीक्षा करें और इसे सभी के लिए लाभकारी बनाएं। मैं यह भी अपील करता हूँ कि सेवा और निवेश पर मुक्त व्यापार समझौते को अति शीघ्र लागू किया जाए।

आपमें से कई महानुभावों ने क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते पर विचार व्यक्त किए हैं। यह इस क्षेत्र में आर्थिक एकीकरण और समृद्धि के लिए एक महत्वपूर्ण मंच हो सकता है। हालांकि हमारा उद्देश्य एक संतुलित समझौते के लिए होना चाहिए, जो सभी के लिए लाभकारी हो और वस्तु एवं सेवा के लिए समान समय-सीमा के साथ समान महत्वाकांक्षी एजेंडे के माध्यम से अपने स्वरूप में व्यापक हो।

अपने संपर्कों को और गहन बनाने के लिए, मैं आपके सहयोग से एक विशेष सुविधा अथवा विशेष उद्देश्य साधन का गठन करने पर विचार कर रहा हूँ जिससे कि परियोजना के वित्त पोषण और शीघ्र कार्यान्वयन की सुविधा दी जा सके।

हालांकि, इस युग में हमें भौतिक संपर्क से ज्यादा सूचना और इंटरनेट तकनीक की आवश्यकता है। मेरा अनुभव है कि जहां भी सड़क संपर्क मजबूत नहीं है, वहां हम इंटरनेट संपर्क के माध्यम से व्यापक आर्थिक अवसर और रोजगार सृजन कर सकते हैं। भारत इस क्षेत्र में सभी संभव सहायता और सहयोग देने के लिए तैयार है।

भारत और आसियान में बड़े शहर हैं और वह त्वरित गति से शहरीकरण का अनुभव कर रहे हैं। यह चुनौती और अवसर दोनों ही हैं। आइए, भारत के सौ स्मार्ट शहरों और पांच सौ शहरों के नवीकरण में भागीदार बनें। विज्ञान और तकनीक तथा शिक्षा, सहयोग के महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। हम नवीकरण ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता के क्षेत्र में क्या कर सकते हैं, इस बारे में हमें महत्वाकांक्षी ढंग से सोचना चाहिए। आइए शोध, विनिर्माण और तैनाती के लिए एक प्रमुख आसियान-भारत सौर परियोजना के बारे में विचार करते हैं।

अंतरिक्ष विज्ञान भी हमें बहुत से क्षेत्रों में लाभ दे सकता है। हमें वियतनाम में एक नए भारत-आसियान अंतरिक्ष संबंधित भू-स्टेशन की स्थापना शीघ्रता से करनी चाहिए और इंडोनेशिया में मौजूदा स्टेशन के उन्नयन की परियोजना प्रारंभ करनी चाहिए। पड़ोसी के तौर पर भारत और आसियान आपदा जोखिम में कमी, त्वरित प्रतिक्रिया और प्रबंधन में सहयोग से अत्यंत लाभान्वित हो सकते हैं। भारत इस क्षेत्र में क्षमता निर्माण, सहयोग और त्वरित प्रक्रिया में पूर्ण सहायता देने के लिए तैयार है।

हमें पारंपरिक औषधि, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण और वन सहित स्वास्थ्य के क्षेत्र में अपने सहयोग को आगे बढ़ाना चाहिए। जैसा कि आपमें से कुछ पहले ही उल्लेख कर चुके हैं कि कृषि और खाद्य सुरक्षा भी एक ऐसा अन्य क्षेत्र है, जहां में सहयोग की अपार संभावनाएं देखता हूं।

हमें आपसी मान्यता के मामले में भी तेजी से आगे बढ़ना चाहिए। हमें और अधिक अनुसंधान करने चाहिए तथा अपने प्राचीन संबंधों का आदान-प्रदान करना चाहिए। हमें यह भी देखना चाहिए कि कैसे हमारी सम्मिलित विरासत आधुनिक विश्व के लिए उपयोगी हो सकती है।

हमारे युवाओं और हमारे आर्थिक विकास के लिए रोजगार अवसरों का सृजन करने के लिए कौशल विकास आवश्यक है। हमें कौशल विकास में अपने संबंधित क्षेत्रों की विशेषज्ञताओं को साझा करने में सहयोग करना चाहिए।

मैं व्यक्तिगत रूप से जन संपर्क पर खास जोर देता हूं। मैं छात्रों, युवाओं, शिक्षकों, सांसदों, राजनयिकों, मीडिया, किसानों, कलाकारों और विशेषज्ञों के बीच संबंधों को बढ़ते हुए देखना चाहूंगा।

पर्यटन में भी उस तरह से वृद्धि नहीं हुई है जैसी होनी चाहिए। आज वास्तव में भारतीय पर्यटकों के लिए आसियान क्षेत्र सर्वाधिक लोकप्रिय स्थल है। मैं भविष्य में आसियान पर्यटकों की भारत में वृद्धि देखना चाहता हूं। इस संदर्भ में बौद्ध सर्किट व्यापक अवसर प्रदान करता है।

महानुभावों, हमने आर्थिक समृद्धि और अपने पर्यावरण की रक्षा पर काफी ध्यान दिया है। क्या हम अपने युवाओं की सुरक्षा और रक्षा पर भी समान ध्यान देते हैं? हमें आसियान देशों से उच्चस्तरीय सुरक्षा सहयोग मिला है, जिसके लिए मैं उनका आभारी हूं, लेकिन हमें भविष्य में आतंकवाद, चरमपंथ, मादक पदार्थों, हथियारों और काले धन जैसे मसलों से निपटने के लिए अपने सहयोग को और मजबूत करना चाहिए।

महानुभावों, एशिया का भविष्य उज्ज्वल है, लेकिन यह कई चुनौतियों का भी सामना करता है। हमारी प्रगति और समृद्धि क्षेत्र की शांति और स्थिरता पर निर्भर करती है। दुनिया में परिवर्तन की लहर है और इस बदली हुई दुनिया में नई सच्चाइयां उभर कर सामने आ रही हैं। वैश्वीकरण जीवन का एक सच है। हम सभी इससे प्रभावित हैं और हम सभी इससे लाभान्वित भी हुए हैं।

विश्व में समुद्री व्यापार और यात्रा के संपर्कों को देखते हुए समुद्री सुरक्षा अब ज्यादा महत्वपूर्ण हो चुकी है। हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम सभी समुद्री क्षेत्र के मुद्दों पर अंतर्राष्ट्रीय कानूनों और मानदण्डों का पालन करें, जैसा कि हम वायु मार्ग के मामले में करते हैं। भविष्य में अंतरिक्ष में भी इसकी आवश्यकता होगी।

दक्षिण चीन सागर में शांति और स्थिरता के लिए, प्रत्येक को अंतर्राष्ट्रीय मानकों और नियमों का पालन करना चाहिए। इसमें समुद्र के कानून पर 1982 की संयुक्त राष्ट्र संधि भी शामिल है। हम यह भी आशा करते हैं कि 2002 के घोषणा-पत्र के दिशा-निर्देशों को सफलतापूर्वक लागू करेंगे और दक्षिण चीन सागर के मामले में आचार संहिता के आधार पर आम सहमति से जल्द ही निष्कर्ष निकाला जा सकेगा।

अंत में, मैं कहना चाहूंगा कि आप सभी से यहां मिलना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। इससे आसियान देशों के साथ हमारे संबंधों के प्रति मेरा विश्वास और उत्साह दोगुना हो गया है।

मैं आसियान के साथ संबंधों के लिए आपको विश्वास दिलाता हूं कि इसे आगे बढ़ाने के प्रति मेरा व्यक्तिगत और निरंतर ध्यान बना रहेगा, ताकि हम इन संबंधों से अपनी उच्च अपेक्षाओं को पूरा कर सकें।

विजयलक्ष्मी कासोटिया/अर्चना/संजीव/राजेश-4820 (हिंदी इकाई)